श्री

पंडित श्री मोहन विजय विरचित

नर्मदा सुंदरीनो रास.

शील रक्षण माटे कुलीन स्त्रीना पवित्र पतिव्र
ता पणानो आवेहुव चितार
रसिक नीतिज्ञान धर्म व्यवहार संसारिक सुख
दुःखमां सद्बोध सद्वृत्ति राखवा माटे
सुदृढ शिक्षा रूप.

सरस रसिक चमत्कृति युक्त सुशील कुली
न स्त्रीपुरुषोने हितोपदेशमय वे त्रण
प्रतिथी शुरू करी,

शा० भीमसिंह माणकें.

मुंबईमध्यें
निर्णयसागर मुद्रायंत्रमां छापी प्रसिद्ध कर्यो.
संवत् १९५४ असाड शुद ९ मंगलवार.

॥ श्रीवीतरागाय नमः ॥

अथ

पंम्ति श्रीमोहनविजयविरचित नर्मदा सुंदरीनो रास प्रारंभः ॥

प्रभु चरणांबुजरज तणी, वळीने होय ढोक ॥ मायो वली जग जेहनो, विहु अक्षरने श्लोक ॥१॥ धारक अतिशय एहवा, जिन सुरगिरि परें धीर ॥ हुं प्रणमुं ते वीरने, गौतम जास वजीर ॥ २ ॥ कवि सुरतरु शोभावबा परभृत तनया पूत ॥ ज्ञान चंडने चंडिका, कृपा करी अति नूत ॥ ३ ॥ जड तामय मुद्रा भणी, जनु रूपा स्वयमेव ॥ शब्दोदधि तारण तरी, सा भारति प्रणमेव ॥ ४ ॥ गुरु गुण मणि हारावली, धरियें हृदय तटेण ॥ कीधो तजी पिपीलिका, मत्त मतंग जलेण ॥ ५ ॥ जिन गुणहर भारति सुगुरु, प्रणमी चरण रसेण ॥ धर्मोद्यम कीजे सदा, सवि सुख लहियें जेण ॥ ६ ॥ चार भेद ते धर्मना, दान शील तप भाव ॥ तेहमां शील विशेष छे, कष्ट रत्नागर नाव ॥ ७ ॥ चक्षुश्रवण शीलें करी,

थयो कुसुमनी माल ॥ पावक पण पाणी थयो, शीलें सिंह शीयाल ॥ ८ ॥ शीलरूप सन्नाहथी, मन्मथ नृपनां बाण ॥ वेधी न शके वज्रने, रे मन मृषा म जाण ॥ ए ॥ शीलतणे अधिकार अथ, नमया सुंदरि चरित्र ॥ रचीश शास्त्र अनुसारथी, वर्णव करी विचित्र ॥ १० ॥ सांभलजो श्रोता नरो, मित्र पुत्र स्थिर लाय ॥ पण पीतां करतां रखे, महिषी किन्नर न्याय ॥ ११ ॥

॥ ढाल पहेली ॥ देशी चोपाइनी ॥

जंबूद्वीप जोयण एक लाख, साधक त्रिगुणी परिधिनी भाख ॥ क्षेत्र सात तिहां अति विस्तार, नाम मात्र कहुं तास विचार ॥ १ ॥ भरह ऐरवय पांचसें छव्वीश, छकला तास उवरी सुजगीश ॥ हेम ऐरण्य बे सहसग इगसत्त, पण जोअण पण कला पमत्त ॥ २ ॥ आठ सहस चउसय एकवीश, एक कला हरि रम्यक जगीश ॥ तित्तिस सहस छसय चूल नेह, चार कला ए मान विदेह ॥ ३ ॥ छ कुलगिरि ए द्वीप मझार, तास तणो हवे कहिश विचार ॥ जोयण एक सहस बावन्न, बार कला हिमशिखरी मन्न ॥ ४ ॥ महा हेमवंत रूपी चार हजार, डुसय दश

जोयण दश कला विस्तार ॥ निषध नील सोसहस इगसत्त, दोय कला ए गिरि पमत्त ॥ ५ ॥ सत्त पित्त षट कुलगिरि दाख, मेलंतां होय जोयण एक लाख ॥ जिनवर वचनें करीयें प्रमाण, तेहथी को नहिं अधिको जाण ॥ ६ ॥ हवे जरहैजन पद वैदर्ज, मनुज लोक शोज्ञानो गर्ज ॥ वन उपवनने गहन विशेष, तरणि किरण करी न शके प्रवेश ॥ ७ ॥ अति उत्तंग शिखर गिरि तणां, खडहडें वहेतां रह रवितणा ॥ ऋरे तसमांनु निऋरणां जलेख, मानुं गंगाधर प्रकव्यो अनेक ॥ ८ ॥ अवनी वनिता ज्ञाल समान, रति रमणीयक देश प्रधान ॥ नगरी वर्धमाना द्युतिदरी, अलकानी शोज्ञा रहि परी ॥ ए ॥ शंकाये लंका वा पडी, मूकी सुरनगरी ञ्रापडी ॥ सासय नगरीयें वंदिका, ञू ज्ञामिनी कुंकुम विंदिका ॥ १० ॥ मंदिर सुंदर गढ मढ पोल, सोहे विजय तणी तिहां ठेल ॥ वर्ण अढार वसे गुणवंत, निज निज धर्म सदा निवहंत ॥११॥ अतिहि कृपण महिसुर तिस्या, ठिल्लर तो क्षीरोदधि जिस्यां ॥ कडूइ वाणी साकर जिसी, तेहनी उपमा दीजे कीसी ॥ १२ ॥ एहवा मूढ रहे गह गही, अवगुण सुणवो शीख्या नहीं ॥ हृदय कठोर

जेह्वुं नवनीत, हरिचंद्र नृप सरसी अप्रतीत ॥१३॥ जना इंदुकिरण सारिखा, निर्धन धनद जिस्या पार ख्या ॥ वांका कमलनालिके तीर, निःस्नेही जिम जल ने खीर ॥ १४ ॥ निरुपकार जेम रंन्नाखंन्न, अप्रिय तो जेम देवी न्नंन्न ॥ डुःखीयां जेम दो गुंदक देव, विरुआं कामदेव अन्निनेव ॥ १५ ॥ व्यवहारी व्यापारी वसे, धर्म कारजें सवि धस मसे ॥ परजपकारी परम प्रवीण, जिनवर वचन थकी लयलीन ॥ १६ ॥ पन्नणी प्रथम ढाल रस मणी, नर्मदा सुंदरी सुचरित्र तणी ॥ आगल वात रसाल विशेष, कहे हवे मोहन तिहां नरेश ॥ १७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ प्रतिपाले पुरजन न्नणी, संप्रति नामें न्नूप ॥ रह्यो दर्प तजी काम नृप, देखी सुंदर रूप ॥१॥ हरवा डुर्जनमहिघटा, अतुलीबल शार्दूल ॥ परिजन हंस रमाडवा, अन्निनव गंगाकूल ॥ २ ॥ अरियण सहिंता न्नूप बल, सेवे गिरिदरी न्नूप ॥ जेम जल बिहतो ग्रीष्मथी, वसे रहे जई कूप ॥ ३ ॥ ख्याग त्याग वाचा अचल, न्यायें निपुण नरिंद ॥ धवलीकृत दिग दश जिणें, करी उदय जस चंद ॥ ४ ॥ रति रू

पा पट्टरागिणी, रतिसुंदरी नामेण ॥ कीधो मुख आत्रासथी, कांखो उरुपति जेण ॥ ५ ॥ एक पक्ष उज्ज्वल करे, नत्रचर चंद्र प्रसिद्ध ॥ राणीमुख को ई अपर शशी, बिहु पक्ष उज्ज्वल कीध ॥ ६ ॥

॥ ढाल बीजी ॥

प्रवहण तिहांथी पूरीयुंरे लाल ॥ ए देशी ॥ नगरभूषण सरिखो तिहां रे लाल, वृषभसेन सा र्थेश ॥ गुणवंता रे ॥ रयणायर सरिखो धने रे ला ल, जलदधि दाता विशेष ॥ गुं० ॥ १ ॥ सांभल जो श्रोता जना रे लाल ॥ शीलतणो संबंध ॥गु०॥ सरस वचन रचना तिसी रे लाल, जेम सोनूंने सु गंध ॥ गु० ॥ सां० ॥ जलवट थलवटना करे रे लाल, द्रव्य वधें व्यवसाय ॥ गु० ॥ महिपति पण माने घणुं रे लाल, धने वश कोण न थाय ॥ गुं० ॥ सां० ॥ ३ ॥ सोनुं रुपुं सामटुं रे लाल, मणि मा णिकना पुंज ॥ गु० ॥ कर धरे मोती दासीयो रे लाल, परिहरि जाणी गुंज ॥ गु० ॥ सां० ॥ ४ ॥ वी रमती तस गेहिनी रे लाल, लाजें मृगलोचन्न ॥ गु० ॥ शील धर्मनी जाणीयें रे लाल, अभिनव भू मि जतन्न ॥ गु० ॥ सां० ॥ ५ ॥ पतिभक्ति चंद्रान

नी रे लाल, कोपनो नहिं संसर्ग ॥ गु० ॥ गुणमणि खाणी गोरडी रे लाल, रूपकला अपवर्ग ॥ गु० ॥ सां० ॥ ६ ॥ विलसे विविध ते दंपती रे लाल, सांसारिक सुखनोग ॥ गु० ॥ रामा राम नीरोगता रे लाल, लहीयें पुण्य संयोग ॥ गु० ॥ सां० ॥ ७ ॥ वे अंगज छे तेहने रे लाल, वीरसेन सहदेव ॥ गु० ॥ दिनकर हिमकर सारिखा रे लाल, जोडे परम गुण मेव ॥ गु० ॥ सां० ॥ ८ ॥ ऋषिदत्ता वेटी सहजथी रे लाल, किन्नरी सुंदरी अणुहार ॥ गु० ॥ बालपणे सघली कला रे लाल, शीखी पूर्वसंस्कार ॥ गु० ॥ सां० ॥ ए ॥ ऋषिदत्ता बिहु सहजथीरे लाल, हसेय रमेय अति प्रेम ॥ गु० ॥ सोहे वे मोती वच्चें रे लाल, राती चूनी जेम ॥ गु० ॥ सां० ॥ १० ॥ वीरमती निजपुत्रीने रे लाल, बेसाडे उत्संग ॥ गु० ॥ नित्य आनूषण नव नवां रे लाल, स्थापे नेहें अंग ॥ गु० ॥ सां० ॥ ११ ॥ बालुडां जस आंगणें रे लाल, धूल धूसर न रमंत ॥ गु० ॥ कारागार आगार ते रे लाल, जाणीयें अहो पुण्यवंत ॥ गु० ॥ सां० ॥ १२ ॥ हवे अनुक्रमे वधती थई रे लाल, बाला मायारूप ॥ गु० टाले नहिं निज देहथी रे लाल, लज्जाक्षौम अनूप॥

गु० ॥ सां० ॥ १३ ॥ जनकें नणवा पाठवीरे लाल, सा अध्यापक गेह ॥ गु० ॥ जैनधर्म जलो अन्यसे रे लाल, लघुश्रमथी धरी नेह ॥ गु० ॥ सां० ॥ १४ ॥ फीले अहिंसा तटिनी तटे रे लाल, लीधो विनय कज गंध ॥ गु० ॥ चाखी समकित सूखडी रे लाल, जाएयो जैनप्रबंध ॥ गु० ॥ सां० ॥ १५ निष्ठा एक जिनधर्मनी रे लाल, मिथ्यात्वथी प्रतिकूल ॥ गु० ॥ विकथा सर्वे विरमी रही रे लाल, जेम दल गलित तांबूल ॥ गु० ॥ सां० ॥ १६ ॥ पुत्री फाही पेखीने रे लाल, हरखे तात अतीव ॥ गु० ॥ तात प्रभृति सहु को करे रे लाल, धर्मकथा ते सदैव ॥ गु० ॥ सां० ॥ १७ ॥ जेहवी संगति कीजीए रे लाल, तेहवा गुणनी केल ॥ गु० ॥ कुसुमनी संगतिथी तेलें रे लाल, पाम्युं नाम फूलेल ॥ गु० ॥ सां० ॥ १८ ॥ पामी वीरमती सुतारे लाल, यौवनवय सुकुमाल ॥ गु० ॥ मोहनविजयें वर्णवीरे लाल ॥ वीजी ढाल रसाल ॥ गु० ॥ सां० ॥ १९ ॥ सर्व गाथा.

॥ दोहा ॥

सा पुत्री नवयौवना, देखी चिंते तात ॥ पुरमें कोइ महेभ्यसुत, जोइ करुं जामात ॥ १ ॥ पुर सघलुं

वर कारणे, जोयुं करी तलास ॥ पण वर पुत्री सारि
खो, न मल्यो कोइ तास ॥ २ ॥ मिथ्यादृष्टि नयरमें,
छे घणा धनवंत ॥ तस घर तनुजा आपतां, मन
नवि धारे संत ॥ ३ ॥ केम दे श्रावक बालिका,
मिथ्यात्वीने गेह ॥ केम दीजे चंडालने, वृंदा तरु
ससनेह ॥४॥ मणि न जडे कोइ लोहमें, म्हेली कुंदन
पत्र ॥ वृषभसेन एम मनमें, आलोचे एकत्र ॥ ५ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥

हांरे माहरे जोबनीयानो लटको दहाडा चार
जो ॥ ए देशी ॥ हांरे हवे आव्यो ए हवे रूपचंद्र
पुरहुत यो ॥ वारु रे रुद्रदत्त नामा वाणीयोरे लो ॥
हांरे कांइ करवा वाणिज्य वर्द्धमान पुरमांहि जो,
लेइने करियाणुं लोके प्रमाणीयोरे लो ॥ १ ॥ हांरे
तेणे वेची साटी सयण वसाणानी कोडि जो, कीधा
रे तेणे गांठे दाम सोहामणा रे लो ॥ हांरे जस पु
ण्य सखाइ छे तेहने शी खोड जो, एके के पगले रे
पुंज मणितणा रे लो ॥ २ ॥ हांरे तेणे पहेरी अंबर
सखरां चहूटामांहि जो, हिंडे ते मोडामोडे छेलशुंरे
लो ॥ हांरे परदेशीनी परगाममें एहिज रीति जो,
फोगटीयो थइ फूले धोबी बेलशुंरे लो ॥३॥ हांरे तेणे

ज्ञमतां ज्ञमतां पुरमां कीधो मित्र जो, कुबेरदत्त नामा एक व्यवहारीयोरे लो ॥ हांरे तस मांहोमांहे वाळी पूरण प्रीति जो, ससनेही नेहीनी वात छे जारीयोरे लो ॥ ४ ॥ हांरे एम जांख्युं कुवेरे अहो अहो मित्र रुद्रदत्त जो, वंधाणी तुमसेंती माया आकरीरे लो ॥ हांरे तुम्हे परदेशीडा कामणगारां लोक जो,पंखीनी पेरे जाउ न मिलो फरीफरीरे लो ॥ ५ ॥ हांरे मेंतो मित्रजी माहरा कहीयें आ पुरमांहि जो, नेहडलो नवि कीधोरे कोइथी एवडोरे लो ॥ हांरे मारी विनति मांनो आवो मंदिर मुज जो, कांइ जो पोताना करीने त्रेवडोरे लो ॥ ६ ॥ हांरे हुं तो जाणीश की धी मुजने करुणा जोर जो, प्राहूणला तुम जेहवा किहांथी आंगणेरे लो ॥ हांरे तुम जेहवा नरथी क्यांहथी एक घडी गोठ जो, जेह तेहथी वातडली करतां नवी वने रे लो ॥ ७ ॥ हांरे तुम्हे इहां तो रहेता हशो कोइकने गेह जो, तेहथी शुं घर जूंजुं कहोजी आपणुंरे लो ॥ हांरे तुमे रहेशो तेता दिन करशुं गुजराण जो, फेरीने शुं कहीयें तुह्मने घणुं घणुंरे लो ॥ ८ ॥ हांरे कोइ वातनो अंतर त्रेवडो माहरा राज जो, करशुं जे काइ थाशे अमथी चा

करीरे लो ॥ हांरे अमें देशुं सो सो लोटणां तुम्ह हजूर जो, कहियें ठे पयललीया साहिब अनुसरी रे लो ॥ ए ॥ हांरे तव बोल्यो ततक्षिण रुद्रदत्त हित लाय जो, भाइजी तुम्हें भाख्युं ते अमें शिर धर्खुं रे लो ॥ हांरे कांइ तुम अम मेलो हूउ पूरव लेख जो, दैवे ए मनगमतुं काम भलुं कर्खुं रे लो॥ ॥१० ॥ हांरे जो तुमचो हेत ठे अम उपर परिपूर्ण जो, अलगा रहीयाथी तोइयें ढूंकडा रे लो ॥ हांरे जूउ गयण घनाघन उमहे भूतल मोरजो, मंरु रे ते तांडव रसवशे रूपडारे लो ॥ ११ ॥ हांरे जुउ किहां दिनकरने किहां कैरववन्न जो, तोहीपण विकसे ते साचा नेहथी रे लो ॥ हांरे कांइ क्यारे कोइथी टाल्यो पण न टलंत जो, मांनेतो मनमे लो होय जेहथी रे लो ॥ १२ ॥ हांरे तुमें राजी जो ठो मुफथी आवे गेह जो, तो तुमने किमए ड हवुं कहो थोडे गजेरे लो ॥ हांरे एम कहीने रुद्र दत्त आव्यो मित्रने गेह जो, लाखेणी मनुहारो ते सखरी सजेरे लो ॥ १३ ॥ हांरे रहियो ते परदेशी मित्रना मंदिर मांहि जो, पोताना कुटुंबनी परे सहु थइ रह्यां रे लो ॥ हांरे ते खाये पीये नित्य नवला

आहार जो, किणहि परे पर करीने नवी लह्यो रे लो ॥ १५॥ हांरे ते वेळो रुद्रदत्त एक दिन गोखम झार जो, जूए पुरकेरी शोभा नयणथी रे लो॥ एतो मोहन विजयें भांखी त्रीजी ढाल जो, स्नेहाली हितकारी मीठी वाणियेंरे लो ॥ १६ ॥ सर्व गाथा॥

॥ दोहा ॥

दीठी रुत्तदत्तें एहवे, ऋषिदत्ता सोत्साह ॥ स खीयां संगें परवरे,घालिने गले वांहि ॥ १ ॥ वाला सघली विविहपरें,हसती रमती त्यांहि॥एक एकने ताली दीये, चाले चहूटा मांहि ॥ २ ॥ जाणे शा वक हंसना मानसरोवर पंति ॥ खेले मुख करी के सरा, तिम वाला शोभंति ॥ ३ ॥ सा देखी परदेशी यो, चिंते चित्तथी एम ॥ खेचरपुत्री नगरमां रमवा आवी केम ॥ ४ ॥ के शुं प्रगटी पन्नगी, पुहवीतल थी एह ॥ एतो कौतुक सारिखुं, दीसे छे ससनेह ॥ ॥ ५ ॥ एहवे तिणहिज अवसरे, मूर्छागत थयो तेह ॥ धडहडीने धरणी ढल्यो, जिम गिरिवर शि खरेह ॥ ६ ॥ मूर्छित देख्यो मित्रने, आव्यो कुवेर वरवीर ॥ कीध सचेतन ततखिणें ढोली मंद समीर ॥ ७ ॥

॥ ढाल चोथी ॥

रंग रह्यो रे रस रह्यो रे फूल गुलाबरो ए देशी ॥

बांधव कह्यो ए शुं हतुं, मूर्छा पाम्या एमह्यो रसीया रे मित्रजीरे नांखो मया करो ॥ ए आंकणी ॥ ते कारण मूजने कह्यो, जाण्युं जाये जेम हे ॥ र० ॥ १ ॥ वगर कहे केम जाणीयें, पारका मननी वात हे ॥ र० ॥ खोली मन साचुं कह्यो, जेम जाणुं परमार्थ हे ॥ र० मी० ॥ २ ॥ जे कांइ मूजथी सीजशे, ते तो करीश हुं काम हे ॥ र० ॥ वचन कुबेरदत्तनां सु णी, बोल्यो रुद्रदत्त ताम हे ॥ र० ॥ मी० ॥ ३ ॥ अ हो अहो सज्जन माहरा, अकथ कथा छे एह ॥ र० ॥ तो तुम आगलें नाखीयें, जो तुमथी होये तेह हे ॥ र० ॥ मी० ॥ ४ ॥ नहिं तो कुण नांखे कह्यो, जल मे कंचन जाल हे ॥ र०॥ दुःख ते आगल दाखीये, जे टाले तत्काल हें ॥ र० ॥ मी० ॥५॥ ते तो कोइ नाहिं जगतमें, जे जाणे परपीर हे ॥ र० ॥ गोष्टि न ली तेहथी कही, मनमेलू जे वीर हे ॥र०॥मी०॥६॥ रोग होवे तो वैद्यने, दाखीयें करी उपाय हे ॥ र० ॥ पण ए अंतर गत तणी, कोइ थकी न कलाय ॥ र० ॥ मी० ॥ ७ ॥ ते माटे तुमने किसुं, कहीयें कह्यो म

हाराज हे ॥ र० ॥ मन ए जाणे माहरुं; वात सवे शिरताज हे ॥ र० ॥ मी० ॥ ८ ॥ बोल्यो कुबेरदत्त फरी, कहो कहो मनमें हूंस हे ॥ र० ॥ जो न कहो मुझ आगलें, तो छे तमने सूंस हे र० ॥मी०॥९॥ वचन सुणी एम मित्रनां, चांखे रुद्रदत्त चांख हे ॥ र० ॥ हमणां इहां बेठो हतो, हुं आपणे गोख हे ॥ र० ॥ मी० ॥ १० ॥ तेहवे में दीठी बालिका, किन्नरी सरखी एक हे ॥ र० ॥ विस्मय हुं पामी रह्यो देखी रूपविवेक हे ॥ र० ॥ मी० ॥ ११ ॥ विधाता ए केम घडी शक्यो, एहवे रूपे एह रे ॥ र० ॥ एक ज वक्र विलोकतां, नवलो कीधो नेह रे ॥ र० ॥ मी० ॥ १२ ॥ बाला ए प्रेमनी सांकली, सांकली गइ ततखेव रे ॥ र० ॥ काम शिलीमुख देइ गइ, किणही न जाण्यो भेद हे ॥ र० ॥ मी० ॥ १३ ॥ साले छे नट सालसी, क्षण क्षण हियडा मांहि हे ॥ र० ॥ वसती नगरीमां गइ, चित्त चोरीने आंहि हे ॥ र० ॥ मी० ॥ १४ ॥ ए पुत्री छे केहनी, मित्र कहो मुजतेह हे ॥ र० ॥ जिम ते बाला जोयवा, पोंहचूं तेहने गेह हे ॥ र० ॥ मी० ॥ १५ ॥ विण दीठे ते बालिका, कांइ एह न सूहाय हे ॥ र० ॥

जलथी ते मीन वियोगीउं, तेहनी शी गति थाय हे ॥ र० ॥ मी० ॥ १६ ॥ कुबेरदत्त हवे बोलशे, वाणी अतिहिं रसाल हे ॥र०॥ मोहनविजये सोहामणी, नांखी चोथी ढालरे ॥ र० ॥ मी० ॥ १७ ॥ सर्वगाथा.

॥ दोहा ॥

कुबेरदत्त हवे मित्रने, नाखे वचन सुरंग ॥ रे नाई ए शो कस्यो, खोटो चित्त उमंग ॥१॥ वृषन्नसेननी पुत्रिका, ए रुषिदत्ता नाम, आज लगण परणी नथी, सुकलीणी गुणधाम ॥ २ ॥ जैनधर्म समकित धरो, ठे कन्यानो तात ॥ तेणें करी करतो नथी, मिथ्यात्वी जामात ॥ ३ ॥ समकितधारी एहवो, जो वर मलशे कोय ॥ तो ए तस परणावशे, दूधें पयतल धोय ॥ ४ ॥ तुमने अमने त्रेवडे, मिथ्यात्वीनुं रूप ॥ तो तस पुत्री उपरे, खोटी न करो चूंप ॥ ५ ॥ काम ए मुजथी नवि होये, रे सूरिजन महाराज ॥ लालच खोटी नहि दीउं, लाजें विणसे काज ॥ ६ ॥

॥ ढाल पांचमी ॥

नदी यमुनाके तीर, उडे दोय पंखीयां ॥ ए दे

शी ॥ रुद्रदत्तनी सुणी वाणी, तदा छानो रह्यो ॥ पा
छो अक्षर एक, फरीने नवि कह्यो ॥ आलोचे मन
मांहि, उपाय कोइ करुं ॥ कपटें पण सार्थेश तणी
पुत्री वरुं ॥ १ ॥ जो इण अवसर माहरी, बुद्धि न
केलवुं ॥ तो पछे आवशे काम, कहे छल खेलवुं ॥
मित्र थकी तो एह, कारज नवी उघडे ॥ तो निः
स्वारथ कोण, पूंठे एहनी पडे ॥ २ ॥ हुं हवे माह
री मेले, प्रपंच करुं वही ॥ पण ऋषिदत्ता एह, वरेवी
में सही ॥ निर्गत जे गजदंत, फरी पेसे नहीं ॥ के
की पीठ सुरंग, मटे नही लोकहिं ॥ ३ ॥ उद्यम वि
ण ए काम, किसी परें सीजशे ॥ नारी होशे कंव
ल, जेम जलें भींजशे ॥ रण धण कण गुणमाट, विलंब
न कीजीये ॥ लासर नाखी वात, तेणे न पतीजीयें
॥ ४ ॥ ए जिनधर्म श्रावक, केरी बालिका ॥ एह
ना जिननी वाणी, तणी प्रतिपालिका ॥ हूं तो श्राव
क धर्मनो, मर्म जाणुं नहीं ॥ मन तो वरवा काज,
रह्युं छे उम्मही ॥ ५ ॥ तेमाटे हवे साधु, समीपें
जाइने ॥ शीखूं गृहस्थ आचार, के उद्यम लाइने ॥
पछे ऋषिदत्ता तात, तणे संगें रहुं ॥ भोगवी कन्या
तास, वरी वांछित लहुं ॥ ६ ॥ उठ्यो करी आलोच,

रुद्रदत्त एहवे ॥ पहेरी वस्त्रने भूषण,जे अंगें फवे ॥ पहोतो पूछत पूछत, तेह उपासरे॥वंदी बेठो ताम, के साधु उपाश रे ॥ ७ ॥ गुरु पूछे महानुभाव, क हो कीहां रहो ॥ दीसो छो गृहस्थ विवेकी, भलो विनय वहो ॥ सांभलो तो कांइ धर्म, कथा संभला वियें ॥ एके अक्षर सांभलीये, जो इहां आवीयें ॥ तव बोल्यो रुद्रदत्त, हसी कपटें करी ॥ जी स्वामी उपदेश, दीयो मुझहित धरी ॥ धर्म कथाने काज, आव्यो छुं तुम कन्हे ॥ सीके जेहथी काज, आदे शो ते मुने ॥ ए ॥ आरंभ्यो उपदेश, गुरु तस आ गले ॥ ते पण कपटी नीचे, नयणे सांभले ॥ गुरु क हे सघली वस्तु, अथिर करी जाणीयें ॥ स्वार्थभूत संबंध, करीने प्रमाणीयें ॥ १० ॥ ए संसार असार मां, कोइ कोइनुं नहीं ॥ साचो एक श्री जिनधर्म, सखाई छे सही ॥ जीव करेछे पाप, कुटुंबने पोष वा ॥ पण भोगवतां पाप, न आवे संतोषवा ॥११॥ तरल तोय तरंग, तिस्यो धनगारवो ॥ बाजीगरना खेल,समो भव धारवो॥ए धन घरणी धाम, न कोइ लइ गयो ॥ जिहां जइ उपन्यो त्यांहिं, तिहां तेह नो थयो ॥ १२ ॥ मृगतृष्णाने काज, फिरे मृग

रीवडो ॥ तेम धन तृष्णा माटे, अटे ए जीवडो ॥ जेणे जिमणे हाथे, करी धन वापर्युं ॥ तेणे सुरगति द्वार, सहि करी आचर्युं ॥ १३ ॥ दान थकीज गृहस्थ, करे शुचि आतमा ॥ दुष्कर तप तपि शुरू, हुये महातमा ॥ समकित रत्न अमूल, तणो खप कीजीयें ॥ वली उपशमरस स्वाद, करीने पीजीये ॥ १४ ॥ एम निसुणी उपदेश, कहे रुद्रदत्त हसी ॥ अहो गुरु समकितवात, हवे चित्तमां वसी ॥ पांचमी ढाल रसाल, आनंद उपजावती ॥ मोहन विजयें रंग, कही मन भावती ॥ १५ ॥ सर्व गाथा.

॥ दोहा ॥

रुद्रदत्त कर जोडीने, भांखे गुरुने हेव ॥ सूधो श्रावक मुजकरो, दीन दयालु देव ॥ १ ॥ दिन एता भूलो भम्यो, पाम्यो हवे जिनधर्म ॥ शीखवो श्रावकनी क्रिया, दया करी गुरु हर्म ॥ २ ॥ मूक्युं हवे मिथ्यात्वने, दीन पिता महाराज ॥ उदय थयो समकिततणो, अंतरंग दिनराज ॥ ३ ॥ सुगुरुये जाण्युं ए सुगुण, दिसे मानव कोय ॥ लाभ वरुं श्रावक करी, जेम लहुं कर्मी होय ॥ ४ ॥ श्रावकधर्म तणी क्रिया, सयल शीखावी ताम ॥ रुद्रदत्त हरख्यो हि

ये, सफल हशे हवे काम ॥ ५ ॥ जेम करिवरें पी
धी सुरा, जेम पाखस्यो मृगराज ॥ तेम कपटी ठगें
चढ्यो, वरवाने ससमाज ॥ ६ ॥

॥ ढाल ठ्ठी ॥

राजा जो मिले ॥ ए देशी ॥ रुद्रदत्त विषये थ
यो लीन, मांस पेशीथी जेहवोज मीन ॥ धिक् धिक्
कामने ॥ जेणे धूत्यो अखिल संसार, धिक् धिक् का
मने ॥ ए आंकणी ॥ नर सुर असुर अपर पण जाण,
कामें तास मनावी आण ॥धि०॥१॥ कौशिक दिन
कर वायस चंद, देखी न शके कहे कविवृंद ॥ धि० ॥
पण कामी जन रजनी दीस, पेखे नहि नहिं ए जग
दीश ॥ धि० ॥ २ ॥ पंचानन करिवर अहि थोक,
जीते भुजबलथी बहु लोक ॥ धि० ॥ जे जरा नीरु
जीते धरी टेक, नर कोडीमां कोइक एक ॥धि०॥३॥
परशस्त्र भेदे सूर सपराण, पण भेदे कोइ मनमथ बा
ण ॥ धि० ॥ कामे कुण कुण न कर्यां काम, कामे
न गंज्या तास प्रणाम ॥ धि० ॥ ४ ॥ हवे रुद्रदत्त
ऋषिसंग निवारि, हूउ कपट श्रावक तेणी वार ॥
धि० ॥ आव्यो वृषभसेन तणे गेह, मिलियो कपटी
आणी नेह॥धि०॥ ५ ॥ नीपट घणी कीधी मनुहार,

दीधूं आसन सार्थेश तिवार ॥धि०॥ किहांथी आव्या जाशो किहां मित्र, नाम कहो तुम कवण पवित्र ॥ धि० ॥ ६ ॥ इण मंदिर करुणा करी केम, चांखो जेहथी जाणुं जेम ॥ धि० ॥ बोल्यो कपटी श्रावक तेय, अंबर ठेहडो मुहडे देय ॥ धि० ॥ ७ ॥ नयर अमारुं ए संसार, लाख चोराशी योनि आगार ॥ धि० ॥ जीव संसारी छे ते मूक, तुम्ह ते शुं राखी यें गुद्य ॥ धि० ॥ ८ ॥ अनुक्रमें जैन नगर में दीठ, चारित्रधर्म नृप भेटो ईठ ॥ धि० ॥ सद्बोधनामा तास प्रधान, दीधुं मुजने द्वादश व्रत दान ॥ धि० ॥ ए ॥ परणाववा मांडी दश वाल, पण में मन न कर्युं ततकाल ॥ धि० ॥ कीधो श्रावक मुजने तेण, जिनभक्तियुत परम गुणेण ॥ धि० ॥ १० ॥ इम नीसुणी चिंते सार्थेश, पूरण अ श्रावक सुविशेष धि० ॥ अहो अहो जिनधर्मी वडभाग, परणीते परण्यो छे कहेवो वैराग ॥ धि० ॥ ११ ॥ धन धन एहने सवि सुख होय, भव्य प्राणी दीसे छे कोय धि० ॥ पुनरपि पूछे सार्थ एवाच,अहो धार्मिक तमें बोल्या साच ॥ धि० ॥ १२ ॥ ए पुर घर नृप मंत्री भ्रात, ए तो तमे कही ज्ञाननी वात ॥ धि० ॥ पण

ऊव्यथी कह्यो नगरी नाम, सांजलियें श्रवणे गुण धाम ॥धि०॥१३॥ आग्रह सार्थेशकेरो जाणि, बोल्यो धूरत निगुण अयाण ॥ वसिये रूपचंद्रपुर गाम, श्रावक रुद्रदत्त माहरुं नाम ॥ धि०॥ १४ ॥ इहां हुं आव्यो बुं वाणिज्य काज, तुमने श्रावक सुण्या महाराज ॥ धि० ॥ साधर्मीनी सगाइ जाणि, आव्यो बुं मलवा इहां सुविहाण ॥ धि० ॥ १५ ॥ अमने मिथ्यात्वी नो न रुचे संग, जेम हंसने गमे न काककुरंग ॥धि०॥ हरख्यो वृशनसेन ततकाल, पण नवि जाणे माया जाल ॥ धि० ॥ १६ ॥ घोलुं ते जेतुं दीठुं दूध, धूर्तनी नक्ति विशेषें प्रतिबुऊ ॥ धि०॥ पत्नणी रूडी बठी ढाल, मोहनविजयें थइ उजमाल ॥ १७ ॥ सर्वगाथा ॥

॥ दोहा ॥

रुद्रदत्त सार्थेशथी, करे धर्मनी वात ॥ कोइ जाणें जाणे नहीं, कपट राईमात्र ॥ १ ॥ वृषनसेन सार्थेश करे, व्रत पोसह पच्चरकाण ॥ सामायिक खोटे मनें, ते धूरत महिराण ॥ २ ॥ साथे थइ सार्थेशने, ते आवे गुरु पास ॥ शिर धूणे ने सुणे कथा, जेम अहि नाद विलास ॥ ३ ॥ जिम प्रनुजी स्वामी

तहत्त, धन साधू उचरंत ॥ मुख मीठो धीठो हिये, रुद्रदत्त कपट वहंत ॥ ४ ॥ पूठे वली वखाणमां, वारु गहन विचार ॥ डाह्यो थई वेसे वचें, जोजो कपट आचार ॥ ५ ॥ दंत्री मुख बोले दूरसुं, हिये हलाहल होय ॥ पूठसहित फणिभृत प्रत्यें, शिखी गलंतो जोय ॥ ६ ॥ रुद्रदत्त हवे अनुक्रमें, कहे सार्थपने ताम, हवे देजो मुझ आगना, तो पोहो चुं निज गाम ॥ ७ ॥

॥ ढाल सातमी ॥

गढ बुंदीरा हाडा वहाला, चलण न देशुं ॥ ए देशी ॥ निसुणी सार्थेश रुद्रदत्त मुख वाणी, चालशें सयण सयाणो हो ॥ रूपचंद्रपुरवासी हो मित्रजी माहरा, चलण न देशुं ॥ ए आंकणी ॥ एह्वो सनेही वाहलो किहांथकी मलशे, धर्मी सुजग सपराणो हो ॥ रू० ॥ १ ॥ एतो सनेही प्यारो मुझघरे आव्यो, जेम आलसुघर गंगा हो ॥ रू० ॥ वीजा घणाए मलशे निगुण नहेजा, कुटिल जलंठ अनंगा हो ॥ रू० ॥ २ ॥ मिथ्यामतने एणे सुहणे न दीठो, केवली वयणे रातो हो ॥ रू० ॥ एहवो विचारी जगमांहि न कोई, केणे मिषें रहे ए जा

तो हो ॥ रू० ॥ ३ ॥ पुत्री जो माहरी एने परणा
वुं, जोईए तेहवो जमाई हो ॥ रू० ॥ नाव नदी जो
गें ए वर मलियो, पुत्रीनी पूर्ण कमाई हो ॥ रू० ॥
४ ॥ एहने मूकीने बीजा केहने परणावुं, तो सरे
काज प्रमाणे हो ॥ रू० ॥ ए ऋषिदत्ता वखतें आ
कर्ष्यों, आव्यो वर इण टाणें हो ॥ रू०॥ ५ ॥ पूबुं
एहने जइ गोद बिछाई, जो मुझ विनति माने हो
॥ रू० ॥ एहवुं आलोची रुद्रदत्त जाणी पूछे, सार्थप
जइने छांने हो ॥ रू० ॥ ५ ॥ पुत्री अमारी साजन
तमें हवे परणो, ए छे अरज अम केरी हो ॥ रू० ॥
सेवा करुं साजन अमथी जे थाशे, ना न कहेजो
फेरी हो ॥ रू० ॥ ७ ॥ अमचा हियामां साजन तु
म गुण वसिया, तेणे करी कहीये छे ताणी हो ॥
रू० ॥ पुत्री अमारी साजन छे दृढधर्मी, जोडी ए
सरस समाणी हो ॥ रू० ॥ ७ ॥ एम सूणीने साज
न रुद्रदत्त हरख्यो, आपणा मनथी विचारे हो ॥
रू० ॥ जिण उद्देसे साजन कपट करुं छुं, कीधूं पा
धरुं ते किरतारें हो ॥ रू० ॥ ए ॥ आज अमीरसें
जलधर वूठ्यो, मुंह माग्यो पड्यो पासो हो ॥ रू० ॥
काकतालीनो साजन न्याय थयो ए, छूटे कोइक तमा

सो हो ॥ रू० ॥ १० ॥ क्षणएक विलंबी साजन रु
द्रदत्त बोल्यो, शाहजी अमें परदेशी हो ॥ रू० ॥
जाण्या विहूणा साजन पुत्री केम देशो, जूर्ज हृदय
गवेषी हो ॥ रू० ॥ ११ ॥ सार्थपति भांखे साजन
तुमने पिछाण्या, छो साधर्मिक मोरा हो ॥ रू० ॥
रूप गुणे करी साजन जातिज जाणी, तेणेकरी क
रीये छिए निहोरा हो ॥ रू० ॥ १२ ॥ कन्या वरया
विण तुमें किहां जाशो, चूलामणी नवि कीजे हो
॥ रू० ॥ कपटी पयंपे साजन वारु वरेशुं, केम तुम
ने डुहवीजे हो ॥रू०॥ १३ ॥ हरख्यो सुणीने सार्थ
प निज घरे आव्यो, कीधी सखर सजाई हो ॥
रू० ॥ लग्न लेवाये साजन चोरी वनाई, वहेंचें वीच
वधाई हो ॥ रू० ॥१४॥ धवल मंगल साजन सखर
सोहाये, सोहेलां सखरां गवाये हो ॥ रू० ॥ गाय
वरघोडे साजन लीध जमाइ, तोरण मोतीडे वधा
ई हो ॥रू०॥ १५ ॥ होम हवन साजन तव निरमा
इ, द्विजमुख वेद पढाई हो ॥ रू० ॥ चार मंगल
साजन तिहां वरताई, अग्निगत फेरा फराई हो ॥
रू० ॥ १६ ॥ कपट श्रावक साजन साहस हेजे,
ऋषिदत्ता परणाई हो ॥ रू० ॥ ढाल सुरंगी साजन

सातमी भांखी मोहन वचन सवाई हो ॥रू०॥१७॥

॥ दोहा ॥

परणी कपटी श्रावकें, ऋषिदत्ता तेणीवार ॥ उत्सव महोत्सव करी घणा, वरत्या जयजयकार ॥ ॥ १ ॥ धन बहु दीधुं दायजे, कापड भूषण कोडि ॥ रुद्रदत्त दंत्नी तणा, पहोंता सघला कोड ॥ २ ॥ दंत्नी सा कन्या वरी, गयो कुबेरदत्त पास ॥ वात कही सघली तिसे, आणी मन उल्लास ॥ ३ ॥ केह वि परणी कपटें करी, श्रावक पुत्री आज ॥ ठे मुजरो तुम मित्रने, अहो मित्र महाराज ॥ ४ ॥ कुबेरदत्त समरथ थइ, हस्यो करतल आस्फाल ॥ कहे धन्य धन्य तुज बुद्धिने, कपट सरोवर पाल ॥ ५ ॥ दिन केते कपटी हवे, हाथ करी निजदास ॥ शीख ग्रहे ससराकने, विनय करीने ताम ॥ ६ ॥

॥ ढाल आठमी ॥

मारे आंगणेहो राज, ठेला मारु वावडीजी ॥ ए देशी ॥ जो जो कपटी हो राज, कहे करजोडीने जी ॥ निज ससराने हसी तेह, गुणवंता जी ॥ मूज दीजें हो राज, सदन भणी शीखडी जी ॥ ए आंकणी ॥ इहां आव्यां हो राज, दिवस केइ थइ गया

जी ॥ तुम साथें थयो बहु नेह ॥ गु ॥ मू० ॥ १ ॥ माहरे मंदिर हो राज, जोतां हशे जे वाटडी जी ॥ वली आवशुं इण पुरमांहे ॥ गु० ॥ दिशि खाव्या बुं हो राज, इहां तुम शुं मलीजी ॥ घणुं जाणजो थोडा मांहि ॥ गु० ॥मू०॥२॥ अम लायक हो राज, होय कारिज जि कोजी ॥ लखी मोकलजो तुम्हे तेह ॥ गु० ॥ अमथी अंतरहो राज, तुमे मत राखजो जी, थें तो नवल निवाहो नेह ॥ गु० ॥ मू० ॥ ॥ ३ ॥ तिहां रह्या पण हो राज, अमें बुं तमारडा जी, तुमे कीधा महोटा अम्म ॥ गु० ॥ माहरे नयरे हो राज, किवारे पधारशो जी, जो न आवो तो तुमने सम्म ॥ गु० ॥ मू० ॥ ४ ॥ एणी पुरमांहे हो राज, अम सुखीया थया जी, रखे मूको कदीरे वीसार ॥ गु० ॥ तुम जहेवा हो राज, धर्म सनेही नवि मीले जी, कुंण मलशे अमथी एवार ॥ गु० ॥ मू० ॥ ५ ॥ जिनयात्रा हो राज, समयें संभारशुं जी ॥ तुमे साह जी सुगुण विश्राम ॥ गु० ॥ एम कपटी हो राज, करे लटपट घणीजी ॥ सूणी बोल्यो वृषभसेन ताम ॥ गु० ॥ मू० ॥ ६ ॥ किहां चालशो हो राज, करी प्रीत एवडी जी ॥ मूखे कहो

सातमी भांखी मोहन वचन सवाई हो ॥रू०॥१७॥

॥ दोहा ॥

परणी कपटी श्रावकें, ऋषिदत्ता तेणीवार ॥ उत्सव महोत्सव करी घणा, वरत्या जयजयकार ॥ ॥ १ ॥ धन बहु दीधुं दायजे, कापड भूषण कोडि ॥ रुद्रदत्त दंभी तणा, पहोंता सघला कोय ॥ २ ॥ दंभी सा कन्या वरी, गयो कुवेरदत्त पास ॥ वात कही सघली तिसे, आणी मन उल्लास ॥ ३ ॥ केह वि परणी कपटें करी, श्रावक पुत्री आज ॥ ठे मुजरो तुम मित्रने, अहो मित्र महाराज ॥ ४ ॥ कुबेर दत्त समरथ थइ, हस्यो करतल आस्फाल ॥ कहे धन्य धन्य तुज बुद्धिने, कपट सरोवर पाल ॥ ५ ॥ दिन केते कपटी हवे, हाथ करी निजदाम ॥ शीख ग्रहे ससराकने, विनय करीने ताम ॥ ६ ॥

॥ ढाल आठमी ॥

मारे आंगणेहो राज, ठेला मारु वावडीजी ॥ ए देशी ॥ जो जो कपटी हो राज, कहे करजोडीने जी ॥ निज ससराने हसी तेह, गुणवंता जी ॥ मूज दीजें हो राज, सदन भणी शीखडी जी ॥ ए आंकणी ॥ इहां आव्यां हो राज, दिवस केइ थइ गया

जी ॥ तुम साथें थयो बहु नेह ॥ गु ॥ मू० ॥ १ ॥ माहरे मंदिर हो राज, जोतां हशे जे वाटडी जी ॥ वली आवशुं इण पुरमांहे ॥ गु० ॥ दिशि खाव्या हुं हो राज, इहां तुम शुं मलीजी ॥ घणुं जाणजो थोडा मांहि ॥ गु० ॥मू०॥२॥ अम लायक हो राज, होय कारिज जि कोजी ॥ लखी मोकलजो तुम्हे तेह ॥ गु० ॥ अमथी अंतरहो राज, तुमे मत राखजो जी, थें तो नवल निवाहो नेह ॥ गु० ॥ मू० ॥ ॥ ३ ॥ तिहां रह्या पण हो राज, अमें हुं तमारडा जी, तुमे कीधा महोटा अम्म ॥ गु० ॥ माहरे नयरे हो राज, किवारे पधारशो जी, जो न आवो तो तुमने सम्म ॥ गु० ॥ मू० ॥ ४ ॥ एणी पुरमांहे हो राज, अम सुखीया थया जी, रखे मूको कदीरे वीसार ॥ गु० ॥ तुम जहेवा हो राज, धर्म सनेही नवि मीले जी, कुंण मलशे अमथी एवार ॥ गु० ॥ मू० ॥ ५ ॥ जिनयात्रा हो राज, समयें संभारशुं जी ॥ तुमे साह जी सुगुण विश्राम ॥ गु० ॥ एम कपटी हो राज, करे लटपट घणीजी ॥ सूणी बोल्यो वृषजसेन ताम ॥ गु० ॥ मू० ॥ ६ ॥ किहां चालशो हो राज, करी प्रीत एवडी जी ॥ मूखे कहो

ठे जी जाशुं हवे ॥ गु० ॥ अम उपरें हो राज, थइ जाउं सुखें जी ॥ पण चलण न देशुं हेव ॥ गु० ॥ मू० ॥ ७ ॥ फरी गोठडी हो राज, किहांथी तुमार डीजी ॥ ए तो बनतां बनी गइ गोठ ॥ गु० ॥ अमे कोइथी हो राज, नहीं तो करां प्रीतडी जी, जे पव ने न पडे कोठ ॥ गु० ॥ मू० ॥ ८ ॥ तुमे स्वामी हो राज, अठौं अमीरस बोलता जी ॥ तेणें माहरुं हेलव्युं हीर ॥ गु० ॥ नाहिं तो कोइने हो राज, धीरुं केम बांहडी जी ॥ अमें श्रावक धर्मी धीर ॥गु०॥मू०॥ए॥ अमें तमने हो राज, दीधी एक पुत्रिका जी, किस्यो पडदो राख्यो नांहि ॥गु०॥ एम निःस्नेही हो राज, तुमे पर देशीया जी ॥ थोडो हली मली ठेह दूसाह्य ॥ गु० ॥ मू० ॥ १० ॥ जली जाणी हो राज, तुमारी प्रीतडी जी, हवे चालो ठो माया लाय ॥ गु० ॥ सुंदर मंदिर हो राज सवि, ठे तुमारडां जी तूमें रहो रहो महाराय ॥ गु० ॥ मू० ॥ ११ ॥ तव रुद्रदत्त हो राज, बोल्यो हसी शाहशुं जी ॥ हव केरुं नहीं ठे काम ॥ गु० ॥ अमें लागर हो राज, वेपारी वाणीया जी ॥ अठे कारज बहूलां धाम ॥ गु० ॥ मू० ॥ १२ ॥ वली मिलशुं हो राज, जो

ठें खरो नेहलो जी ॥ पण हवणां तो दीजें शीख ॥ गु० ॥ सत साखें हो राज पसरजो साहिबाजी, तुमें जीवजो कोडि वरीस ॥ गु० ॥ मू० ॥ १३ ॥ बेसी तव सार्थपें हो राज, सोंपी निज पुत्रिका जी ॥ तस शीखडी दीधी ताम ॥ गु० ॥ शुभ शुकने हो राज, तदा संप्रेडिया जी, सहु साजन करे गुणग्राम ॥ गु० ॥ मू० ॥ १४ ॥ बेसी रथमें हो राज, रुद्रदत्त निजपुर चालियाजी ॥ कही आठमी हो राज, स लूंणी सोहामणी जी ॥ ए तो मोहनविजयें ढाल ॥ गु० ॥ मू० ॥ १५ ॥

॥ दोहा ॥

ऋषिदत्ता रुद्रदत्त विहु, पंथे वहे सोत्साहि ॥ अनुक्रमें पहोतां हेज नरी, रूपचंद्रपुरमांहि ॥ १ ॥ कुटुंब सयल हर्षित थयुं, रुद्रदत्त आव्यो जेण ॥ साथें ऋषिदत्ता निरखी, हरख्यो अतिहिं तेण ॥ २ ॥ सासूने पाये पडी, सासू सुकुलिणी ताम ॥ वडां वडेरां आदिदें, सहुने कीध प्रणाम ॥ ३ ॥ बेठी मंदिर हेज नरी, कीधां नोजन सार ॥ रुद्रदत्त पण कपटगृह, जम्यो हस्यो तेणीवार ॥ ४ ॥ अतिप्रीतें पति प-

भ्मिनी, भोगवे भोगप्रकाश ॥ दो गुंदक सुरनी परें, विलसे लछि विलास ॥ ५ ॥

॥ ढाल नवमी ॥

गढडामांहे फूले सहीउं हाथणी ॥ ए देशी ॥
आचार धरना सा तव देखीने, मनडामां शोचे वारं वार ॥ माहरे प्रीतमीए नेसहि तो कैतव केलव्युं, हूंतो श्रावक केरी बालिका, एहोनो तो महेश्वर आचार ॥ मा० ॥ १ ॥ सहितो ए कपटी श्रावक हो यने परणीवाहीने एणे कूड ॥ मा० ॥ भली हूं रे भुलवाणी दीसुं एहथी, धुरथी में नवि जाण्युं कूड ॥ मा० ॥ २ ॥ धूतारे नाखी मुजने फंदमां, तेहनो हुं केहो करीश उपाय ॥ मा० ॥ माहरुने पिहर रह्युं वेगलुं, डुःखडुं ए जाइ केहने कहाय ॥ मा० ॥ ३ ॥ सुरतरु जाणी में बाथ भरी हती, थई नि वड्यो नाह बबुल्ल ॥ मा० ॥ दीसे छे बाहेर फररा फूटरा, भीतर सुरपति मदिरा मूल ॥ मा० ॥ ४ ॥ कर तो में होंशे करी घाल्यो हुतो, जाणीने लीली नागरवेल ॥ मा० ॥ पण तो ए निवडीयों कौअच वेलडी, खलहुंती आवी मलीयो खेल ॥ मा०॥ ५ ॥ न मिटे क्यारें विधिना अक्षरा, पडथुं पानुं कपटी

हाथ ॥ महारो धर्म हुं केण परे करुं, अहो अहो श्री जिनवर जगनाथ ॥ मा० ॥ ६ ॥ केम करी राखी शकीयें जालवी, एकण म्यानमें बे करवाल ॥ मा० ॥ प्रीतम एहवे अवसर आवियो, नीरखी सचिंते ते सुकुमाल ॥ मा० ॥ केम तमें वनिता आमण दूमणां, आवो ठो माहरे नयणें आज ॥मा०॥ कीणेजी निहेजें तुमने दूहव्यां, मुज नणी तुमे दाखो तेह समाज ॥ मा० ॥ ७ ॥ आपणे स्वामी ठे कहो केहनी, पहेरीने जूषण नव नव रंग ॥ मा० ॥ कपूरकेरा तूमें करो कोगला, खेलो साहेली केरे संग ॥ मा० ॥ ए ॥ हियडो मेलोरी पीहरतणो, मत तुमें आणो आतमराम ॥ मा० ॥ निवहो आपणलें करे लेइने, आपणा मंदिर केरुं काम ॥ मा० ॥ १० ॥ यौवनलटको दहाडा चारनो, अवसर केहो धर्मनो आज ॥ मा० ॥ आगलें सुख डुःख केणें दीठडुं, केणे वली दीठो धर्मसमाज ॥ मा० ॥ ११ ॥ केम करी कीजे दोहिलो आतमा, पामीने मानवनो अवतार ॥ मा० ॥ मूरख जे कोई कांइ लेहेता नथी, ते नव लेवे सरस आहार ॥ मा० ॥ १२ ॥ एहवा सांजलीने पीयुना वोलडा,हारीने वेठी धर्म रतन्न ॥

ततक्षण लागे संगति नीचनी, जो करी रहीयें को डी यतन्न ॥ मा० ॥ १३ ॥ सवृक्षपुष्पसौरभ्य, दान दानैकतत्परः ॥ शवेन मिलितो वायुर्दौर्गंध्यं किमु ना श्नुते ॥ हुइ मिथ्यातणी पियुना प्रसंगथी, मानव जो जो कर्मनां काम ॥ मा० ॥ पीयूष केरुं गरल थई गयुं, ए ए मोह महाबलधाम ॥ मा० ॥ १४ ॥ आग ल होशे सवि वातो नली, हर्षेशुं निसुणो बाल गो पाल ॥ मा० ॥ मोहनविजयें नांखी हेजशुं, अभि नव नांखी नवमी ढाल ॥ मा० ॥ १५ ॥ सर्व गाथा.

॥ दोहा ॥

सुख नोगवतां विविहपरें ऋषिदत्ताने एक, पुत्र रत्न हूउं नलो, सुंदररूपविवेक ॥ १ ॥ कीधा उ त्सव नवनवा, दीधां जाचक दान ॥ नात संतोषी आपणी, वहेंच्यां फोफल पान ॥ २ ॥ नाम ठव्युं वरमुहूरतें, तास महेश्वरदत्त ॥ रूपवंत विद्यानिलो निरुपम गुणसंसक्त ॥ ३ ॥ हूउं तेह अनुक्रमें, यौवनवय उन्मत्त ॥ सहू वखाणे नयरमें, धन्य महे श्वरदत्त ॥ ४ ॥ नमया सुंदरीनो हवे, सांनलजो अधिकार ॥ अति रसीली ने कथा, शीलोपरि सु विचार ॥ ५ ॥

॥ ढाल दशमी ॥

नानो नाहलोरे ॥ ए देशी ॥ पीयर ऋषिदत्ता तणे रे जाइ छे सहदेव,साजन सांजलो रे ॥ ए आंकणी ॥ तस दयिता छे सुंदरीरे,जेहवी सिंधुसुता स्वयमेव॥१॥ अनुक्रमें गर्न धस्यो तिणे रे, सूचित सुपनाहार ॥ सा०॥ जेम जेम गर्न वधे जलो रे तेम तेम हर्ष अपार ॥ सा० ॥ २ ॥ अति न हसे अति नवि सुवे रे, अति चपल न चाले चाल ॥ सा० ॥ अति वरकी बोले नहीं रे, अति घणुं न करे ख्याल ॥ सा० ॥ ३ ॥ वात जो जुंजे गर्निणीरें सुत होय कुब्ज के अंध ॥ ॥ सा० ॥ कफवत जोजने पांकुरोरे, पीतवंत पांकु प्रवंध ॥ सा०॥ ४ ॥ अति लवणें डगवल हरे रे, अति शीतलें होय वाय ॥ सा० अति ऊनुं हरे वीर्यने रे, अतिकामें गर्न हणाय ॥ सा० ॥ ५ ॥ दिवसे जो सूवे गर्निणीरे, निद्रालु होय जात ॥ सा० ॥ नयनांजन थी चीपडो रे, रुदने गलित डगवात ॥ सा० ॥ ६ ॥ स्नान लेपन दुःशीलियोरे, कुष्टि तेलायास ॥ सा० ॥ हसवाथी रसना तालवुं रे, दंतोष्टादिक श्याम ॥ सा०॥ ७ ॥ चपलगतें चंचल हुवेरे, शुष्काहारें मूढ ॥ सा० ॥ होवे प्रलापें अतिवके रे, अति निसुणये नि

गूढ ॥ सा० ॥ ८ ॥ इति सुश्रुत शारीरमें रे, नांख्यो गर्भ विचार ॥ सा० ॥ अनुमानें ते ग्रंथनें रे, पादे गर्भ सा नार ॥ सा० ॥ ए ॥ जेहने उदरें अपुत्रीयो, उपन्यो होय जो जात ॥ सा० ॥ गाल माटी ठीकरा रे, आहारे तेहनी मात ॥ सा० ॥ १० ॥ पुण्यवंत गर्भें उपन्यो रे, करे शुभकरणी मात ॥ सा० ॥ रुडा ज दोहला उपजे रे, शास्त्रमें एम कही वात ॥ सा० ॥ ११ ॥ अनुक्रमें सुंदरी नारीने रे, दोहद उपन्यो अहीन सा० ॥ सप्रिय रमुं गयंवर चढीरे, नर्मदा तटिनी पुलीन ॥ सा० ॥ १२ ॥ दीनने दान दिउं जोइतुंरे, पूरुं एह उमाह ॥ सा० ॥ दोहद ए मुज चित्तना रे, जइने विनवुं नाह ॥ सा० ॥ १३ ॥ हं सतणी गतें चालतीरे, पहोती प्रीतम पास ॥ सा० ॥ स्वस्थ थई दोहद कह्या रे, करिकरिवचनविलास ॥ सा० ॥ १४ ॥ पियु रंज्यो दोहद सुणी रे, दयिताने दीध दिलास ॥ सा० ॥ ए तुम इछा पूरशुं रे, करशुं एह तमास ॥ सा० ॥ १५ ॥ जो कशी होंश होये वली रे, मुजने दाखो तेह ॥ सा० ॥ ढाल कही दशमी जली रे, मोहन विजयें तेह ॥ सा० ॥ १६ ॥ सर्व गाथा ॥

॥ दोहा ॥

सहदेवें आण्यो तुरत, दंती शुंमादंरु ॥ हिमगि रिबांधव जाणीयें, के धराधरपिंड ॥ १ ॥ सोहे रदन रयणे जड्या, अति विस्तार अद्वीप ॥ मानुं गज दाढा उपरे, उप्पन्न अंतरद्वीप ॥ २ ॥ उच्च कपोल थकी ऊरे, वहे मदधारा नूर ॥ उलट्यो पद्मद्रह थकी, सिंधू गंगापूर ॥ ३ ॥ करीकरी इंदीवरें, चि त्रित तनु उत्तंग ॥ मानुं लताविद्रुम तणी, तरे प योधितरंग ॥ ४ ॥ गजने गले घंटावली, ऊलती नीली फूल ॥ सरवर तट हरीयां वचें, दद्दुर डहके अमूल ॥ ५ ॥ वीरसेन सा सुंदरी, बेठी गयंवर पी ठ ॥ पाम्यो तट ते नर्मदा, अति रमणीय इठ ॥६॥

॥ ढाल अग्यारमी ॥

अमदावादना खेड्या रे, वालम वहेला आवजो रे ॥ हारे मारी मीठडा बोली नार, काजल थोडे रो हो सार ॥ ए देशी ॥ नर्मदा नदीने तीरे रे, गयंवर वीफर्यो रे ॥ उंडा घनशुं गज गललो कर्यो रे ॥ तेणे गजे धूण्युं धडहड अंग, करतो धूसर हो उतरंग ॥ अंकुशीयानी ऊीकें रे, ते वश आणीयो रे ॥ १ ॥ अरहो परहो फेर्यो रे, गज तेहने तटें

रे ॥ सूंढे ग्रहीने महीरुह आंछटे रे ॥ तव तिहां बीहती सुंदरी नारी, पीयुने करती बहु मनूहार, सुंदर तरुनी छायें रे, तुमें डीप राखजो रे ॥ २ ॥ गजने पीयुडे आण्यो रे ते तरु हेठले रे ॥ लांबी सांकल रे, भूतल खलभले रे ॥ मदफर राख्यो तिहां फीफीकार, भामिनी भासे हो भरतार, करिवरियाने छांभो रे, जइ जल फीलीएं रे ॥ ३ ॥ प्रमदा पीयुडो बेहु रे, गजथकी उतस्यां रे ॥ नमया तटनी साहमां संचस्यां रे ॥ जिहां करे हंस मयूर टकोर, जाणीयें रण झण रणके जोर, नूपुरियां अति रुडां रे वहे तेह वजाडती रे ॥ ४ ॥ जलना पूरमां होवे रे बहुल पंपोटडा रे, सूर्यना दीधिति रे, फल हले रुअडा रे, एतो मानुं तटिनी कंठें हार, तेहनां दीपे हो नंग सार ॥ हरि हरियाली ओढी रे, जाणीयें ओढणी रे ॥ ५ ॥ मत्स्यना पुछथी उडे रे, जलना बिंदुवा रे ॥ फीणा फीणा श्रेणें जूजुआ रे, एतो मानुं सास्यां केशे केश, उज्ज्वल दधिसुत हो सुविशेष, सारसीआला पाले रे सारसुडा चूगे रे ॥ ६ ॥ नीरना पुरमें मानुं रे अंबुज उफण्यां रे, गुणथी लीना मधुकर रणफण्या रे ॥ एहवी सा न

दी सुंदरी देखि, पामी मन्नमां हर्ष विशेष ॥ धसमसी
ने ते पेठी रे, झीलवा कारणें रे ॥ ७ ॥ सजनी सा
हेली संगें रे किन्नरी आंटती रे, मांहोमांह जल
निर्मल छांटती रे ॥ के ग्रहे करथी कैरव कोष मु
ख, द्युतिये देती हो इंडुने दोष॥ काजलीयाली नेणे
रे, नर्मदा हारथी रे ॥ ८ ॥ तरती आवडती पडती
रे केइक उठती रे, जाणीए पन्नगी जल अंगूठथी
रे ॥ एम तिहां रमती रसज्ञरी नारि ॥ त्रट त्रट
त्रूटे मोतीहार, मोतीयडांने लोर्जें रे सफरी तरव
रे रे ॥ ए ॥ रमत रमतां थाकीरे सघली सुंदरी रे,
कांठे उन्नी जेहवी पुरंदरी रे ॥ सुंदरी नीचोवें ति
हां वेण, फणिपति जीत्यो जाणीए जेण, रेसमीया
ली पहेरी रे वीजी पटोलियो रे ॥१०॥ ठमके ठमके
चाली रे प्रणमे नाहने रे, स्वामी पूछ्यो तमे ए उ
त्साहने रे ॥ पण वली होंश छे मुजने एक, पूरो
तो कहियें हो सुविवेक ॥ तमने जो नवि चांखुं
रे तो केहने कहुं रे ॥ ११ ॥ माहरो जोरो चाले रे
पीयु तुम आगलें रे, जेणी रीतें वाल्लुं तेम तेमही व
ले रे ॥ एम कही सुंदरी करी मनोहार ॥ तव तिहां
बोल्यो हो भरतार, हियडलानी वातो रे, नारी मुज

ने कहो रे ॥ १२॥ पैसो खरचे थाशे रे तो होंश पूरशुं रे, बीजुं गुणवंती वल नहिं दूरशुं रे ॥ तेणे एम निसूणी पीयुनी वाणी, बोली सुंदरी हो जोडि पाणि ॥ नाहलीया एणे तीरे रे एक पूर वासीये रे ॥ १३ ॥ उंचा उंचा रूडा रे महोल बनावीये रे, रमवा अहोनिशि इण तटें आवीयें रे ॥ एवी इछा मुऊ मनमांहि,पूरो पीयुडा हो सोत्साहि ॥ प्रीतमीए तिण वेला रे, आरंभ आदस्यो रे ॥ १४ ॥ केटला दिनमां तेणें रे नयर वसावीयुं रे, रुडा रुडा लोकने वास वसावीयुं रे ॥ एतो कही सरस अग्यारमी ढाल, मोहनविजयें हो सुविशाल ॥ सरसाली अति मीठडी रे, आगल वातडी रे ॥ १५ ॥ सर्व गाथा.

॥ दोहा ॥

वस्युं नर्मदापुर जलुं, नर्मदा तटने तीर ॥ उज्ज्वल जिनमंदिर कस्यां, जिम क्षीराब्धि दंक्षीर ॥ १ ॥ जिन मूर्त्तिनी स्थापना, कीधी लाभ निमित्त ॥ भाव सहित दंपती करे, नवली पूजा नित्त ॥ २ ॥ काशमीरज चंदन कुसुम, धूप दीप उपचार ॥ भक्ति विशेषे स्वारथ करे, ए श्रावक आचार ॥३॥ एम दोहद पूरण कस्या, नारीना नव रंग ॥ सहदेवें सू

परें किया, अधिकाधिक उछरंग ॥ ४ ॥ एहवे र हेतां अनुक्रमें, गर्भतिथि थइ जाम ॥ सुंदर नारी एं प्रवर, पुत्री प्रसवी तांम ॥ ५ ॥

॥ ढाल वारमी ॥

मोतीयारां हे कुमख फूमखां ॥ ए देशी ॥ अथ वा घरे आवोजी आंवो मोरीयो ॥ ए देशी ॥ सह देवने दीधी वधामणी, घरें प्रसवीजी पुत्री रतन्न ॥ सही हूवां ए रंग वधामणां, तव हरख्योजी शाह शिरोमणि, अति पुलकित हूउ तन्न ॥ स० ॥ १ ॥ मणि सोनुं रुपुं सामटुं, तस दासीने कीध पसाय ॥ स०॥ कस्यां उेरण जाचक लोकने,जेम आतम शक तें देवाय ॥ स० ॥ २ ॥ कस्यो उत्सव पुत्रीनो अन्नि नवो, जेम अंगज आवे कराय ॥ स० ॥ वली घर घर गुडी उब्बले, घर आंगणे गीत गवाय ॥ स० ॥ ३॥ डुर्वानां तोरण वांधीयां, वीच सुरतरुदल लहकंत ॥ स० ॥ कुंकुमना करतलदिधला, जला फूल फगर महकंत ॥स०॥४॥ मणि मोतीनां हो टोके फूंवखां, गोखें चंदन जरीयां माट ॥ स० ॥ जेरी जुंगल तव हडहडे, डुड़ी गुंजाला गुंजे थाट ॥ स० ॥ ॥ ५ ॥ जन्ममहोत्सव पुत्रीतणो, सहदेवें कीधो वि

शेष ॥ स० ॥ जिन साजन सवि संतोषियां, दिन उचित उचित सुदेष ॥ स० ॥ ६ ॥ सहदेव कुटुंब नणि कहे, तमें सांजलो माहरी वात ॥ स० ॥ ज्यारे सुता एहनी मातने, हूंती गर्नें विमल विख्यात ॥ स० ॥ ७ ॥ त्यारें एहवो डोहलो उपन्यो, एहेनी जननीने अहो वीर ॥ स० ॥ गयंवरने खंधें चढी करी, जइ खेलुं हो नर्मदा तीर ॥ स० ॥ ८ ॥ वली तेणें तटें नगर वसाविएं, अतिरूडुं नर्मदा नाम ॥ स० ॥ जो मनमां आवे सहु तणा, जोउं दोहद गुण अनिराम ॥ स० ॥ ए ॥ हवे कहो तो ए पुत्रीनुं दीजीयें, वर नर्मदासुंदरी नाम ॥ स० ॥ दोहद सघला में पूरिया, घरे प्रसवी पुत्री ताम ॥ स० ॥ १० ॥ कहे कुटुंब सयल हर्षें करी, एहनुं एहिज उत्तम नाम ॥ स० ॥ नाम नर्मदासुंदरी स्थापिने, सहू पहोता निज निज धाम ॥ स० ॥ ११ ॥ सा सुंदरी पुत्री नणी, लेइ गोद रमाडेसुगेल ॥ स० ॥ सिंचे पय पाणी पानथी, जिम अमीए सुरतरु वेल ॥ स० ॥ १२ ॥ आनूषण दिव्य अंगें ठव्यां, फरके टोपी ऊरकशी शीष ॥ स० ॥ बेउ पाये घूघरी घमघमे, देखी जननी पामे हीस ॥ स० ॥ १३ ॥

घर आंगणे दोडे घुंटणे, क्षण रोवे क्षण हसे तेह ॥ स० ॥ कहे मुखथी खमां खमां, मावडी करि कटि लटे आणी नेह ॥स०॥१४॥ वळी निर्मल नीरें नवरावती, बुचकारती माय जे मयाल ॥स०॥ मोहन विजयें वर्णवी, ए कही बारमी ढाल ॥ स० ॥ १५ ॥ सर्व गाथा.

॥ दोहा ॥

वाधे नमया सुंदरी, रुपरंग गुण प्रेम ॥ ए रजनीपति बीजनो, दिन दिन वाधे जेम ॥ १ ॥ जेणें बालपणाथकी, जोया ग्रंथ अनेक ॥ लक्षण शास्त्र तणी थई, वरदायी सुविवेक ॥ २ ॥ निर्विकार जस नयन युग, रसना सुधा सरीस ॥ हियडे विषयनी वांछना, सुपने नहिं सुजगीश ॥ ३ ॥ योवन जल ज्युं देह उपरें, ऊंप्युं सुंदर रूप ॥ मुखपर निवसी अरुणता, उचित पयद अनूप ॥ ४ ॥ हांसूं अधरें वीशमे, लज्जा लंगर पाय ॥ सा नमया योवन जणी, सिली भुजयुग सुविज्ञाय ॥५॥ हवे श्रोताजन सांजलो, जावी कथा विचार ॥ मन माने ते कीजीए, पण होय ते होवणहार ॥ ६ ॥

॥ ढाल तेरमी ॥

सनेही वाला लागो नेह न तोडो ॥ ए देशी ॥

हवे ते ऋषिदत्तानारी, सुणी ते नमया सुंदरी सारी रे ॥ सनेही क्यारें मलशे मुझ जिनधर्मी ॥ करे आलोच एम गुण धरमी रे ॥स०॥ में एहवुं एम शुं कीधुं, जे जैनधर्म तजी दीधूं रे ॥ स० ॥१॥ निज कुलमार गथी ए चूकी, जिनभक्ति में करवी मूकी रे ॥ स० ॥ वली नाहने वचने भूली, तजी कल्पमंजरी मही मूली रे ॥ स० ॥ २ ॥ वर समकित रतन में खोयुं, जुउ मिथ्या काच वलोऊं रे ॥ स० ॥ तजी अमीय महारस पीधूं, वड ठेदी ओटीपण कीधूं रे ॥ स० ॥ ॥ ३ ॥ उन्मूली सूरतरु ओप्यो, तिण स्थानक विष तरु रोप्यो रे ॥ स० ॥ शुभकुंभि कुंभस्थल वेसी, थइ चरणचारी हवे एसी रे ॥ स० ॥ ४ ॥ तजी संगति हंस सुरंग। कस्यो काक कुटिल प्रसंग रे ॥ स० ॥ भखुं मानसरोवर ठांकी। जल छिल्लर क्रीडा मांकी रे ॥ स० ॥ ५ ॥ भलो मोतीनो हार निवारी, गले गुंजमाला दिलधारी रे ॥ स० ॥ सहि मृगमद पुंज विपोही, हवे अविकर निकरें मोही रे ॥ स० ॥ ॥ ६ ॥ वर श्रावक कुलमें आवी, तो एसी कुबुद्धि

कमावी रे ॥ स० ॥ घणुं धर्मथी चाली आडी, निज कुलने लाज लगाडी रे ॥ स० ॥ ७ ॥ घर समकित रत्न में आएयुं, पण स्थिर राखी नवि जाएयुं रे ॥ ॥ स० ॥ एक मिथ्यात्वी समकितधारी, ए बेहु में छे अंतर भारी रे ॥ स० ॥ ८ ॥ कीहां मंदर सरषव दाणो, कीहां जलनिधिकूप अयाणो रे ॥स०॥ किहां नृपप्रमदाने दासी, किहां ग्रामीण किहां पुरवासी रे ॥ स० ॥ ९ ॥ किहां अलसिक ने अहि राजा, किहां ढक्का ने घन गाजा रे ॥ स० ॥ किहां मृगपतिने किहां श्रृगाल, किहां बावल सुरतरु डाल रे ॥ स० ॥ १० ॥ किहां वायस ने किहां केकी, किहां अविवेकी ने विवेकी रे ॥ स० ॥ किहां दिन करने किहां खजुओ, किहां आदर ने किहां दूओ रे॥ ॥ ११ ॥ किहां कृपण ने किहां धनदाता, किहां कष्ट अने किहां सुखशाता रे ॥ स० ॥ किहां रंक ने किहां पुरराव, किहां शोचना शुद्ध स्वभाव रे ॥ स० ॥ १२ ॥ किहां रजनी ने किहां दीस, किहां प्रेत ने किहां जगदीश रे ॥ स० ॥ किहां मणिरत्न ने किहां लघु चीडी, किहां कुंजर ने किहां कीडी रे ॥ स० ॥ १३ ॥ तिम जगमें समकित सरिखो,

कोइ बीजो पदारथ न नीरख्यो रे ॥ स० ॥ में अतिहीं कर्यो अविचार्यो, जे जैनधर्मने निवार्यो रे ॥ स० ॥ १४ ॥ मुझ माता पिता जो ए लहेशे, तो कांइनुं कांइ कहेशे रे ॥ स० ॥ नहीं रही होय वात ते छानी, थइ गइ होशे कांना कानी रे ॥ स० ॥ १५ ॥ सही नाखशे पितर ते वाढी, मूने पत्र सटितपरि काढीरे ॥ स० ॥ में रे कर्म कर्यां शां पहेलां रे, थइ धर्मथकी अलगी वहेला ॥ स० ॥ ॥ १६ ॥ गुणहीन कुटिल अटारी, मुझ सरिखी नहिं कोइ नारी रे ॥ स० ॥ ए तेरमी ढाल सवाइ, कहे मोहनविजय वनाइ रे ॥ स० ॥ १७ ॥

॥ दोहा ॥

रुषिदत्ता करकमल पर, स्थापी वर मुखचंद ॥ नीर टबके नेणथी, जे पुराणे संद ॥ १ ॥ रुद्रदत्त दीठी एहवे, आव्यो नारी नजीक ॥ भांखे किम तुम भामिनी, भूतल बली हो लीक ॥ २ ॥ उंचुं जूठ अंगना, निरखो नीचूं केम ॥ दीसे छे मुख दाहडे, शशीकर उदयो जेम ॥ ३ ॥ तव बोली तरुणी तिसे, रे रे पियु प्राणेश ॥ अंगज सुंदर आपणो, पाम्यो यौवन वेश ॥ ४ ॥ मुझ बांधवने बालिका,

नमयासुंदरी नाम ॥ तेपण थइ नवयौवना, अप्सरा जेम अभिराम ॥ ५ ॥ आपण श्रावक होत तो, तो ते नमया बाल ॥ परणावत पीयु आपणा, पुत्र भणी ततकाल ॥ ६ ॥

॥ ढाल चौदमी ॥

गाढा मारुजीहो भभक उडे भाठी चगें, अम ली पीवे कलाल रे। गाढामारु अति उन्मादी माह रो साहिबो ॥ ए देशी ॥ मोरा पियुजी आपण मि थ्यात्वी वाणीया, ए सावय लोक रे ॥ मो० ॥ लेख लख्यो ते लाभीयें, एहमां न को संदेह रे ॥ मो० ॥ ले० ॥ मोरा० ॥ पुत्रने ते पुत्रीभणी वरवानो नहिं योग रे ॥ मो० ॥ १ ॥ ते नमया आपण घरे, आवे तो पूरण भाग्य रे ॥ मो० ॥ हुं पण जाई नवि शकुं, लाधतो कोइ नथी लाग रे ॥ मो० ॥ ले० ॥ मो० ॥ २ ॥ तुमनें तिहां जो मोकलुं, तो पण सरे नहिं का म रे ॥ मो० ॥ते तुमने धारे नहीं, जाणो छो गु णधाम रे ॥ मो० ॥ ले० ॥ मो० ॥ ३ ॥ तुमें छो मा णस मोटिका, तुमची केही वात रे ॥ मो० ॥ तुम गुण जाणी बालिका, किम नवि परणे जात रे ॥मो० ॥ ले० ॥ मो० ॥ ४ ॥ तुम जेहवा धूरत तणो भाणे

केम विश्वास रे ॥ मो० ॥ शेकीने जे वावियें, लहि
जें केम कण तास रे ॥ मो० ॥ ले० ॥ मो० ॥ ५ ॥
कीधा तस तुमें दोहिला, तेहनी हवे शी आशरे, दा
ज्यो जे पय पीवतां, ते फुंकी पीवे ठास रे ॥ मो० ॥
ले० ॥ मो० ॥ ६ ॥ वचन सुणी वनिता तणां, बोल्यो
रुद्रदत्त नाम रे ॥ मो० ॥ जे होणी ते हो गइ, तेह
तुं हवे शुं नाम रे ॥ मो० ॥ ले० ॥ मो० ॥ ७ ॥ जे
तिथि गइ ते ब्राह्मणा, वांचे नहीं नियमेव रे ॥
मो० ॥ कीधुं ते नवि शोचीए, खरुं ते होशे ते देव
रे ॥ मो० ॥ ले० ॥ मो० ॥ ८ ॥ होशे नर्मदा बाल
नो, आपणा सुतथी संबंध रे ॥ मो० ॥ तो अणचिं
त्युं हो थशे, पाणिग्रहण ससंध रे ॥ मो० ॥ ले० ॥
मो० ॥ ए ॥ माणस हाथे न वातडी, हाथे विधाता
नाथ रे ॥ मो० ॥ जावीथी डाह्यो नहि को, न मटे
लेख लख्या जेह रे ॥ मो० ॥ ले० ॥ मो० ॥ १० ॥
जो ते नर्मदा सुंदरी, जो नहीं परणे जात रे ॥ मो० ॥
तो शुं रहेशे कुंवारडो, एशी ठाली वात रे ॥ मो०
॥ ले० ॥ मो० ॥ ११ ॥ कहे ऋषिदत्ता नाथने, ए स
हि साची वाच रे ॥ मो० ॥ दंत दे ते चाववा, दे ठे
ते साची वात रे ॥ मो० ॥ ले० ॥ मो० ॥१२॥ एतो

प्रत्यक्ष पारखुं, जावीनो संसार रे ॥ मो० ॥ त्तमे मि थ्यात्वी हुं श्राविका, केम थयां स्त्री जरतार रे ॥ मो० ॥ ले० ॥ मो० ॥ १३ ॥ जे लख्या विधियें श्र क्षरा, ते कुण टाले कत्ति रे ॥ मो० ॥ एहवे रमतो आवीयो, पुत्र महेश्वर दत्त रे ॥ मो० ॥ ले० ॥ मो० ॥ १४ ॥ कर जोडी कहे तातने, करो ठो केहो वि चार रे ॥ मो० ॥ केम सचिंती मुऊ मावडी, कहो मुऊने एणी वार रे ॥ मो० ॥ ले० ॥ मो० ॥ १५ ॥ केणे डुहवी एवडी, के केणे दीधी गाल रे ॥मो०॥ हठ करी मांड्युं पूठवा, जननी डुमनी नीहाल रे ॥ मो० ॥ ले० ॥ मो० ॥ १६ ॥ जाखशे रुद्रदत्त बोल डा, सांजल्य सुत सुकुमाल रे ॥ मो० ॥ जांखी मनो हर चौदमी, मोहनविजयें ढाल रे ॥ मो० ॥ ले० ॥ मो० ॥ १७ ॥ सर्व गाथा.

॥ दोहा ॥

रे वत्स मामो ताहरो, नाम जलो सहदेव ॥ तस घर पुत्री नर्मदा, अठे सयल गुण मेव ॥ १ ॥ काने निसूणी नर्मदा, तव माताए आज ॥ तेहने तुऊ प रणाववा, वांठे ठे माताज ॥ २ ॥ हुं तिहां नवि जा ई शकुं, मं तिहां केतव कीध ॥ यह श्रावक तुऊ

मायने, परणी जग प्रसिद्ध ॥ ३ ॥ ते तो पुत्री तुझ
तणी, कहो सुत सोंपे केम ॥ तुज जननी ते शोकमें,
चिंतातुर छे एम ॥ ४ ॥ पुत्र कहे हुं तिहां जइ, प
रणीश करी प्रपंच ॥ अम कुल एहिज रीत छे, तेह
मां शी खलखंच ॥५॥ शकट नरी बहु वस्तुथी, तुरत
महेश्वरदत्त ॥ चाल्यो आव्यो अनुक्रमे, वर्द्धमान
पुर जत्त ॥ ६ ॥ मामाने दीधी खबर, जे आव्यो ना
णेज ॥ ते निसुणी घर तेडियो, ईषत आणी हेज॥७॥

॥ ढाल पन्नरमी ॥

आव्य धूतारा नंदनारे, तें धूत्युं गोकुल गाम ॥ ए
देशी ॥ हिये आलिंगीने मल्या जी, मामो ने नाणे
ज ॥ केम कृपा करी पत्तन एणे, जी नांखो आंणी
हेज ॥ १ ॥ आव्य धूतारा रुडना रे, तुं कुशल कहे
वात ॥ एक वेला ताहरे तातें, देखाड्या पराक्रम ॥
तुमें पण जे गेहे पधास्या, शुंजी करशो तेम ॥ २ ॥
अमे एकज वार धूताणा, हवे धूताशुं केम ॥ जाण्यो
ग्रह पीडे नाहिं क्यारे, छे ऊखाणो एम ॥ ३ ॥ आ०॥
पावक उपरे काठनी हांडी, चढे एकज वार, तारक
बिंबे हंस नोलाणो, मोती न चूगे फेर ॥ आ०॥ ४ ॥
हमणां तो आपणे छे सगाइ, मया करो महाराज ॥

एक सदन शाकिनी पण छोडे, आणी संबंधनी लाज ॥ आ० ॥ ५ ॥ चक्री पण तेम चक्र न मूके, वांधवताने जेम ॥ पोतानुं वली पारकुं प्रीछे, पशुउं पण ए तेम ॥ आ० ॥ ६ ॥ तुमें जे पुरमांहि वसो छो साचुं कहो ससनेह, छे सघलां ए लोक धूतारां, के तुमारुं गेह ॥ आ० ॥ शुंमाउं प्राप्ति अन्य व्यापिरे, शुं कांइ नवि थाय ॥ जे एम मूसे लोक पराया, केम ए आवे दाय ॥ आ० ॥ ॥ ८ ॥ नीचे आननें सांजली बोल्यो, मामाजी महाराज ॥ ए उवेखो कांइ अलेखे, आंगण आव्या आज ॥ आ० ॥ ॥ ए ॥ एक चूंडे शुं सघलां चूंडां, जाणो छो देव दयाल ॥ आंगुलि पांचे होवे न सरखी, कोइ मोटी कोइ वाल ॥ आ० ॥ तात सरीखो जात न जाणो, केइ धनी केइ रंक ॥ रावण मंदिर पुंजतो वायु, हनुए लीधी लंक ॥ आ० ॥ ११ ॥ वसुदेवने कंस नरेशे, राख्यो कारागार ॥ काढ्यो तिहांथी पुत्र मुकुंदे, मातुल दीध प्रहार ॥ आ० ॥ १२ ॥ न होवे पुत्रमें ताततणा गुण, मानी ल्यो निर्धार ॥ दो जीहो विषथी जन पीडे, कीधो मणि उपकार॥आ० ॥ १३ ॥ खारो पयोनिधि मानव जाणे, पुत्र शशी

सुधाकंद ॥ जो सघलाए होवे सरखा, तो उगे केम दिणंद ॥ आ० ॥ १४ ॥ मामा तुमथी माहरे तातें, खाध्या दीसे दोष ॥ पण तुमने थावुं घटे जारी, आणीजे नहिं रोष ॥ आ० ॥ १५ ॥ जंघ उघाडतां पोता केरी, पोताने आवे लाज ॥ दूर ते दूर पण हवे मोसुं, माफ करो महाराज ॥ आ० ॥ १६ ॥ तात अमारो हुंतो मिथ्यात्वी, पण तुम वेहेन प्रसंग ॥ बीजा धंधा मूकीने हवे, जैन धरमथीरंग ॥ १७ ॥ हरख्यो मामो ते निसुणीने, उलस्यो अंगो अंग ॥ मातुल मलीयो जाणेजथी त्यारे, कोमल दीयुं आलिंग ॥ आ० ॥ १८ ॥ वस्तु वखारे आणी उतारी, सुंदर जोजन कीध ॥ वेंची साटी तेह वसाणुं, दाम सवाया लीध ॥ आ० ॥ १९ ॥ मामाथी मल्यो एकंगो, जाणेजो धूतधमाल ॥ मोहनविजयें रुडी जांखी, पन्नरमी ए ढाल ॥ आ० ॥२०॥ सर्व गाथा.

॥ दोहा ॥

रंज्यो तस गुण देखिने, मातुल चित्त अनंत ॥ पूछे निज जाणेजने, तेडीने एकंत ॥ १ ॥ रे वत्स तुझने जे रुचे, मागी ले तुं तेह ॥ संकोचाइश मा सुजग, ए छे ताहरुं गेह ॥ २ ॥ इम निसुणी बोले

तुरत, हसी महेश्वरदत्त ॥ स्वामी तुम्म पसायथी, सघली ठे संपत्त ॥ ३ ॥ जो करुणा पूरण करो, इछि त जो द्यो मुझ ॥ तो ए नमया सुंदरी, परणावो कहुं गूझ ॥ ४ ॥ एहज अर्थेहुं इहां, आव्योहुं महारा ज ॥ हवे जेम जाणो तेम करो, वांहि ग्रह्यानी लाज ॥ ५ ॥

॥ ढाल सोलमी ॥

गइती पीयरीएने आविती रीसाइ ॥ ए देशी ॥ वाणी सुणीने बोल्यो तिहां सहदेव, तुंतो मिथ्यात्वी अमें श्रावक सुसेव ॥ महारा नाणेजा हो राज ए हेवुं म बोल ॥ १ ॥ तुझजनक गयो अमने नोलाय, ते उपरें पुत्री केम देवराय ॥ म० ॥ एक वेला दा झयो डुधथी जेह, ठास नणी फुकी पीये तेह ॥मा०॥ विषधरथी जे बीहिनो कोय, दोरडीये कर घाले जोय ॥ मा० ॥ २ ॥ विलखे वदने तव कहे नाणेज, एम एकाएक केम तजो हेज ॥ म० ॥ तुम नगिनी नुं पयोधर खीर, में पीधुं थइने धीर ॥ म० ॥ ३ ॥ ते केम होइश मिछादीठ, पठें तो तुमे ठो सु गुण गरिठ ॥ म० ॥ तुमे जाणो जे खरुं अहो हित वान, गज केम आवे झाल्यो कान ॥ म० ॥ ४ ॥ मा

तुलें जाणेजसुं चारु ठाह, नर्मदासुंदरीनो कीधो वि
वाह ॥ म० ॥ परण्यो सयल मनोरथ सिद्ध, कांचित
दीवसें सीखडी लीध ॥ म० ॥ ५ ॥ नर्मदासुंदरी
लेइ संग, अनुक्रमे आव्यो निजपुर खंग ॥ म० ॥
मात पिताना प्रणम्या पाय, पगे लगाडी सा हित
लाय ॥ म० ॥ ५ ॥ ऋषिदत्ताए नमया बाल, दीठी
सुपरें नयणें निहाल ॥ मा० ॥ कुशलप्रश्न पूछ्या तेणी
वार, सज थइ कह्यो सयल विचार ॥ म० ॥ ७ ॥ न
र्मदासुंदरी महेश्वरदत्त, जोगवे जोग विविध बहु
जत्त ॥ म० ॥ दंपती प्रीति परस्पर लीन, जेहवी
प्रीति होवे जल मीन ॥ म० ॥ ८ ॥ एकदा नर्मदा
विनवे शाह, स्वामी जैनधर्म वाह वाह ॥ मोरा सहे
जाहो नाह, कुमति निवार ॥ ए आंकणी ॥ जिनवर
जक्ति करे निशदीव, दीठे मूरती सुप्रसन्न होय
जीव ॥ म० ॥ ए ॥ जिननी जक्ति रावण ऐकंत, ती
र्थंकर पद आप्युं कहंत ॥ म० ॥ जिनदरिसणथी
हूये उद्धार, देश अनारजें आर्द्रकुमार ॥ म० ॥१०
जिनपूजा फल अधिक अनंत, शिवसुख साधन छे
एकंत ॥ म० ॥ जेणे जिनजक्ति न कीधी सार, तो
धिक तस मानव अवतार ॥ म० ॥ ११ ॥ तरण ता

रण प्रभु कहेवाय, सेवे सुर नर जेहना पाय ॥म०॥ जिन दरिसण ठे शिव सोपान, जिनथी वीजा केहो मान ॥ म० ॥ १२ ॥ कुण ब्रह्मा कुण विष्णु महेश, वीतरागथी नहिं ते विशेष ॥ म० ॥ तुलसी पीपल पूजे लोक, खोटा प्रयास नियामक फोक ॥म०॥१३ जे देवताने प्रमदाथी प्रेम, केम ते तरशे वली तारशे केम ॥ म० ॥ क्रोधादिक वर्जित महाभाग, ते तो एक अठे वीतराग ॥ म० ॥ १४ ॥ निसुणी नर्मदासुंदरीनी वाण, कंतें जिनधर्म कीध प्रमाण ॥ म० ॥ ऋषिदत्तादिक कुटुंब सकोय, जिनभक्तितें वेगं होय ॥ म० १५ ॥ स्थापी जिनप्रतिमा सहु गेह, पूजे प्रतिदिन आणी नेह ॥ म० ॥ टल्युं मिथ्यात्वने प्रकाश्युं समकित, श्रावक हुर्ज महेश्वरदत्त ॥ म० ॥ १६ ॥ करणी उत्तम करतां दिन जाय, धर्मथकी नित्य रुडुं थाय ॥ म० ॥ मोहनविजये थइ उजमाल, नांखी सुंदर शोलमी ढाल ॥ म० ॥१७॥ सर्व गाथा ॥

॥ दोहा ॥

एकदिन नर्मया सुंदरी, सोल सजी शणगार ॥
बेठी निज वातायने, थइ आजाआगार ॥ १ ॥

दर्पण लेई करकमल, निज आनन निरखंत ॥ सहि यर पण तस रूपने, पेखी अति पुलकंत ॥ २ ॥ तं बोलेकरी मुख जख्खुं, अति सुशोभित अंग ॥ वि भ्रम चारु विलासथी, बेठी धरी उमंग ॥ ३ ॥ ए हवे रवि मंमल गयण, मध्ये आव्यो जाम ॥ मास खमण पारण मुनि, गोचरी पहोतो ताम ॥ ४ ॥

॥ ढाल सत्तरमी ॥

अरणिक मुनिवर चाल्या गोचरी ॥ ए देशी ॥

पावक जेहवो रे आतप परजले, पूहवी देवाय न पायोरे ॥ बादरकायारे तापें पराजव्यो, ठयाए ते जायो रे ॥ १ ॥ गति कोइ अजिनवी, जगमें क र्मनी ॥ सवि चितहमें जाणेरे ॥ विणजोगवियां रे बूटे नहीं, कवियणे एम वखाणे रे ॥ ग० ॥ २ ॥ तेणे अवसरें पुरमें परवस्था, व्रतधर सुंदर एह रे ॥ सूला पयतल जन्ही वालुका, तो पण निश्चल नेह रे ॥ ग० ॥ ३ ॥ जय शकटपरे अस्थि खडहहे, क्षाम उदर हग नीचे रे ॥ जयणायें करी हलूए पय ठवे, प रसेवे मूंइ सिंचे रे ॥ ग० ॥ ४ ॥ धन्य धन्य एहवारें जगमें मुनिवर, जे परने हित वांछे रे, निज काया ने रे जाणे कारिमी, तप तापें तनु तीठे रे ॥ ग० ॥

॥ ५ ॥ जिणे अवसर सुखीया जीवडा, वेसी शीतल ठामे रे ॥ तिणे अवसरें विचरे संयमि, तो न्यायें शिव पामे रे ॥ ग० ॥ ६ ॥ ते मुनि घर घर भिक्षा कारणे, खप करे तप जप पूरो रे ॥ गुणमणि रोह ण साधु शिरोमणि, नहि कोइ वाते अधूरोरे ॥ ग० ॥ ७ ॥ दुःसह तडके रे साधु पराभव्यो, निर्वल थके श्रम कीधो रे ॥ नर्मदामंदिर गोखने ठायडे, विसामो क्षण लीधो रे ॥ ग० ॥ ८ ॥ नमयासुंदरी साधु अजाणती, नाख्युं मूखयकी पीक रे ॥ ला ग्यो ततक्षण मुनिने भालतरें, तिलक परे थयुं ठी क रे ॥ ग० ॥ ए ॥ लागत वांता रे मुनि तिहां चम कियो, शुं आकस्मिक एह रे ॥ केणे नाख्युं रे मुक शिर उपरे, निरखे ऊरध तेह रे ॥ ग० ॥ १० ॥ दी ठी गोखे रे नमयासुंदरी, थयो आक्रोश मुनीशोरे ॥ रे रे अधमे रे ए ते शुं कर्युं, अशुचि कर्युं ए शीपो रे ॥ ग० ॥ ११ ॥ ए किहां पातक दूटिश वापडी, ए शो गारव तूकरे, न करे कोइ मुनिने आशातना, तेह करी ते अबूजरे ॥ ग० ॥ १२ ॥ ताहरी उपर दीसे कंतनुं, मान तेणे घणुं माची रे ॥ तो तुं होजे रे ना थ वियोगिनी, वाच थई अम साचीरे ॥ ग० ॥ १३ ॥

मुनिनी वाणी रे सुणी जणकारे, गोखतले तव जोयुं रे ॥ तव तिहां दीठो रे मुनि कोपांतरु, शाप दीयं तो पलोयुं रे ॥ ग० ॥ १४ ॥ जूंरुं कीधुं रे में मुनि डुहव्यो, कीधी अवज्ञा नारीरे ॥ फल कडवां रे जो गवतां हूइ, हुं निगुणी कोइ नारी रे ॥ ग० ॥ १५ ॥ नाह वियोगणी होजो जे कह्युं,ते केम फरशे वाचारे ॥ वाचा खोटी खोटा जनतणी, ए तो मुनिजन साचा रे ॥ग०॥१६॥ जइ खमावुं रे मुज अपराधने, विनवुं विनति विशाल रे ॥ मोहनविजये रे जांखी हेजथी, सुंदर सत्तरमी ढाल रे॥ग०॥१७॥सर्व गाथा

॥ दोहा ॥

मेडीथी जे ऊतरी, आवी साधु समीप ॥ विधिशुं वांदीने कहे, अहो जवसायर द्वीप ॥ १ ॥ हुं जिन धर्मी श्राविका, मुनि उपरे अति प्रेम ॥ रोष तजो मुनिरायजी, शापो ठो मुज केम ॥ २ ॥ जीहांथी वहार जोइए, तिहांथी आवे धाड्य ॥ दीजे दोष ते केहने, जो फल खाशे वाड्य ॥ ३ ॥ ए संसार असारमें, यहीए जस आधार ॥ ते जो विरूऊं वांठशे, किम ऊगे दिनकार ॥ ४ ॥ हुं तमथी जेहवी करुं,

अण समजे अविचार ॥ पाछुं तेमहीज तुम्हे करो, तो शुं अंतरचार ॥ ५ ॥

॥ ढाल अढारमी ॥

हांजी वारा वजारमां, हांजी मुने जेहरु दे व लाय, तोरे संग चालुं रे, लालमल जोगीया ॥ ए देशी ॥ हांजी हूं निर्भागिणी मानवी, हांजी तमें छो गिरुआ साध,तोरी बलिहारी रे मुनिवर माहरा ॥ हांजी तुमने में कीधी आशातना, हांजी खमजो ते निराबाध ॥ तो० ॥ १ ॥ हांजी तुमे छो करुणा सायरु, हांजी कहुं बुं गोद विछाय, ॥ तो० ॥ हांजी शाप न दीजें मुजने, हांजी मुजथी केम सहाय ॥ तो० ॥ २ ॥ शत्रु प्रत्ये कोपे नहिं, हांजी बांधवथी न मुझाय ॥ हांजी शाप न दे तनु पीडतां, हांजी मुनिवर तेह कहाय ॥ तो० ॥ ३ ॥ हांजी चंदनने जो पीडीयें, तो दीये सामी सुवास ॥ तो० ॥ हांजी यंत्रमें पीलीयें शेलडी, हांजी तो पण द्ये रस खास ॥ तो० ॥ ४ ॥ हांजी रंभा खंभ जो छेदीयें, हांजी तो पण फल दे नूरि, ॥ तो० ॥ ए गीरुआइ साधुनी हांजी शास्त्रमें कही ससनूर ॥ तो० ॥ ५ ॥ हांजी लागे नहीं नाखी थकी, सूरज साहामी खेह ॥तो०

हांजी शी कटकी कीडी परें, हांजी राखो धर्मसनेह ॥ तो० ॥ ६ ॥ हांजी में तुमने वेद्या नहीं, हांजी लागो हृदये पीक ॥ तो० ॥ हांजी माहरा अवगुण साहमुं, हांजी न जूउं समता नीक ॥ तो० ॥ ७ ॥ हांजी वचन सूणीने एहवां, हांजी बोल्यो मुनिवर तेह ॥ तो० ॥ हांजी रे वत्से रे नावुके, हांजी सांजल्य वाणी एह ॥ तो० ॥ ८ ॥ हांजी साधु न दीये पीडियो, हांजी कोईने डुःसह शाप ॥ तो० ॥ हांजी तेहना जो मुखथी नीकले, हांजी साधुने नहीं तोय पाप ॥ तो० ॥ ए ॥ हांजी जे में नाख्युं विजोगणी, हांजी तुमने आणी रोष ॥ तो० ॥ हांजी ते तुज पूरव जन्मना, हांजी दीसे सवला दोष ॥ तो० ॥ १० ॥ हांजी ताहरी नावीयें मुजने, हांजी एहवो वोलाव्यो वोल ॥ तो० ॥ हांजी नहिं तो माहरा वक्रथी, हांजी नीसरे केम अतोल ॥ तो० ॥ ११ ॥ हांजी तेमाटे तुं ताहरा, हांजी नोगव्य पूरव कर्म ॥ तो० ॥ हांजी नोगव्य तुं ताहरां कर्यां, हांजी कुण एक कुण दीये शर्म ॥ तो० ॥ १२ ॥ हांजी नोगवीश तुं ताहरूं कर्युं, हांजी तेहमां कां दिलगीर ॥ तो० ॥ हांजी नोगवाये कृत्य पारकूं, हांजी तो

हजी तेहनी पीर ॥ तो० ॥ १३ ॥ हांजी लणीयें जेहवुं वाविए, हांजी तेहनो किहो विचार ॥ तो०॥ हांजी छूटे नहीं विण जोगव्यां, हांजी जिन कह्युं, सूत्र मझार ॥ तो० ॥ १४ ॥ हांजी धरियें धीरज चित्तमें, हांजी होशे ते परमानंद ॥ तो० ॥ हांजी एम कहीने तस गेहथी, हांजी विचर्या अन्यत्र मुनींद ॥ तो० ॥ १५ ॥ हांजी मुनिना पयरुह अनुसरी, हांजी नमया आवी गेह ॥ तो० ॥ हांजी ढाल कही ए अढारमी, हांजी मोहनविजयें एह १६

॥ दोहा ॥

एहवे नमया सुंदरी, चिंते चित्त मझार, हवे शुं थाशे आगले, हे हे सरजनहार ॥ १ ॥ में एहवुं शुं पूरवें, कीधुं कर्म अनंत ॥ जे अणचिंत्यां मूजने, शापी गयो मुनि संत ॥ २ ॥ जे जल जलणने उपशमे, ते जल दे गयो दाह ॥ कोपे नहीं क्यारें मुनि, तें कोप्यो निर्वाह ॥ ३ ॥ कां वेठी हती गोखडे, कां चांव्यां तंबोल, जे अनुकूल सहुतणो, ते मुनि थयो प्रतिकूल ॥ ४ ॥ कीस्युं ललाटे लिख्युं हशे, आगल भावी भाव ॥ जे जिन जाणे ते खरुं, न मटे सहज सभाव (पाठांतर, कहेवा हवे विलाव) ॥ ५ ॥

॥ ढाल उगणीशमी ॥

लीनो रे मन मोहन जिनसें ॥ ली० ॥ ए देशी ॥
जाणे रे कोइ मननी जाणे ॥ जा० ॥ हुं वेठी हती गोखें सुखमें, आव्या किहांथी ए मुनि टाणे ॥ जा० ॥ केणी सहीयें पण न जणाव्युं, जे मुनि उन्ना वे एण ठाणे ॥ जा० ॥ १ ॥ अमें तो न जाण्युं सहीउ नांखे, तें न जाण्युं तो कुण जाणे ॥ जा० ॥ कीधो तें अपराध सखीरी, नाहक नेलां शुं अमने ताणे ॥ जा० ॥ २ ॥ एहवां सजनीनां वयण सुणीने, बोली नमया आली उखाणे ॥ जा० ॥ क्यां तमने वहेनी उं कहुं बुं, ढींकतां दंरूं कां अप्रमाणें ॥ जा० ॥ ३ ॥ दाऊथा उपर खार न दीयो, आवो रीसाउ मां वेसो विठाणे ॥ जा० ॥ जोगवी लेइश कां तुमे बीहो, मा हरा लखीया लेख प्रमाणे ॥ जा० ॥ ४ ॥ एम कहे तां नयणेथी बूटे, आंसुधारा मेघ समाणे ॥ जा० ॥ जेम जेम मुनिनां वयण संन्नारे, तेम तेम डुःखडुं हियडामां आणे ॥ जा० ॥ ५ ॥ लोटे धरणी अब ला बाली, देइ सजनी बांह सराणे ॥ जा० ॥ शाप संन्नारे आकुल थाइ, नाके जिण विध आवे दाणे ॥ जा० ॥ ६ ॥ बाती बले ने ताती होवे, जेम कोइ

तीलमें घाती घाणे ॥ जा० ॥ म म कर एवडुं सही छे जांखे, लाज वडेरानी कां नाणे ॥ जा० ॥ ७ ॥ ताहरुं डुःख अमें सही नथी शकतां, आलि तुं अमने जे आवे लाणे ॥ जा० ॥ जावी ताहरी जली छे व हेनी, सुख छे वली सुख होशे विहाणे ॥ जा० ॥ ७ ॥ आव्यो एहवे महेश्वर पीयुडो, नारी डुःखणी देखी पूछे ॥ जा० ॥ दयिता डुःखिणी कांतुं दीसे, कहे मुऊने तुऊ डुःखडुं शुं छे ॥ जा० ॥ ए ॥ वात कही निज पीयुडा आगे, जाण्युं डुःखनुं कारण नाहें ॥ जा० ॥ दयिताने तत्र दीधो दिलासो, तेडी आणी मंदिर मांहे ॥ जा० ॥ १० ॥ ते दिनथी आ रंजी नमया, पालंती जिननी आणा रुडे ॥ जा० ॥ महासती सुखमें निगमे दीहा, पूरव कर्म कस्यां ते सूडे ॥ जा० ॥११॥ पोपे पात्र संतोपे मनमें, अविनय करतां हैयुं धूजे ॥ जा० ॥ जव जव संचित पाप निवारे, एहवा देव जणी नित पूजे ॥जा०॥ १२ ॥ पुण्य करे जिन पंथे चाले, तेहथी जव डुःख जाये विलयें ॥ जा० ॥ सुंदर उंगणीशमी ए जांखी, श्रोता सुणजो मोहनविजयें ॥ जा० ॥ १३ ॥ सर्व गाथा ॥

॥ दोहा ॥

एक दिन नमया नारीने, कहे महेश्वरदत्त ॥ पर द्वीपें जाशुं प्रिये, हवे धन हेतें कत्त ॥ १ ॥ तिहां जइ द्रव्य कमावशुं, आवशुं तुरत गेह ॥ साचवजो तुमें इहां रही, जैन धर्म ससनेह ॥ २ ॥ कोइ वातें मनथी तुमें, दुःखी न होजो नारि ॥ मिलशुं तुम ने हेज नणी, जो करशे किरतार ॥ ३ ॥ परदेशें जइए अमें, करशुं तिहां व्यापार ॥ तिहांथी बहु धन आणशुं, राखशुं इहां व्यवहार ॥ ४ ॥ ते माटे तरुणी तुमें, हसी दीयो आदेश ॥ जेम प्रवहण सज कीजीयें, लेइयें वस्तु अशेष ॥ ५ ॥ कंत वचन नि सुणी करी, बोली नमया बाल ॥ केम परदेशे पधारशो, अहो नाह सुविशाल ॥ ६ ॥

॥ ढाल वीशमी ॥

अम्मां मोरी अम्मां हे, अम्मां मोरी फीलण गइती तलाव हे ॥ हे मारुडे मेंवासी केरा ताणीया हे ॥ ए देशी ॥ पियुडा मोरा पियुडा रे, पीयुडा मोरा जो तुमें चालो परदेश हे ॥ हे सुजने नलावो केहने ठलवे हे ॥ पि० ॥ पि० ॥ काया जिहां तिहां बांह हे, हे तेम प्यारो ने प्यारी जोगवे हे ॥

पि० ॥ पि० ॥ १ ॥ हुं पण आवीश साथ हे, हे
वाटेने करेशुं वाला चाकरी ॥ पि० ॥ पि० ॥ पि० ॥
तुम विण केम गमे दीह हे, हे माछलडी होवी
ज्युं जल विण आतूर हे ॥ पि० ॥ पि० ॥ २ ॥ घडी
छ मास थाय जेह हे, हे नाह रहो जो अलगा न
यनथी हे ॥ पि० ॥ पि० ॥ तुम विरह न सहाय
हे, हे केतुं नांखुं करीने वेणथी हे ॥ पि० ॥ पि०॥
॥ ३ ॥ साधूए कह्युं छे जे मुजने एम हे, हे यश्श
वत्से कंतवियोगिणी ॥ पि० ॥ पि० ॥ तेहवा कथ
नथी केम हे, हे अलगी रहुं तमने अवगुणी हे ॥
पि० ॥ पि० ॥ ४ ॥ मुजने तुमचो आधार हे, हे
विगर आधारे इहां केम रहुं ॥ पि० ॥ पि० ॥ देखी
पेखीने काय हे, हे विरह वन्हिथी कहोने कां द
हुं ॥ पि० ॥ पि० ॥ ५ ॥ जो नहीं तेडो साथ हे, हे
कहेशे नहीं कोइ तुमने रूअडा॥पि०॥पि०॥नारी न रा
खवी दूर हे, हेजे कहीए छे पंथी सूअडा हे॥पि०॥पि०॥
मनडुं लेइ जशो संग हे, पींजरीउं ने रहेशे वाल
मजी इहां ॥ पि० ॥ पि० ॥ रढ करी रही सहु जोर
हे, हे तो तुमें मूकीने जाशो किहां ॥ पि० ॥ पि०
॥ ७ ॥ नाह कहे अहो नारी हे, हे काम दोहेलुं

अलगा पंथनुं ॥ पि० ॥ पि० ॥ कंते कही घणी वात हे, हे तोही न माने कांई अंगना ॥ पि० ॥ पि० ॥ ॥ ८ ॥ वनितानो आग्रह जाणी हे, हे संगें तेड्यानी कंते हा जणी ॥ पि० ॥ पि० ॥ नर्मदासुंदरी ताम हे, हे उल्लसित हुइ मनमांहे घणी ॥ पि० ॥ पि० ॥ ॥ ए ॥ तत्क्षण महेश्वरदत्तें हे, जरीने करीयाणुं प्रवहण सज कस्यां ॥ पि० ॥ पि ० ॥ पडहो वजायो पुर मांहि हे, हे वचन सुरंगां ए एहवां उचस्यां हे ॥ पि० ॥ पि० ॥ १०॥ शा महेश्वरदत्त हे, हे यवनद्वीपें काले चालशे हे ॥ पि० ॥ पि० ॥ जे कोइ आवणहार हे, हे होय ते वेगा होजो अनालसें, ॥ पि० पि० ॥ ॥ ११ ॥ पडह सुणीने लोक हे, हे यवनद्वीपें जावा संमुह्यां ॥ हूवो जाम प्रजात हे, हे लोक सायरनो तट घेरी रह्यां ॥ पि० पि० ॥ १२ ॥ एहवे महेश्वरदत्त हे, हे जिनवरपूजा करे कुसुम पांखडी ॥ सुंदर जोजन कीध हे, हे मात पितानी लेइ शीखडी ॥ पि० ॥ पि० ॥ १३ ॥ नर्मदासुंदरी साथ हे, हे महेश्वरदत्त आव्यो प्रवहण ठे जिहां ॥ पि० ॥ पि०॥ साथें सयण अनेक हे, हे आव्या संप्रेषणे नेहवशे तिहां ॥ पि०॥ पि० ॥ १४ ॥ पुरजन कहे मुख एम

हे, हे होजो मंगल माल हे, ॥ पि० पि० ॥ मोहन विजयेँ एम हे, हे पन्नणी सलुणी वीशमीढाल हे ॥ पि० ॥ पि० ॥ १५ ॥ सर्वगाथा ॥

॥ दोहा ॥

शीख लही साजन तणी, परिकर रूडा प्रसंग ॥ चाल्यो जलवट ऊपरे, महेश्वरदत्त सुरंग ॥ १ ॥ यान हकाख्यां जलधिमां, खेंच्या सढ ने दोर ॥ मागें मालमी मालम करे, कूवा थंन्ना जोर ॥ २ ॥ पख्यां पोत पयोधिमें, गति अति चंचल धीर ॥ ताण्यो जेम कोदंडथी, छुटे जेहवो तीर ॥ ३ ॥ नीरमय दीसे धरा, ऊपर तो आकाश ॥ गिरिवर तरुवर नगरवर, ते तो प्रवहण वास ॥ ४ ॥ अश्हो उप्पर कारणें, जल मध्ये पविसंत ॥ पारत्रिलोकी पतिवसु, पण नय नवि निवहंत ॥ ५ ॥ पेट अधम जगमां प्रसिद्ध, पेट वडो पतहीन ॥ जल थल गिरि उलंघवे, मुख जंपावे दीन ॥ ६ ॥

॥ ढाल एकवीशमी ॥

दिल लगा रे वादल वरणी ॥ ए देशी ॥ चाल्यां रे वाहण वाये हंकाख्यां, दोडे जेम मन चाले ॥ हवे जोजोरे कौतुक थाशे, सांजलतां शुं जाशे ॥ ह० ॥

कंत महेश्वर नमया नारी, बेठां गोखे जे महाले ॥ ह० ॥ १ ॥ आसो मासनी चांदनी छटकी, आव्यो चंद्र मथाले ॥ ह० ॥ दंपती वाहणमां मूखडुं काढी, जलचर खेल निहाले ॥ ह० ॥ २ ॥ वाय फको ले जलचर उछले, नौतन नौतन देखे ॥ ह० ॥ गाजे गुहिरे सादे दरीयो, घोष जलद किह लेखे ॥ ह० ॥ ३ ॥ उज्वल रजनी ने, उज्ज्वल चंदो, उज्ज्वल जलनिधि वेला ॥ ह० ॥ उज्ज्वल जलचर दंपती उज्ज्वल, सयल उज्ज्वल थयां भेलां ॥ ह० ॥ ४ ॥ दंपती कौतुक रसथी लुब्धां, बेठां ज्युं अभिनव वाडी ह० ॥ एहवे कोइएक पुरुषें वाहण, मांहे वीण वजाडी ॥ ह० ॥ ५ ॥ वाय राग केदारो मारु, पर जीउ मधुरे टीपे ॥ ह० ॥ जाणे बिंदु सुधाना बूटे, एक एक टीपे टीपे ॥ ह० ॥ ६ ॥ कोइक तेणे गति अभिनवी वाइ, नारदथी पण रूडी ॥ ह० ॥ मानव मूर्छांगत परें हुआं, एहमां वात न कूडी ॥ ह० ॥७॥ जेहवी वीण वजाडी तेहवे, गाये उंचे सादें॥ ह० ॥ वाहणमांहे जे रसिया वालम, मोह्या तेहने नादें॥ ह० ॥ ८ ॥ रूपें नादें कुण नवि मोहे, विषधर ते पण डोले ॥ ह० ॥ नादें तृणचर जेह छे मृगलां, आपे

प्राण अमोलें ॥ ह० ॥ ए ॥ नादें देव विमानने स्थंने, नाद अनोपम दीसे, वेधकनुं मन नादें वे धाये, नादे तन मन हींसे ॥ ह० ॥१०॥ जाणपणुं ज गमां ठे दोहिलुं विरलो जाणे कोइ ॥ह०॥ पण तस नादे प्रवहण लोको, चित्रपरें रह्या होइ ॥ ह०॥११॥ नाद ते पंचमो वेदज कहीये, जे जाणे ते जाणे ॥ ह० ॥ बोथां नादनी गति शुं बूजे, फोकट ते हठ ताणे ॥ ह० ॥ १२ ॥ तेहनां गीततणो जणकारो, पडीउं नमया कानें, ॥ ह० ॥ रंजी मनमें तस प्रीठी, मोही तेहने तानें ॥ ह० ॥ १३ ॥ नाह जणी कहे जलचर क्रीडा, जावा द्यो कह्युं मानो, ॥ ह० ॥ सां जलो वीण तणा जणकारा, कोइक वाये ठे ठानो ॥ ह० ॥ १४ ॥ कोइक चतुर शिरोमणी दीसे, वाह वा रूडुं वाये, ॥ह०॥ आपणने तो वगर पैसे, सांज लतां शुं जाये ॥ ह० ॥ १५ ॥ कंत प्रियाना कथनथी निसुणे, राग जणी एक तानें, ह० ॥ घूम्यो रागें जेम कोई घूमे, घायल शरने लागे, ॥ ह० ॥ १६ ॥ दाखवशे हवे नमयासुंदरी, नाह जणी चतुराई ॥ह०॥ एकवीशमी ढाल कीलंती, मोहनविजयें गाई ॥ ह० ॥ १७ ॥ सर्व गाथा.

॥ दोहा ॥

नमया लक्षण दक्षिणा, जाणे भेद अनंत ॥ चिंते मुऊचतुराइयें करुं सहेजो कंत ॥ १ ॥ कहे नमया निज नाहने, जे ए गावे गीत ॥ विण दीठे कहो तो कहुं, रूप रंग गति रीत ॥ २ ॥ कंत कहे कामिनी कहो, कांइ करो छो जोर ॥ चतुराई जे अंगमें, ते दाखो एकवार ॥३॥ बोली नमयासुंदरी, रे पीयु गायक एह ॥ श्यामरंग शोजा सुजग, कुब्जरूप छे देह ॥४॥ स्थूल हस्त गुदे मशक, रक्त नेत्र ससनेह ॥ तरुण वर्ष द्वात्रिंशनो, चिन्ह सयल छे एह ॥५॥ वचन सुणी वनिता तणां, ताम महेश्वरदत्त ॥ चित्त थकी चिंते इस्युं, थइ तरुणीथी विरत्त ॥ ६ ॥

॥ ढाल बावीशमी ॥

चंदन राखो छोजी राज, मीठडा मेवा छो ॥ ए देशी ॥ वाणी सुणी नमया तणीरे, शोचे महेश्वर दत्त ॥ सहितो ए गायकथकी, कांइ नारी छे संसक्त ॥१॥ माहरी मानिनी हो राज, सही तो धूतारी छे ॥ चंदन शी बोले छे राज पण विष तोलें छे, एहनी कहाणी छे राज, ते हवे जाणी छे ॥ ए आंकणी ॥ नहिं तो केम जाणे त्रिया रे, रुप रंगनी रीत ॥ ल

लना लुब्धाणी खरी, कांय करी कुब्जथी प्रीत ॥ मा० ॥ २ ॥ एहने तो हुं जाणतो रे, सुकुलीणी शिरदार ॥ पण ए कुलटा निवडी कांई, निःस्नेही अवतार ॥ मा० ॥ ३ ॥ महासती करी जाणतो रे, पण फेरव्युं सत एह ॥ जेम वखाणी खीचडी कांइ, दांते वलगी तेह ॥ मा० ॥ ४ ॥ थई गोधूम अम हियडे रे, पेठी प्रमदा सार ॥ पण मांडो थइ निसरी कांइ, ऐ ऐ सर्जनहार ॥ मा० ॥ ५ ॥ जो जो एहनी कपटता रे, तृणसम गणीयो मुज ॥ चोरी दृष्टि सहू तणी, कांइ गायकथी करी गुझ ॥ मा० ॥ ६ ॥ सगुणी पांखें नीगुणी जली रे, राखी हुती निजहित लाय ॥ लाख जतन करी राखीए, काइ जाति स्वभाव न जाय, मा० ॥ ७ ॥ धोइए दूधें कागडीरे, पण हंसली नवि थाय ॥ कुंदन खोळे रासभी कांई, न होय पयल गाय ॥ मा० ॥ ८ ॥ वेसाडीए सेजे शूनीरे, नहिं सुरकन्या होय ॥ मीठी न होये लींबडी कांइ, साकर सींचे कोय ॥ मा० ॥ ए ॥ ए नारीने शुं करुं रे, नाखुं पयोधिमांहि ॥ के करुं चूर्ण खडगथी कांइ, के परिहरियें क्यांहि ॥ मा० ॥ १० ॥ तेह सोनुं शुं कीजीए रे,जेहथी त्रूटें कान ॥ पेटें कांच

नती बुरी कांइ, धोंचे कोण नादान ॥ मा० ॥ ११ ॥ नारीने न जणावीयुं रे, निज हियडानुं अहेज ॥ प्रीत थयो गायन मिल्युं कांइ, दीठुं चिन्ह समेत ॥मा०॥ ॥१२॥ मनमें सही निश्चे थयुं रे, ए कुलटा शिरताज ॥ पण एहने न जणाववुं कांइ, सुष्टि जली वत्सराज, मा० ॥ १३ ॥ एहवे कूवा थंत्नथी रे, बोल्यो मालिम ताम ॥ राखो रे नियामको कांइ, प्रवहण एणे ठाम मा० ॥ १४ ॥ नांगर नाख्युं नीरमें रे, वाहण राख्यां द्वीप ॥ सढ दोरा संकेलजो कांई, आव्यो राक्षस द्वीप ॥ मा० ॥ १५ ॥ मीठलजल नरो प्रवहणे रे, सहू को थाउ सज्ज ॥ वचन सुणीनें ठीपीया कांई, पहोता महोदधि मज्झ ॥ मा० ॥ १६ ॥ तेहीज द्वीप तणे तटें रे, आव्यां बाल गोपाल ॥ मोहनविजयें निर्ममी कांइ, ए बावीशमी ढाल ॥ मा० ॥ १७ ॥ सर्व गाथा.

॥ दोहा ॥

राक्षस द्वीपतणे तटे, उत्तरीया सवि लोक ॥ ज लईंधणने कारणें, बूटा थोका थोक ॥ १ ॥ प्रवहण मांहे ततक्षण, नरीयुं निर्मल नीर ॥ समिधादिक पण संग्रह्यां, सज्ज थया वर वीर ॥ २ ॥ नोजनहे

तें परवस्या, लोक सयण तिण ठाम ॥ एह्वे ठल
साध्यो जलो, महेश्वरदत्तने ताम ॥ ३ ॥ कहे न
मयाने हे प्रिये, जश्यें वनह मकार ॥ तुरत फरी
ने आवशुं, होशे जमण तैयार ॥ ४ ॥ देखशुं कि
हां ए द्वीपने, फरी फरी नयणे तेह, जीव्याथी जो
युं जलूं, मान वचन धरी नेह ॥ ५ ॥ अति जोली
नमया सती, कपट न जाणे तास ॥ साथें थइ प्राणे
शने, आवी वनह निवास ॥ ६ ॥

॥ ढाल त्रेवीशमी ॥

देशी बिंदलीनी ॥ करथी कर ग्रही आडे, निज
त्रियने वनह देखाडे हो ॥ कंत महाकपटी ॥ रे प्र
मदा तुमें देखो, ए सायरतट सुविशेषो हो ॥ कं०
॥ १ ॥ ठे तरु केहवा उंचा, जेम वासगमणीना ए पे
खो पहोंचा हो ॥ कं० ॥ तरुथी वेलि वीटाणी, जे
म अहिंसा धर्मथी जाणी हो ॥ कं० ॥ २ ॥ ए सुर
तरु मन मोहे, जगतीशिरछत्र ज्युं सोहे हो ॥ कं० ॥
केहवुं ठे वन ए दीठुं, मुजने लाग्युं मीठुं हो ॥ कं०
॥ ३ ॥ चालो तमें आगल नारी, तीहां होशे कौतु
क जारी ॥ कं० ॥ दंपती आघां चाल्यां, वर कदली
वनमें माल्यां हो ॥ कं० ॥ ४ ॥ रंजा पवनें जोले,

तस दीरघदल बहु डोले हो ॥ कं० ॥ लुंबी फूंबी रहीथां, फल मोटां रस महमहियां हो ॥ कं० ॥५॥ महोटुं सर जले जे नरीयुं, जेम नानकडो ए दरीयो ॥ कं० ॥ शीतल नूमी जे सूहावे, पंखीपण रमवा आवे हो ॥ कं० ॥ ६ ॥ ते सरपाले बेठां, पियु प्र मदा बीहु एकेठां हो ॥ कं० ॥ पीयुडे मांडी माया, पण कांइए न जाणे जाया हो ॥ कं० ॥ ७ ॥ गूढ कपट कुण जाणे, ब्रह्मापण नविहुं पीछाणे हो ॥ कं० ॥ पछें प्रमदा पत्नणे, पियु पोढो जागीस हवे खांणे हो ॥ कं० ॥ ८ ॥ कहे पीयु पोढो नारी, इहां बेठो बुं धीरज धारी हो ॥ कं० ॥ पोढी नाह नरो सें, तेणे सुखनिद्रा ग्रही होंशे हो ॥ कं० ॥ ए ॥ व निता सूती जाणी, चिंते पियु कपटनो खाणी हो ॥ कं० ॥ जो हणुं एहने तेगें, तो पातक लागशे वेगें हो ॥ कं० ॥ १० ॥ एह सूती बे नारी, जो मुकुं तो होये सारी हो ॥ कं० ॥ एहने इहां परिहरवी, इहां ढील न कांइ करवी हो ॥ कं० ॥ ११ ॥ कर्म कहो केम चूके, जुर्ज प्रमदा प्रीतम मूके हो ॥ कं० ॥ जु जंगनी भ्रांते बाला, जूर्ज नाह तजे सुकुमाला हो ॥ कं० ॥ १२ ॥ वनिता मूकी वनमें, कांइ करुणा ना

वी मनमें हो ॥ कं० ॥ दोड्यो वांधी मूठी, फरी न करे नजर अपूठी हो ॥ कं० ॥ १३ ॥ नारी उवेखी नाखी, जेम घृतमांथी मांखी हो ॥ कं० ॥ प्रवहणे दोड्यो आवे, जूउं केहवी बुद्धि उपावे हो ॥ कं० ॥ १४ ॥ वोल्यो श्वासे भराणो, हलफलतो मांड खेदा णो हो ॥ कं० ॥ रे लोको सज थाउं, एणे प्रवहणे दोडी जाउं हो ॥ कं० ॥ १५ ॥ ताणो पट शुं विचा रो, जलनिधिमां पोत हंकारो हो ॥ कं० ॥ भोज न वहाणमां करशुं, पण भट्ट इहांथकी वलशुं हो ॥ कं० ॥ १६ ॥ ढील करो छो कांइ, सज थाउं वहे ला भाइ हो ॥ कं० ॥ एह त्रेवीशमी ढाल, कही मोहनविजयें रसाल हो ॥ कं० ॥ १७ ॥ सर्व गाथा.

॥ दोहा ॥

पडतो भ्रूजंतो थको, कहे महेश्वरदत्त ॥ जूउं ए आवे अछे, रजनीचर केइ क्रत्त ॥ १ ॥ दंतुर वली दीरघ अधर, कर आयुध विकराल ॥ केश विलूटे कांवरे, उं आवे ऊंघाल ॥ २ ॥ उं ऊडे रज अंवरे, चरणे धमके भूर ॥ आवे छे उतावलो, जेम पयो निधि पूर ॥ ३ ॥ शुं वल कीजें एहथी, एह पुलिंद प्रचंम ॥ मुफ वनिताने पापीए, कीधी खंडो खंड ॥

॥ ४ ॥ नाठो आव्यो तुम कन्हे, कहुं बुं न करो वा
र ॥ प्रवहणमां बेसी तुरत, जो वंछो हित सार
॥५॥ बीहिना लोक इस्युं सुणी,बेठा प्रवहणमांहि ॥
कपटी पण बेठो तुरत, सयण वच्चे सोत्साहि ॥ ६ ॥
वाहण चाल्यां जलधिमां, मूक्यो तेहज द्वीप ॥ ज
न वनिता दुःख वारवा, आव्या तास समीप ॥७॥

॥ ढाल चोवीशमी ॥

उग्रसेन नृपनी तनुजाशुं रंगें राज, तथा नरवर साजी॥एदेशी॥ते महेश्वरदत्त धूतारो राज, मांड्या फंद प्रचारारे॥ किहां गइ सा नारी रे ॥ ए आंकणी ॥ सयण आगल ते रुदन करतो, राज छोडे आंसु धारा रे ॥ कि० ॥ १ ॥ कूटे छाती धरणीए लोटे रा ज, मूखथी कहे प्रिया प्रिया रे ॥ कि० ॥ लीधी व निता कांइ जदाली राज, ए शुं कर्युं दइया रे ॥ कि० ॥ २ ॥ हमणां हुंती मुख आगल रुडी राज, एम ए किहां गइ नाशी ॥ कि० ॥ हमणां कां नथी बोलती मोसुं राज, थइ कां बेठी मेवासी रे ॥ कि० ॥ ३ ॥ तें शुं माहरो मोह न आण्यो राज, एका ए क गइ छोडी रे ॥ कि० ॥ हियडामां तुं खटकीश कांते राज, जिम रही त्राली उंडी रे ॥ कि० ॥४॥

एम दुःख कारीमुं मांकी वेगो राज, लोक सयल प्रति बूके रे ॥ कि० ॥ शुं दुःख एवडुं मनमां व होळो राज, शाह्या आगम सुके रे ॥ कि० ॥ ५ ॥ जेह गयो ते पाछो नावे, तो दुःख केहनुं कीजें रे ॥ कि० ॥ दैव थकी बल नांही कोइनुं, होवे तो व हेंची लीजें रे ॥ कि० ॥ ६ ॥ जिन चक्री हरिबल बलिराजा, केइ गया एणी वाटें रे ॥ कि० ॥ ते तु म दुखडुं कांइ न जाणे, तो शुं होवे उचाटे रे ॥ कि० ॥ ७ ॥ जाणता हूंता ज्ञान लहंता, एम अ जाण कां हूउं रे ॥ कि० ॥ मानो वचन अम फि कर निवारो, लेइ जल मूखडुं धूउं रे ॥ कि० ॥ ८ ॥ शीष सलामत पाघ घणेरी, जाणता नथी ए उ खाणो रे ॥ कि० ॥ वचन सुणीने निर्दयी राज, हुं उं सहेज सपराणो रे ॥ कि० ॥ ए ॥ कीधुं नोज न मनमांहे सुहातुं राज, मूकी नारी विसारी रे ॥ कि० ॥ जे निःस्नेही तस माया न होये राज, स स्नेही मायाधारी रे ॥ कि० ॥ १० ॥ जे विश्वासी घात उपावे राज, धिक धिक तास जमारो रे ॥ कि० ॥ इह परजव पापें पीडाये, ते सहु सहि अवधारो रे ॥ कि० ॥ ११ ॥ अनुक्रमें प्रवहण तरतां पहो

तां, यवन द्वीपने तीरें रे ॥ कि० ॥ उतरयां सहु ज
न सायर कंठे, आव्या नरपति नीरें रे ॥ कि० ॥
१२ ॥ महेश्वरदत्तें भेटणुं मेल्युं राज, नृप आगल
अग्निनवेरुं रे ॥ कि० ॥ रीझयो महिपति दीधो दि
लासो राज, करो व्यवसाय घणेरो रे ॥ कि० ॥१३॥
नृप आदेशे महेश तिवारें, पुरमां वेच्यां वसाणां रे ॥
कि० ॥ कीधा गांठे दाम डुणा राज, परखी परख
नाणां रे ॥ कि० ॥ १४ ॥ निगम्या केताएक दिवस
तीहां राज, प्रवहण वली सज कीधां रे ॥ कि० ॥
खेड्यां प्रवहण महोदधिमांहे, निजपुर साहामां
सीधां रे ॥ कि० ॥ १५ ॥ त्तर दरिये जव प्रवहण
आव्यां राज, पूरे पवनें प्रेरयां रे ॥ कि० ॥ दैवग
तेथी पोत सविहु, गिरि कुंडलमां घेरयां रे ॥ कि०
॥ १६ ॥ प्रवहण पर्वत परें स्थिर रहीयां, फरहरे पं
चरंग नेजा रे ॥ कि० ॥ ढाल चोवीशमी मोहनें
भांखी, सहु हुंसे निसूणी सहेजा रे ॥ कि० ॥१७॥

॥ दोहा ॥

वहाण रुंधाई रह्यां, न होय वायु प्रसंग ॥ ना
विक सवि झांखा थया, डीप्या सयल सलंग ॥ १ ॥
प्रवहण जन आतुर हुआं, उद्यम न चढ्यो हाथ ॥

चिंतातुर चिंते सहू, शुं करशुं जगनाथ ॥ २ ॥ नावथी उतस्यो एकलो, तेह महेश्वरदत्त ॥ ततक्षण गिरि उपरें चल्यो, कौतुक देखण कत्त ॥३॥ तिहां एक दीठुं देहरुं, उंची धज लहकंत ॥ दोय नगारां देहरे, अति आगल दीपंत ॥ ४ ॥ दीठां तेह महेश्वरें, लीधी गेडी हाथ ॥ नीशाणे दीधी तिहां, गरज्यो जूधर नाथ ॥ ५ ॥ ऊबक्यो निपट गुहाथकी, उड्यो विहंग जारंम ॥ पसस्यो पंखतणो पवन, अति उंचो ब्रह्मंड ॥ ६ ॥

॥ ढाल पचीशमी ॥

नंद सलूणा माहरा नंदना रे लो ॥ ए देशी ॥ जारंड पंखीना वायसूं रे लो, तेणें हींलोल्यो सायरु रे लो ॥ गिरिकुंडलथी नीकल्या रे लो, प्रवहण पंथ दिशा चल्यां रे लो ॥१॥ कहे जन वहाण तो वह्यां रे लो, शेठ तो गिरि उपरें रह्या रे लो ॥ कीहांथी ए मेलो होयशे रे लो, वाट एहनी घरे जोइशे रे लो ॥२॥ वाहणं पण नवि फरे फरी रे लो, कोश बहु रहियो गिरि रे लो ॥ अनुक्रमे प्रवहण जावीयां रे लो, रूपचंद्रपुर आवियां रे लो ॥३॥ खबर हूई रुद्रदत्तने रें लो, प्रवहण आव्यां पत्तने रे लो ॥ लोक स

हूने जणावीयुं रे लो, महेश्वरदत्त तो नावीयो रे लो ॥ ४ ॥ ऋषिदत्तादिक दुःख धरे रे लो, पुत्र न आव्यो घरे रे लो ॥ प्रवहणजन सवि धनीपणे रे लो, पोहता घर आप आपणें रे लो ॥ ५ ॥ हवे ते महेश्वरदत्तनी रे लो, वात कहुं अति नूतनी रे लो ॥ उतस्यो गिरिवरथी वहीरे लो, पण प्रवहण दीसे नहीं रे लो ॥ ६ ॥ जम्नो चिंतातुर होवतो रे लो, नयणे दश दिशि जोवतो रे लो ॥ एकलडो जीति धरे रे लो, आप उपाय घणा करे रे लो ॥ किहां घर किहां पुर किहां पिता रे लो, किहां माता बंधु किहां बंधुता रे लो ॥ ७ ॥ इहां हवे केह ने उलवे रे लो, कर्म कीधां ते जोगवे रे लो ॥ ८ ॥ जूख्यो तरष्यो एकलो रे लो, जटके जेम कोइ वेखलो रे लो ॥ वनफलमाटे घणुं जम्यो रे लो, सांज थइ रवि आथम्यो रे लो ॥ ए ॥ पेठो तरुने कोटरे रे लो, जूख्यो तिहां निद्रा करे रे लो ॥ एहवे ते तरु उपरें रे लो, देवदेवी वातो करे रे लो ॥ १० ॥ कंचन द्वीप विज्ञावीयें रे लो, कौतुक जोवा जाइए रे लो ॥ एम कही अंबर वृक्षने रे लो, ते उडाड्यो तत क्षणें रे लो ॥ ११ ॥ जरदरीये गया जेहवे रे लो, जा

ग्यो महेश्वरदत्त तेहवे रे लो॥आलस मोडवा ऊम
ह्यो रे लो, तेहवे सायरमां पड्यो रे लो ॥ १२ ॥ पड
तां जलथी आफल्यो रे लो, मगरें ततक्षण ते गल्यो
रे लो ॥ केतेक दिन मत्स्य ऊछल्यो रे लो, रूपचंद्र
पुरें नीकल्यो रे लो ॥ १३ ॥ धीवरे तास नीहालियो
रे लो, ततक्षण उदर विदारीयो रे लो ॥ तेमांहेथी
महेश्वरदत्त नीकल्यो रे लो, धीवरे नृप आगल ते ध
र्यो रे लो ॥ १४ ॥ उलख्यो लोकें एहवे रे लो, स
जा कर्यो नृपे तेहने रे लो ॥ आकंबरे घेर मोकल्यो
रे लो, कुटुंब मनोरथ त्यां फल्यो रे लो ॥ १५ ॥
ढाल कहि पचवीशमी रे लो, मोहनने मनमें गमी
रे लो ॥ हवे नमया सुंदरीतणी रे लो, वात कहुं
मीठी घणी रे लो ॥ १७ ॥ सर्व गाथा.

॥ दोहा ॥

जागी नमया सुंदरी, तिणी वनमें तेवार ॥ जोयुं
पण दीठो नहीं, पासे निज भरतार ॥ १ ॥ ऊठी
अंबर सज करी, दीधो पियुने साद ॥ पाछो कोई
बोल्यो नहीं, तव हूउ विषाद ॥ २ ॥ केम नवि
दीधो नाहले, प्रत्युत्तर मुझ हेव ॥ सही प्रछन्नरह्यो
हशे, छे हांसीनी टेव ॥ ३ ॥ नमया ऊंच स्वरें करी

बोली वनमां एम ॥ छाना जे रह्या छो छूपी, ढूंढी का ढीश तेम ॥ ४ ॥ एम कही कदलीवनविषे, पेठी नमया नारी ॥ आलें कहे में दीठडा, छे छन्ना नी धीर ॥ ५ ॥ कपट न जाण्युं कंतनुं, बोली नमया नाम ॥ केहवुं ए कंतारमें, करी गयो छे काम ॥ ५ ॥

॥ ढाल छवीशमी ॥

चंदलीया धूतारडा रे ॥ ए देशी ॥ नाहलीया निःस्नेही एम कां छूपी रह्यो रे, नारीयें धीर न धराय रे ॥ रामतनी वेलाए रामत कीजीए रे, विण अवसर केम थाय रे ॥ ना० ॥ १ ॥ अबलानी धीर जनुं शुं जूउं पारखुं रे, अबला बल कुण मात्र रे ॥ आवोने वालमीया तुमची वाटडी रे, जोतां हशे संयात्र रे ॥ ना० ॥ २ ॥ हांसीथी वीखासी प्रीत मजी हूवे रे, मानो प्राण आधार रे ॥ इण वनमें हांसीनो वेला शी अछे रे, हांसी एहवी निवार रे ॥ ना० ॥ ३ ॥ एम करतां तिहां पीयुडो केमही बोल्यो नहींरे, चिंते नमया नारी रे ॥ सहीतो वन मांहें छेह देइ गयो रे, ए कपटी भरतार रे॥ना०॥४ वालमना पाय जोती सायरने तटें रे, आवी जोवे जामरे ॥ एके कोइ नावडलूं तिहां दीठुं नहीं रे, थइ

चिंतातुर तास रे ॥ ना० ॥५॥ फिट फिट रे निःस्नेही निर्गुण नाहला रे, धिक धिक मुझ अवतार रे ॥ उतारी कूपमां मूकी दोरडी रे, कापे एहवो कवण गमार रे ॥ ना० ॥ ६ ॥ में तो शुं कांइ तुजने कहीए दूहव्यो रे,शुं तुझ उकल्युं एह रे॥ करुणा ए शुं नावी तुझ हियडे रे, एह शो कारिमो नेह रे ॥ ना० ॥७ ॥ वदीए छे तुझ छाती वज्र सरीखडीरे, दोड्यो जे घरणी मूकीरे ॥ परिहरतां केम चाल्युं मनडुं ताह रुंरे, दीठी शी मुझमां चूक रे ॥ ना० ॥ ८ ॥ नेहड लो न शक्यो नाहलीया नीवाहिने रे, दीधो अचिं त्यो छेह रे ॥ रे रे किम विधाता हाथे घडे रे, ए हवा नर निःस्नेह रे ॥ ना० ॥ ए ॥ एहवी जो न करे तो तारीरे, उंची कला नवि थाय रे ॥ तुं पण दीसे छे निर्दय हियडे रे, एहवुं तुझ न सुहाय रे ॥ ना० ॥१०॥ जांखुं हुं कर जोडी दैवमें ताहरो,केहो उंलव्यो आस रे॥मुझने जे तें मेल्यो एहवो नाहलो रे, ए तुझने शाबासरे ॥ ना० ॥११॥ धुरथी जो वालसीया कूड हुं जाणती रे, तो कांइ नावत साथ रे ॥ रेहती हुं मंदिरमें दुःख नवि देखती, नित्य पूजत जगना थ रे॥ना०॥१२॥ पेहलां तो जल पीधुं पछे घर पूछीयुं

रे, हुवुं जेवुं लखीयुं ललाट रे ॥ मुनिवरनुं जे भाख्युं तेह खरुं थयुं रे, जल वही आव्युं वाट रे ॥ ना० ॥ १३ ॥ दैवे जो पांखडली दीधी होत जो रे, तो जइ मलती कंत रे ॥ केम जइने मलीयें आडो सायरु रे, सायरु तेम तदंत रे ॥ ना० ॥ १४ ॥ पियुडाने उलूंडी आवे मनमें रे, नारी निगमे केम दीह रे ॥ उपाडी नाखी विरहपयोधिमां रे, मीठुं बोलतो केम जीह रे ॥ ना० ॥ १५ ॥ थानारुं ए लख्युं एहवुं भाग्यमां रे, वालिम ताहरो विजोगरे ॥ इहां कोइ कोइनो वांक कोइ नहीं रे, पूर्व कर्मनो भोग रे ॥ ना० ॥ १६ ॥ जंगलमें पण मंगलमाला होयशे रे, शील थकी सुविशाल रे ॥ पन्नणी ए मनमानी छवीशमी रे, मोहनविजयें रसाल रे ॥ना०॥१७॥ सर्व गाथा ॥

॥ दोहा ॥

नमया छेह देइ गयो, नाह महेसरदत्त ॥ अबला भूरे एकली, सायर तट संसत्त ॥ १ ॥ विरह म होजो केहने, विरह डुस्सह दीठ ॥ धरणी पण शत खंड हुवे, जल विरहे उकिठ ॥ २ ॥ वल्लह विरह अथाह जल, थाह न लझे कोय ॥ कां न हुवुं ताहरुं मिलण, जंगल भेटण होय ॥ ३ ॥ जिहां विरहानल प

रजले, तिहां नर केहो नूर ॥ दधे दावानल जिहां, तिहां केम होय अंकूर ॥ ४ ॥ मानव कवण सही श के, विरह भुयंगम कल्ल ॥ जाली ठंडी नीकले, पण न लहुं विरहासल्ल ॥ ५ ॥ विरह वज्र वंचे कवण, विरह दुःख न सहाय ॥ डाख लतायी वीछडे, तेम तेम डुर्बल थाय ॥ ६ ॥

॥ ढाल सत्यावीशमी ॥

शुक देव कहे रे उपाय, तुमें सांजलो परीक्त राय ॥ ए देशी ॥ हवे नमया सुंदरी नार, मूके नयणथी आंसूधार ॥ पडी शोचना सरित मजार, विरहें थइ व्याकुली रे ॥ कुण जाणे पराइ पीर ॥ जस वीचे ते सहेज शरीर, विरहीनो विरह गहीर॥ वि० ॥ १ ॥ फिरे वनमां मृगली जेम, जिहां विरह तिहां धीरज केम ॥ जीहां प्रीत तिहां गति एम ॥ वि० ॥ २ ॥ करी प्रीति निवाहे कोय, करी एकं गो ताणे लोय॥ पछी तेहनी एह गति होय ॥वि०॥ ॥ ३ ॥ एकंगो पतंगने नेह, थई रसीयो ऊंपावे देह ॥ पण दीपक न गणे तेह ॥ वि० ॥ ४ ॥ करी प्रीत निवाहे कोय, तेतो विरलो कोइक होय ॥ तस पीजें पयतल धोय ॥ वि० ॥ ५ ॥ जे उत्तम जननी

प्रीति, तेहनी तो जगमांय प्रतीति, खलनी तो वि परीत रीति ॥ वि० ॥ ६ ॥ दे एम ठेह करी विश्वा स, वह्यो नार जननीयें तास ॥ ते तो एमही उदरे दशमास ॥ वि० ॥ ७ ॥ एम रटती फीरे वनमांही, तास संग सखी नहि पाहि ॥ पडतां रहे वृक्ष संबा हि ॥ वि०॥ ८ ॥ कहे हृदयने रे चंड, कांइ न होय विरहे शतखंड ॥ केम वहीश तुं दुःख करंरू ॥ वि०॥ ए ॥ अयि प्राण कहुं हुं तुम्म, नहिं वालम निकट निस्सम्म ॥ कहेवाशो केहना इम्म ॥ वि० ॥ १० ॥ कांई सरजी एणे संसार, निर्भागिणी एहवी नारि ॥ जे ह तजी एम भरतार ॥ वि० ॥ ११ ॥ रे धरणी न दे कां माग, पियुविरह वाई गयो खाग ॥ जूठे कपटी ए लाध्यो शो लाग ॥ वि० ॥ १२ ॥ ए वनमां कव ण आधार, पीयर केइ कोष हजार ॥ गति केइ करि श किरतार ॥ वि० ॥ १३ ॥ पुरुषें पण नाण्यो प्रेम, गयो वालिम मूकी एम ॥ तस रूंधी न राख्यो केम ॥ वि० ॥ १४ ॥ अइ वैरण निंद दुरंत, जेणे राख्यो ऊंलवी कंत ॥ एम कही नमया विलपंत ॥ वि० ॥ १५ ॥ पूरवे में कीधां पाप, होशे दीधा कोइने शा प ॥ तेह प्रकट्या आपो आप ॥ वि० ॥ १६ ॥ दीधा

होशे आले दोष, पीधां होशे आलें कोश ॥ तो जो गवतां केहो शोष ॥ वि० ॥ १७ ॥ कस्या हशे कान नदाह, मृग मास्या हशे फंदमांह, विल पूस्या हो शे नीरप्रवाह ॥ वि० ॥ १८ ॥ कस्या बालक मात विगोह, वेच्यां होशे आयुध लोह, कस्या होशे सा धु कोह ॥ वि०॥ १९ ॥ सूची अणीये अनंता जीव, कस्या चूरण कंद दहेव ॥ कीधा होशे आहार सदै व ॥ वि० ॥ २० ॥ गो कन्या जूमि अलीक, होशे बोल्यां नवातरे ठीक ॥ फल तेहनां एह नजीक वि० ॥ २१ ॥ करी उद्यम करुं धनजाल, थई वेगो हुईश रखवाल ॥ लीधुं होश्ये में ते उदाल ॥वि०॥२२॥ वावस्यां होशे अणगल नीर,ग्रही घाल्या पंजर की र ॥ रंग्यां होशे रातां हीर ॥ वि०॥ २३ धरणीनुं वि दाख्युं पेट, शरसंधि रमीयां खेट॥कस्यां शातनपातन पेट ॥ वि० ॥ २४ ॥ परदारा संगति कीध, रस रंजी वारुणी पीध ॥ सेव्यां होशे व्यसन प्रसिद्ध ॥ वि० ॥ २५ ॥ तिथिपर्व जाणी कस्यां जंग, करी होशे कें ली अनंग ॥ वली मिथ्या वादि प्रसंग ॥ वि०॥२६॥ जिनमतथी कस्यो विपवाद, गुरुजनना कस्या अप वाद ॥ हूर्ड होशे संतविपाद ॥ वि० ॥ २७ ॥ एम

निंदे पुरात्तन कर्म, दृढ धारे जिनवरधर्म ॥ लहियें जे हथी संपत्ति शर्म ॥ वि० ॥ २८ ॥ ए सत्यावीशमी ढाल, कही मोहनविजयें विशाल ॥ कहुं आगल वात रसाल ॥ वि० ॥ २९ ॥ सर्व गाथा ॥

॥ दोहा ॥

चार प्रहर दिन वन भमी, पियु विण विण साहित्य ॥ महासती डुःख देखीने, आथमियो आदित्य ॥१॥ थई रजनी उदयो शशी, विहंग करे विश्राम ॥ पसरी दशदिश चंद्रिका, उज्ज्वल शीतल दाम ॥ २ ॥ लता गुब्बमांहे वसी, नमया सुंदरी ताम ॥ नयणे नावे नींदडी, मध्यरयणी थइ जाम ॥३॥ पियुविरहे तलपे घणुं, जलविण जेहवुं मीन ॥ जिम जिम नेही सांभरे, तेम तेम जंपे दीन ॥४॥ रे रे चंद कलंकीया, लाज न आवे तुझ ॥ अबला जाणी एकली, शुं संतापे मुझ ॥ ५ ॥ जो पीयुमेलो तुं करे, तो तुझमानुं पाड ॥ नित देउं आशीष तुज, करी राखुं मनवाड ॥ ६ ॥

॥ ढाल अठ्यावीशमी ॥

गोकुल गामने गोंदरे रे, आ शी लूंटा लूंट मारा वाहला रे ॥ ए देशी ॥ एकलडी सायरतटें

रे, नमया माळम रात ॥ मारा वाला रे, इंडुनें दीये ठंलंजडा रे, मीठडी मीठडी वात ॥ मा० ॥ ॥ १ ॥ चांदलिया धूतारडारे, निर्दय निठोर कठोर मा० ॥ विरहीया विरह जगाडतो रे, चंचल चित्तडा चोर ॥ मा० ॥ चां० ॥ २ ॥ लोक कहे तुजमें सुधा रे, ते तो मुधा में दीठ ॥ मा० ॥ जाणुं हुं हुं मुज जाणतो रे, तुजमां छे गरल गरिष्ठ ॥ मा० ॥चां०॥ ॥ ३ ॥ सायर पुत्र तो तुं नहीं रे, तुं वडवानलनी जाति ॥ मा० ॥ ताहरुं नाम दोषाकरु रे, तेहज साची विख्यात ॥ मा० ॥ चां० ॥ ४ ॥ हियडे तुं रखे फूलतो रे, जे मुज माने छे ईश ॥ मा० ॥ अछुं विष पीयुषने तज्युं रे, शंकर तो छे वालिश ॥ मा० ॥ चां० ॥ ५ ॥ ताहरेज भाग्यें एं राहुने रे, दैवें न दीधुं पेट ॥ मा० ॥ नहीं तो होत तुं पाधरो रे, एम दुःख देत न नेट ॥ मा० ॥ चां० ॥ ६ ॥ क्यारे कदीय तुं उगमे रे, दिनयर केरी सेज ॥ मा० ॥ जाय छे किहां माटीपणुं रे, कां नथी करतो तेज ॥ मा० ॥ चां० ॥ ७ ॥ एहवो जोरावर जो अछे रे, रवि शशि संगम रात ॥ मा० ॥ त्यारे कां नथी ऊगतो रे, जाणी में ताहरी वात ॥ मा० ॥ चां० ॥ ८ ॥

दीसे छे शीतल दीसतो रे, पण पावकथी डुरंत ॥
मा० ॥ मोळुं दही जेम पीवतां रे, जेम होय शीत
लदंत ॥ मा० ॥ चां० ॥ ए ॥ कांइक करुणता राखी
यें रे, कठिण न थइए मामूर ॥ मा० ॥ तो जग
दीश जलूं करे रे, साहिव हाजरा हजूर ॥ मा० ॥
चां०॥ १० ॥ कांइक कीजे संजारणुं रे, कांइक कीजे
उपकार ॥ मा० ॥ दीजे जइने उलंजडो रे, जिहां
होय मुऊ जरतार ॥ मा० ॥ चां० ॥ ११ ॥ जूंडा
तुं अंबर संचरे रे, तुजने शी लागे वार ॥ मा० ॥
नाह कठोर मेहली गयोरे, जो तुं नयण उघाड ॥
मा० ॥ चां० ॥ १२ ॥ जे कोय वेरी करे नहीं रे,
तेम करी नाठो कंत ॥ मा० ॥ जो तुं मेलावो मे
लवे रे, तुं मुऊ वीर महंत ॥ मा० ॥ चां० ॥ १३ ॥
एम विलपे ते व्याकुली रे, तेहवे विहाणी रातरे ॥
मा० ॥ चंद बूप्यो रवि ऊगम्यो रे, सुंदर हूउं प्रजा
त ॥ मा० ॥ चां० ॥ १४ ॥ वली गुफाथी नीकली रे,
आवी महोदधि तीर ॥ मा० ॥ निसासो जरती थ
कीरे, त्यां कुण जाणे पीर ॥ मा० ॥ चां० ॥ १५ ॥
पियु पियु करी नमया रडे रे, नाह मलो एक वार
॥ मा० ॥ वली चित्तडाथी चिंतवे रे, किहां मले व

नह मझार ॥ मा० ॥ चां० ॥ १६ ॥ जेह हाथेथी महेली गयो रे, त्रेवडी हुंसांतुंस ॥ मा० ॥ ते पियु केम आवी मले रे, म करय मुधा मनहुंस ॥ मा०॥ चां० ॥ १७ ॥ डुखडुं इहां कोण सांन्नले रे, रोये न लान्ने राज ॥ मा० ॥ मोह तणे नाणीर्ज रे, श्यो ठे तेहथी काज ॥ मा० ॥ चां० ॥ १८ ॥ जीहां ती हां शील सखाइर्ज रे, शीलथी मंगलमाल ॥ मा०॥ मोहनविजयें न्नली कही रे, अव्यावीशमी ढाल ॥ मा० ॥ चां० ॥ १९ ॥ सर्व गाथा.

॥ दोहा ॥

हवे तो नमया सुंदरी, मनमां धीरय दिऊ ॥ हवणां मलशे वालमो, प्रेम विलुरू प्रसिऊ ॥ १ ॥ जे ते कम्म उवचियो, तेहना न्नोगव्य न्नोग ॥ ठे गति ए संसारनी, क्षण वियोग क्षण योग ॥ २ ॥ न्नोगव्य तुं ताहरां कस्यां, कां तुं धरे विषाद ॥ जे जेहवुं फल वावियें, तेहवो तास सवाद ॥ ३ ॥ जो तें वावी कोदरी, शाल तुं केम लणेश ॥ पामीश क्रमल किहां थकी, पन्नर जो तुं खणेश ॥ ४ ॥ मुझने मुनियें कह्युं हतुं, कंत विठोहो जेह ॥ पूरव कर्म तणे वशे, उदये आव्यो तेह ॥ ५॥ प्रेम करी पलटे

नहीं, ते विरलो संसार ॥ पण इहां प्रेम किशो करे, जीहां कृतकर्म प्रसार ॥ ६ ॥

॥ ढाल ओगणत्रीशमी ॥

कोई आण मेलावे साजनां ॥ ए देशी ॥ हो उठी नमया सुंदरी, सायर तटथी एह हो ॥ आवी कदली वन्नमां, दीठुं सरोवर तेह हो ॥ १ ॥ शील सखाइ होइशे, एहने वनह मझार हो ॥ मलशे वाहलां मानवी, होशे जयजयकार हो ॥ शी० ॥ २ ॥ बेठी सरोवरने तटे, हियडे खटके शाल हो ॥ इहां पर हरीगयो पियुडो, आण्युं कांइ न वाल हो ॥ शी० ॥ ३ ॥ एह कदलीना गेहमां, रहेता लागे बीक हो ॥ उपहेली गिरिकंदरी, दीसे छे नजीक हो ॥ शी० ॥ ४ ॥ तजी सरवर ग्रही कंदरा, पेसी लीधो विश्राम हो ॥ निर्मल जलें झरी नानडी, मुख पखाळ्युं ताम हो ॥ शी० ॥ ५ ॥ जे वनफल भूंई पड्यां, ते लेइ कीध आहार हो ॥ पवित्रपणे शुद्ध चित्तथी, ध्यान धरे नवकार हो ॥ शी० ॥ ६ ॥ एहज मंत्र प्रभावथी, अहि थयो फूलनी माल हो ॥ कुष्ट गयो जपतां थकां, पाम्यो सुख श्रीपाल हो ॥ शी० ॥ ७ ॥ शिवकुमारें ए मंत्रथी, जटिलनो पुरिसो कीध हो ॥ जिनदासें

महावनथी, वीजपूरक फल लीध हो ॥ शी० ॥ ८ ॥ पास्यां चिह्नने जीह्लडी, मंत्रथी सुरना जोग हो ॥ गगनें उडती कोसली, एहज मंत्रने योग हो ॥ शी० ॥ ए ॥ हवे ते नमया नारीने, पीयु विण दीरघ दीह हो ॥ वरस जीसी थाये घडी, उपनी एहवी एह हो ॥ शी० ॥ १० ॥ निशि वासर नेही विना, होवे अ ति प्रलंब हो ॥ पूजूं जिन जेम सांजले, इहां कोइ जो लाने विंब हो ॥ शी० ॥ ११ ॥ गिरिवरमें नम था जमे, घणीए कीधी तलास हो ॥ तोही पण जिन राजनी, मूरत न मली तास हो ॥ शी० ॥ १२ ॥ फि रि पाठी गइ कंदरा, माटी जल लेइ हाथ हो ॥ मन मानीतो तेहनो, निपायो जगनाथ हो ॥ माटी त णो निपजावियो, नानकडो प्रासाद हो ॥ तेहमां प्रजु पधराविया, गाती सुकंठें नाद हो ॥शी०॥१३॥ स्थाप्युं नाम युगादिनुं, हरखी घणुं मनमांह हो ॥ वनफल वनमां फूलडां, ढोके नित्य सोत्साह हो ॥ शी० ॥ १४ ॥ जावें जावे जावना, कहे हो जिन अनु कूल हो ॥ माहरा नाह तणी परें, रखे होता प्रतिकूल हो ॥ शी० ॥ १५ ॥ जो ठे करुणा ताहरी, तो ठे मं गल माल हो ॥ मोहनविजयें जली कही, ठगण

त्रीशमी ढाल हो ॥ शी० ॥ १६ ॥ सर्व गाथा ॥

॥ दोहा ॥

वीतरागने विनवे, देव शिरोमणि देव ॥ ए वनमां पामूं किहां, तुम पद पंकज सेव ॥ १ ॥ मीठी कूई कर चढी, खारा दरीया मद्य ॥ ए वेलाए तुं मळ्यो, परम सनेही मुद्य ॥ २ ॥ मात पिता बांधव स्वसा, ससरो सासू कंत ॥ दुःखमांहि होय वेगलां, एक तुं सखाइ जगवंत ॥ ३ ॥ तुं करुणानिधि तुं विबुध,तु ज गुण अपरंपार ॥ जव सायरमां बूवतां, तुज पद पद्म आधार ॥ ४ ॥ एम जन्म सुकियारथो, करती नमया नित्य ॥ जूथी लही वनफल जमे, धरती ता पस वृत्ति ॥५॥ वस्त्र तणी बांधी धजा, दरी उर्द्ध वहु वान ॥ काननमें नमयासुंदरी, एम करे गुजरान ॥६॥

॥ ढाल त्रीशमी ॥

देशी वीठीयानी ॥ हांरे लाल नमया सुंदरीनो पिता, निज नयरथी चढीयो जहाजरे लाल ॥ सिंहल द्वीपनी साहमो, सुंदर व्यवसायनें काज रे लाल ॥१॥ हुं बलिहारी रे शीलनी, नहि शीलसमो जग कोय रे लाल ॥ जेह थकी वनमें इहां, मनमेळु मेलो होय रे लाल ॥ हुं० ॥ २ ॥ हां० ॥ प्रवहण तरतां नीरमें,

ते पाम्यां निशाचर द्वीप रे लाल ॥ नमया तातें रे पोतने, सायर तटे राख्यां द्वीप रे लाल ॥ हुं० ॥ ३ ॥ हां० ॥ प्रवहण हुंती उतस्थां, जल इंधण लेवा लोक रे लाल ॥ सायरतटे नमया पिता, बेठो तिहां चिंटाइ लोक रे लाल ॥ हुं० ॥ ४ ॥ हां० ॥ दीठुं क दलीवन तिहां, अलगाथी नयणे तेण रे लाल ॥ जोवा कारण संचस्यो, एकलो न जाणे कोण रे लाल ॥हुं०॥५॥हां०॥ दीठां तेणें धरणी तलें, वनितानां पग लां गोण रे लाल ॥ चिंते इहां ए वनमां, रहेती हशे नारी कोण रे लाल ॥ हुं० ॥६॥ हां० ॥ दीसे ठे पग लां तुरतनां, हमणां गइ दीसे ठे नारी रे लाल ॥ होशे कोइक वियोगिणी, अथवा किन्नरी अनुहार रे लाल ॥ हुं० ॥७॥हां०॥ एम चिंती ऊतावलो, चाल्यो नमयानो तात रे लाल ॥ कदलीवन मूकी करी, गयो डुंगर निकट विख्यात रे लाल ॥हुं०॥८॥हां०॥ तिहां एक तेणे दीठी धजा, फरहरती पवन प्रकाश रे लाल ॥ जाणुं सही इहां कोइनो, रहेवानो दीसे ठे वासरे लाल ॥हुं०॥ए॥हां०॥ विण जाण्ये कें म कोइना, मंदिरमांहे दीजे पाय रे लाल ॥ ज्ञा ध्यानी एह रीत ठे, विणतेडे कीमही न जवाय रे

लाल ॥ हुं० ॥ १० ॥ हां० ॥ संकोचाईने रह्यो, ए कलो कंदराबार रे लाल ॥ कान देइने रे सांभले, तिहां वयणतणा जणकार रे लाल ॥ हुं० ॥ ११ ॥ हां० ॥ कोइक भूल्युं छे मानवी, इहां वसियुं दीसे छे तेह रे लाल ॥ लोकदिशा जमी ए ध्वजा, फर हरती कंदरा गेह रे लाल ॥ हुं० ॥ १२ ॥ हां० ॥ कान देइ वली सांभल्युं, नर किंवा नारी एह रे लाल ॥ हलुवे जेम तिहां सांभले, तेम साद जेल खीयो तेह रे लाल ॥ हुं० ॥ १३ ॥ हां० ॥ मूझ पुत्री जे नर्मदा, ते सरखो दीसे छे साद रे लाल ॥ ते केम संभवियें इहां, एम मनथी करे विसंवाद रे लाल ॥ १४ ॥ हां० ॥ होय किंवा नहिं होय, मुझ पुत्री नमया एह रे लाल ॥ वीजी कुण माही असी, एम बोले मीठी जेह रे लाल ॥हुं०॥१५॥ हां०॥ पेठो कंदरीमांहे धसि, दीठी निज पुत्री नेण रे लाल ॥ तातें बोलावी बालिका, अति मीठे मनोहर वयण रे लाल ॥ हुं० ॥ १६ ॥ हां० ॥ नमया जो जो बोलशे, निज तातथी वेण रसालरे लाल ॥ रंग रली ए त्रीशमी कही मोहनविजयें ढालरे ॥ लाल ॥ हुं० ॥ १७ ॥ सर्वगाथा

॥ दोहा ॥

नमयाए दीठो पिता, हर्षित मनमां जोर ॥ धाराधर देखी जिस्यो, तांडव मांडे मोर ॥ १ ॥ क्षणेक करी आलोचना, ए सुहणुं के साच ॥ कीहांथी ए वनमें पिता, ए शो दीसे साच ॥ २ ॥ के कोई वनदेवता, प्रगट्यो गुफा मझार ॥ दीसंतो दीसे पिता, पण केम करुं जुहार ॥ ३ ॥ बोल्यो तात सुता प्रत्यें,रे वत्से सुण वात ॥ चित्तथी शी करे शोचना, हुं छुं ताहरो तात ॥ ४ ॥ शुं तुं उलखती नथी, हुं तुज जनक सहदेव ॥ ताहरो साद सुणी इहां, मिलवा आव्यो हेव ॥ निश्चय जाणी नर्मदा, ऊठी प्रणम्या पाय ॥ आलिंगीने जनक पण, मळ्यो हेज न समाय ॥ ६ ॥

॥ ढाल एकत्रीशमी ॥

तुम चरणे मेरो चित्त लीनो ॥ ए देशी ॥ नमया सुंदरी तातने कंठे, लागी छाती नराणी उत्कंठें ॥ प्रभु जे करे ते मानी लीजें ॥ नयन थकी झरे आंसु धार, जाणे त्रूटो मोती हार ॥ प्र० ॥ १ ॥ गदगद कंठथी बोली न शके, हियडुं दुःख ते केम करहि शके ॥ प्र० ॥ तव तेहने तातें बुचकारी, एवडुं

दुःख केम करे विचारी ॥ प्र० ॥ २ ॥ इण द्वीपें इण वनमें तुं केम छे, कहे मुजने जेहवुं जेम छे ॥ ॥प्र०॥ पासे नहीं कोइ संग सहेली, किहां गयो वा लम तुज महेली ॥ प्र० ॥ ३ ॥ में तुज उत्तमने परणाइ, तिहांथी तुं इहां किण विध आइ ॥ प्र० ॥ कहे तव नमया तातने वाणी, केती कहुं हुं कर्म क हाणी ॥ प्र० ॥ ४ ॥ जव हुं परणी पीयु गुण जोती, राखतो तव पीयु अंबर धोती ॥ प्र० ॥ ते इहां छेह देइ गयो वनमें, करुणा किमपि न आणी मनमें ॥ प्र० ॥ ५ ॥ में एम पीयुडानुं कूड न जाण्युं, जोले जा वें साचुं पिछाएयुं ॥ प्र० ॥ इहां एकलडी दिहडा गालुं, वनफलथी ए पिंडने पालुं ॥ प्र० ॥ ६ ॥ तमे शुं करो वली शुं करे पीयुडो, पूर्व कीधां जोगवे जीवडो ॥ प्र० ॥ जालमें जेह लख्युं ते लहीए, अंत गतनी केहने कहीए ॥ प्र० ॥ तुमे जाएयु हशे मा हरी बाला, परण्या पछे सुख लहेशे ते वाला ॥प्र०॥ पण जो माहरा वखतमें न लिखियो, वांक नहीं में कोइनो परखियो ॥ प्र० ॥ ७ ॥ तातें निसूणी पुत्री वाणी, सांजलतां तिहां छाती जराणी ॥ प्र० ॥ ए ए महारी पुत्री एवां, दुःख जोगवे छे वनमांहे

केवां ॥ प्र० ॥ ए ॥ में विण जाणे करी मूर्खाइ, जे एहवा कपटीने परणाइ ॥ प्र० ॥ एम कही हियडे लगाडी वाला, रखे डुःख धरती हवे गुणमाला ॥ प्र० ॥ १० ॥ नमयाने तव आणंद हूउं, डुखडाने तव दीधो हूउं ॥ प्र० ॥ मनमेलू मले एहवे टाणे, ते सुख विहु मन के जिन जाणे ॥ प्र० ॥ ११ ॥ टाढी लहेरी जेम सायर केरी, वुठा जलधर पवनें फेरी ॥ प्र० ॥ तेहथी अति टाढो वाहला मेलो, ते साचुं रखे जूठमें जेलो ॥ प्र० ॥ १२ ॥ तातजी तुमे इहां जिनवर जेटो, नव नव डुःखडां कीणेकमां मेटो ॥ प्र० ॥ तात कहे इहां जिनवर किहांथी, क हे पुत्री प्रगव्या ठे इहांथी ॥ प्र० ॥ १३ ॥ ततक्षण ते प्रतिमा दरसाइ, इंगुल तेलनो दीप वनाई ॥प्र०॥ चैत्यवंदन चित्त चोखे कीधूं, दरिसणपीयूष नयणे पीधूं ॥ प्र० ॥ १४ ॥ तारण तरण तुं जिन कहेवाये, स्वामी कीसी जो तुं प्रसन्न थायें ॥ प्र० ॥ स्वामी नि रंजन निपट नीरागी, तुम चरणथी अम प्रीतडी लागी ॥ प्र० ॥ १५ ॥ आप तस्या तिम अमने ता रो, तुं शिववनिता देवणहारो ॥ प्र० ॥ जगमांहे न हि कोइ तुम सम दाता, तुं जले जायो धन धन

तुम माता ॥ प्र० ॥ १६ ॥ नमया तातें जिनस्तुति कीधी, समकित सुखडी रूडी लीधी ॥ प्र० ॥ मोह नविजयें मन स्थिर राखी, ढाल जली एकत्रीशमी जांखी ॥ प्र० ॥ १७ ॥ सर्व गाथा ॥

॥ दोहा ॥

नमयातातें जिनस्तवन, कीधूं रूडी रीत ॥ पुत्रीने एवुं कहे, अंतरंग धरि प्रीत ॥ १ ॥ जो तुऊ पियुडे परहरी, एहवा वनह मऊार ॥ तुं ते उपरे प्रीतडी, नाणीश कोईवार ॥ २ ॥ आपणने चाहे घणुं, दाण दाण में सो वार ॥ आपण तेहने चाहीयें,मान्य सुता निर्धार ॥ ३ ॥ हाथ नमे जो कोइने, वहेंत नमे तो कोय ॥ दिलजर दिल ठे जिहां तिहां, एम जांखे सहु लोय ॥ ४ ॥ जावा दे जो ते गयो, म करिश फिकर लगार ॥ आव्य संघाते माहरे, ठोडी परो कंतार ॥ ५ ॥ सिंहल द्वीप यई पठे, पहोंचशुं आपणे गेह ॥ तिहां बेठी तुं पालजे, शील धर्म ससनेह ॥ ६ ॥ जो मेलो लीख्यो हशे, तो तुऊ मलशे कंत ॥ नहिं तो बेठी मंदिरें, जजजे जिन जगवंत ॥ ७ ॥

॥ ढाल बत्रीशमी ॥

आठ टकारो कंकण रे, नणदल ठणक रह्यो मो

री वांह ॥ कंकण मोल लीउं ॥ ए देशी ॥ तात व
चनथी नर्मदा रे, सूरिजन हर्षित थइ मनमांहि ॥
गोरडी गुणवंती, जेहने ठे शीयल सन्नाह ॥ गो० ॥
(जेहनेठे शील सहाय पाठांतरे) तात संघातें ते
संचरी रे ॥ सू० ॥ आवी प्रवहण ज्यांहि रे ॥ गो०
॥ जे०॥ १ ॥ परिहस्युं वन जिम तद नवें रे ॥सू०॥
उत्कट स्वर्गावास ॥ गो० ॥ वेठी तेह विछोहमें
रे ॥ सू० ॥ तात संघातें उल्लास ॥ गो० ॥ जे० ॥
॥ २ ॥ जोजन कीधां नावतां रे ॥सू०॥ पहेस्यो नौ
तन वेष ॥ गो० ॥ जो सन्माने ठोरडुं रे ॥ सू० ॥
तेहमां केहो विशेष ॥ गो० ॥ जे० ॥ ३ ॥ वेठां स
घलां मानवी रे ॥ सू० ॥ प्रवहणमांहे जे वार
॥ गो० ॥ मूक्यो पोत खलासीयें रे ॥ सू० ॥ महो
दधि मध्य ते वार ॥ गो० ॥ जे० ॥ ४ ॥ जेहवो वेग
उतावलो रे ॥ सू० ॥ त्रूटे तंती तार ॥ गो० ॥ अ
धिके वेगे तेहथी रे ॥ सू० ॥ प्रवहण करे रे प्रचार
॥ गो० ॥ जे० ॥ ५ ॥ सिंहलद्वीपें जातां थकां रे
॥ सू० ॥ पवन थयो प्रतिकूल ॥ गो० ॥ पवने प्रेर्यां
आवियां रे, अनुक्रमें बब्बर कूल ॥ गो० जे० ॥ ६ ॥
देखी बब्बर कूलने ॥ सू० ॥ ठीप्यां प्रवहण तुंग

॥ गो० ॥ फेरा सायरने तटें रे ॥ सू० ॥ ताण्या वर पंचरंग ॥ गो० ॥ जे० ॥ ३ ॥ सहित सुता नमया पिता रे ॥ सू० ॥ आव्यो फेरा मांह ॥ गो० ॥ बे सारी नमया जणी रे ॥ सू० ॥ एकांते सोत्साह ॥ गो० ॥ जे० ॥ ७ ॥ जोजन प्रमुख जलां कस्यां रे, नमयादिकें तेणी वार ॥ गो० ॥ प्रहर दिवस जब पाठलो रे ॥ सू० ॥ शोचे शाह तेवार ॥ गो० ॥ जे० ॥ ए ॥ नमयाने मूकी इहां रे ॥ सू० ॥ जेटुं बब्बर जूप ॥ गो० ॥ पुरमे वली रोजगारनुं रे ॥ सू० ॥ दीसे ठे केहवुं स्वरूप ॥ गो० ॥ ॥ जे० ॥ ॥ १० ॥ अंबर पहेस्यां सुंदर रे, पहेस्या नर शृंगार ॥ गो० ॥ लीधूं अमूलक जेटणुं रे ॥ सू० ॥ साथें सवि परिवार ॥ गो० ॥ जे० ॥ ११ ॥ पुत्रीने कहे पेखजो रे ॥ सू० ॥ पट मंडप मनुहार ॥ गो० ॥ आवीश हुं हमणां फरी रे ॥ सू० ॥ जाजंबु नयर मझार ॥ गो० ॥ जे० ॥ १२ ॥ एम कही नमयानो पिता रे ॥ सू० ॥ परिवस्यो परिकर साथ रे ॥गो०॥ एम पहोंतो दरबारमें रे ॥ सू० ॥ जिहां बेठो नृप नाथ ॥ गो०॥ जे०॥ १३ ॥ बत्रीश राजकुली सजी रे ॥ सू० ॥ वच्चे मकरध्वज राय ॥ गो० ॥ नमया तातें

पाधरा रे ॥ सू० ॥ प्रणम्या पुरपति पाय ॥ गो० जे० ॥ १४ ॥ परदेशी व्यापारियो रे ॥ सू० ॥ जाणी नृप दे मान ॥ गो० ॥ आदरथी ग्रह्युं भेटणुं रे ॥ सू० ॥ नृपें दीधां पान ॥ गो० ॥ जे० ॥१५॥ कुशला लाप परस्परें रे ॥ सू० ॥ पूछे आणी प्रेम ॥ गो० ॥ पुरमांहे व्यापारनी रे ॥ सू० ॥ मागी आणा तेम ॥ गो० ॥ जे० ॥ १६ ॥ प्रणमी नृप नमयापिता रे ॥ सू० ॥ आव्यो आपणे गाम ॥ गो० ॥ ढाल कही बत्रीशमी रे ॥ सू० ॥ मोहने एह अभिराम ॥ गो० ॥ जे० ॥ १७ ॥ सर्व गाथा.

॥ दोहा ॥

वेच्यां नमयाने पिता, करियाणां पुरमांहि ॥ दाम कस्या गांठें भला, परखी पारखमांहि ॥ १ ॥ पुरमांहे कीरति थई, नमया जनकनी जोर ॥ एहवो कोण अपत्य छे, जे होये गुण चोर ॥ २ ॥ सुपुरुष जिहां जाये तिहां, पामे आदर मान ॥ नागरवल्ली मान लहे, जाते तो छे पान ॥ ३ ॥ तृणचर नाभि थकी थई, मृगमदनी शी जाति ॥ पण जो गुण छे तेहमें, तो छे जग विख्याति ॥ ४ ॥ नमया तात निरंतरें, आवे नृप दरबार ॥ बब्बरमांहे दिन थया,

बहुला होज संसार ॥ ५ ॥ समया केरामां रहे, ता त करे संज्ञाल ॥ बालमने संज्ञारती, निगमे दिवस विशाल ॥ ६ ॥

॥ ढाल तेत्रीशमी ॥

सलूणी जोगण रूडी वे ॥ ए देशी ॥ बब्बर कूलमांहिं वसे ढे,हारिणी गणिका एक ॥ जेहथी पुरंदर अप्सरा,रही हारी तेहथी विवेक ॥ कर्मनी गति न्यारी ढे, अरे हां जूढे विचारी वे ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ हारिणी जन मन हारिणी साची, कारिणी मोह प्रपंच ॥ प्रगट कपटनी तेह सारिणी, वधारिणी प्रीति रोमंच ॥ क० ॥ २ ॥ मधुर वयण वली नयण अनोपम, सयण करे क्षणमांहि ॥ प्रगटी मयणतणी ज्ञली, ए तो रयणि उद्योत विनाहि ॥ क० ॥ ३ ॥ गणिका रयण तणी ढे कणिका, लावण्य अणिका समान ॥ अमृतनी ढे वेलडी, स्नेह यंत्रनी क्षणिका निदान ॥ क० ॥ ४ ॥ नारी नृत्य कारीयो हारी, एहवी अटारी तेह ॥ विषय कटारी विज्ञावरी, शील शूरने कंपावे तेह ॥ क० ॥५॥ कामि जनने मनमें सरखी, विषय जननी संसार ॥ एहवी गणिका रूयडी, जस हाथे घडी किरतार

॥ क० ॥ ६ ॥ वब्बर रायें तेहथी दीधी, ठत्र धारिनी सेव ॥ धरणीधव माने घणुं, एह विषयी जननी टेव ॥ क० ॥ ७ ॥ एक दिन नृप कहे ते गणिकाने, माग्य कांइक मुज पास ॥ तुज गुणें रीज्यो हुं घणो, हुं पूरुं ताहरी आश ॥ क० ॥ ८ ॥ गणिका कहे सुणो नयर नरेश्वर, जो ठे करुणा तुज ॥ तो उणती ठे केहनी, महाराज मंदिरें मूज ॥ क० ॥ ए ॥ पण एक मागुं पसाय तुमारो, सारो मोरुं काम ॥ जे सारथवाह आपणे, इहां घडवा आवे दाम ॥ क० ॥ १० ॥ तेह अठोत्तर सहस सोवनना, आपे मुज दीनार ॥ आवे मंदिर माहरे, सुख जोगवे जेह सार ॥ क० ॥ ११ ॥ ते मुज मंदिर जो नवि आवे, तो देवुं तस अपमान ॥ जो मुजने माग्युं दीयो, तो देउं एह दिवान ॥ क ॥ १२ ॥ नृप कहे जोली ए शुं मागे, जो मागे ते प्रमाण ॥ जे कह्युं ते लेजें सुखे, कुंण रंक अने कुंण राण ॥ क० ॥ १३ ॥ नृपना वयणथकी ते गणिका, आवे जे सारथवाह ॥ लेवे धन ते पासथी करे, केलि अनंत उत्साह ॥ क० ॥ १४ ॥ हारिणी गणिकायें आव्यो जाणी, नर्मदासुंदरी तात ॥ जे किरतारें जला क

स्या, तस ठानी केम रहे वात ॥ क० ॥ १५ ॥ ग णिका मिलवा आतुर हूइ, तेम वली धननो लोभ ॥ जो जो एह संसारमां, नथी दीसतो लोभनो थोभ ॥ क० ॥ १६ ॥ लोभ जूंभो ते गुहिर महोदधि, कोइक लाभे पार ॥ ढाल कही तेत्रीशमी, ए मो हनविजयें सार ॥ क० ॥ १७ ॥

॥ दोहा ॥

हवे ते गणिका हारिणी, आलोचे स्वयमेव ॥ चे टी गुण पेटी भली, ते तेटी ततखेव ॥ १ ॥ रे चेटी सायर तटें, पटकुल लाण्यो जेण ॥ तेहने जेम तेम भोलवी, मंदिर आणो तेण ॥ २ ॥ जो ते नाकारो कहे, तो तुं कहेजे एम ॥ अम मंदिर आव्या विना, रे नर जाइश केम ॥ ३ ॥ मुद्रा अष्टोत्तर सहस, हेमतणी अम देह ॥ अम स्वामिनी मळ्या पछी, जे जाणे ते करेह ॥ ४ ॥ चेटीने एम शीखवी, मूकी तेणें विख्यात ॥ ते पण आवी पाधरी, ज्यां छे न मयातात ॥५॥ करीप्रणाम ऊभी रही, दासी करे अ रदास॥ अहो सार्थ गणिका तिणें, मूकी छे तुम पास ॥६॥ जे दिन तुमने सांभळ्या, ते दिन हूंती तेह ॥ मिलवा मन तरसे घणुं, निपट बंधाणो नेह ॥ ७ ॥

॥ ढाल चोत्रीशमी ॥

ठेडो नांजी ॥ एदेशी ॥ नमया तात ते दासी वयणें, घणुं अघणुं ए खेदोणो, परदारानी संगति निसुणी, हियडे अति शरमाणो ॥१॥ अलगी रहेने हांरे कहेनी ठे तुं दासी, अ० ॥ हांरे शी मांडी कूडनी फांसी ॥ अ० ॥ हांरे तुं दिसती नथी विश्वासी अ० ॥ए आंकणी॥ अरे दूती किहां तुं हुंती, थइ धूती जे आवी ॥ जारे अदूती देइश जूती, चढशे नूति साची ॥ अ० ॥ २ ॥ अमें व्यवहारी किम परनारी, सेवुं जोय विचारी ॥ खारी विषथी विषय कटारी, मतवारी धूतारी ॥ अ० ॥ ३ ॥ अमें संतोषी हुं निज दारा, केम सेवुं परदारा ॥ नोगवतां निर्धारा सारा, एहनां फल ठे खारां ॥ अ० ॥ ४ ॥ पररामाना जे हने नामा, जन्म्या तेह निकामा ॥ मुख सामा जोई नवि पाम्या, धन्य जे एम तजे वामा ॥ अ० ॥ ५ ॥ अमें श्रावक आगम नावक, नावक मिथ्या अराति॥ परदारा पावकमां पगलां, देतां केम वहे गती ॥ अ० ॥ ६ ॥ दानवराय अटंका वंका, शूर पण धरता शंका ॥ दाशरथीयें देई डंका, लंका कीधी पंका ॥ ॥ ७ ॥ पदमोत्तर जस अविचल उत्तर, सायर उत्तर

आणो ॥ तेह निरुत्तर कीधो मुकुंदें, परत्रिय अयस अखाडो ॥ अ० ॥ ७ ॥ रे दासी तुं कुबुद्धिनी मासी, एम नकीजें हांसी ॥ आशा शी विशवासी जोली, कहीये वात विमासी ॥ अ० ॥ ए ॥ तुज ठकुराणी वेश गवाणी, अमे वाणियाणी जाया ॥ अमथी ए केम हुवे कमाणी, जाणी वादल छाया ॥ अ० ॥१०॥ नमया तातनी,निसुणी वाणी,अति विलखाणी चेटी ॥ चित्तथी जाण्युं कांहुं आवी, मायने पेटें बेटी ॥ अ० ॥ ११ ॥ कहे कर जोडी तहें निगोडी, कां नांखो ऊवखोडी ॥ छे होडी मुझ स्वामिनी जोडी, गोर डयो छे थोडी ॥ अ० ॥१२॥ ए अंगना जेणें अंगी यें, अंगें नवि आलिंगी ॥ नवरंगी नवि जिणे अनु षंगी, तेह कुरंगी प्रसंगी ॥ अ० ॥ १३ ॥ नारी ना गकुमारी सारी, नाखुं तेह ऊवारी ॥ जेणें हाथें ए गणिका संवारी, धातानी बलिहारी ॥अ०॥ १४ ॥ जे परहूणा, आवे सयाणा, इणपुर लेइ वसाणां ॥ ते मंदिर गणिकाने आवे, एहवी महीपति आणा ॥ अ० ॥ १५ ॥ सहस एक आठें अधिकेरा, आपे ते दीनार ॥ नहीतो तेहने नवि दिये जावा, जाषित लखत छे सार ॥अ०॥१६॥ चेटीनी निसूणीने वाणी,

नमयातात जे कहेशे॥ ढाल कही चोत्रीशमी रूडी, मोहन हेजें लहेशे॥ ॥ १७ ॥

॥ दोहा ॥

जांखे नमयानो पिता, चेटी निसुण विचार ॥ कहो ठकुराणीने लियो, जोइयें तो दीनार ॥ १ ॥ तुमथी बीजी वारता, अमथी तो नवि थाय ॥ एम कहेजे मीठी गिरा, तेह कहेतां शुं जाय ॥ २ ॥ राजा पण कोपे नहीं, कागलियाना कान ॥ ते माटे कहेजे घणुं, चेटी तुं कह्युं मान ॥ ३ ॥ चेटी आवी दोडती, निज ठकुराणी पास ॥ ए सारथपति स्वामिनी, दीसे छे कोइ दास ॥ ४ ॥ मिलवाने वांछे नहिं, तुज सरीखुं जे पात्र ॥ ए अण बोलाव्यो जलो, घर जेहवी नहिं यात्र ॥ ५ ॥ एणे तो एहवुं कह्युं, लागे ते द्यो दिनार ॥ पण परदारा प्रीतडी, करतां केम व्यवहार ॥ ६ ॥

॥ ढाल पांत्रीशमी ॥

चुनी चुनी कलीयां में सेज बीछांउ, फुलांरी गजराह ॥ माहरा मारुडा, पाणीझारो छमको वाजे ॥ ए देशी ॥ जाउ रे चेटी तेडी आवो, जेम सारथवाह ॥ मारा पंथीडा जोगीडा कांय न आवो, आवो

माह्रारा राज ॥ निपट न लोजी थाउं ॥ए आकणी॥ कह्हेजो स्वामी मया करो मोसुं, मंदिर करो गज गाह ॥ मा० ॥ १ ॥ तुमथी जला जला सारथवाह, आंगण अमचे आया ॥मा०॥ दीसो बो तेहथी चतुर घणेरा, फोगट शी करो माया ॥ मा० ॥ २ ॥ हूकम अबे मूऊ नरवर केरो, लेउंबुं तिण दीनार ॥ मा०॥ नहीं तो अमारे घेर कोण आवे, अमे गणिका अव तार ॥ मा० ॥ ३ ॥ जो तमे माहरे गेह न आवो, तो किम लेउ दीनार ॥मा०॥ मन माने तो करजो क्रीडा, पण आवो एक वार ॥मा०॥४॥ वयणथी न होवे मेलो, तस धनें केम मन माने ॥ मा० ॥ रे रे दासी खासी माहरी, एम तुं कहेजे बाने ॥ मा० ॥५॥ आवी दासी तरत उजाणी, जिहां बे चीवरगेह ॥ मा० अहो सार थपति विनति मानो अमथी आणो नेह ॥ मा० ॥६॥ मूऊ ठकुराणी घणुं लुब्धाणी, तुमहुंती निर्धार ॥ मा० ॥ मंदिरसुधी तो करो करुणा, साथें लेइ दी नार ॥ मा० ॥ ७ ॥ वातडीए तो एम मत वाहो, एम केम मूके कोय ॥ मा० ॥ हे प्रिय प्रेम एम बनी आवे, वाते वडां नवि होय ॥ मा० ॥ ८ ॥ जो मन माने तो तिहां रहेजो, पराणे न होवे प्री

त ॥ मा० ॥ गाम वसे नहिं वांध्ये कणवी, जिहां तिहां एह ठे रीत ॥ मा० ॥ ए ॥ जो तुमें नहीं आवो तो तुमने, चालवा नहिं दे राय ॥ मा० ॥ नानें महोढे तुमची आगल, शी कहुं वात वनाय ॥मा० ॥ १० ॥ शाहें आलोचीने जोयुं, एतो गणिका जाति ॥ मा० ॥ नर सुर असुर ते पार न पामे, जे एहना अवदात ॥ मा० ॥ ११ ॥ जे कोइ नारी थकी हठ ताणे, ते सम मूढ न कोय ॥मा०॥ अपर वली तस गायुं गाये, ते पण तेहवो होय ॥ मा० ॥ १२॥ करीए आपणा मननुं जाएयुं, ताणीयें नहिं कोइ साथे ॥ मा० ॥ शुं करे कामिनी जो होय आपणुं, मनडुं आपणे हाथे ॥ मा० ॥ १३ ॥ दासी वयणें जनक नमयानो, लेइ तुरत दीनार ॥ मा० ॥ आव्यो दासी साथे सुंदर, गणिकाने आगार ॥ मा० ॥ ॥ १४ ॥ गणिकायें आसन वेसण दीधुं, घणी करी मनुहार ॥ मा० ॥ भले तुमें स्वामी महेल पधास्या, मोहोटी करी किरतार ॥मा०॥१५॥ एवडी शी करी खांचा ताणी, कनडीथी महाराज ॥ मा० ॥ नृपनो हुकुम अने हुं चाहुं, तो तुमने शी लाज ॥ मा० ॥ ॥ १६ ॥ साकर घोले मुखथी गणिका, सारथवाह

निहाळे ॥ मा० ॥ मोहनविजये रूडी नांखी, पांत्री शमी ए ढाळे ॥ मा० ॥ १७ ॥ सर्वगाथा

॥ दोहा ॥

गणिकाए मांड्या घणा, हाव भाव धरी वाच ॥ पण भोळववा शाहने, सा नवि लाग्ने दाव ॥ १ ॥ शाह तिहां मन दृढ करी, बेठो चित्र समान ॥ व चन सुणी गणिका तणां, एकरंगे दीये कान ॥ २ ॥ जिहां शीलसन्नाह वर, तिहां कुसुमायुध बाण, कि मपि न जोरो करिशके, मन माने तेम ताण ॥ ३ ॥ नमयातात कहे तहां, रे गणिका अवधार ॥ लट पट जावा दे परी, ए ल्यो तुम दीनार ॥ ४ ॥ अमें श्रावक जिन रायना, परदारा परिहार ॥ देखी पे खी अम थकी, केम होये एह आचार ॥५॥ मान्य कह्युं तुं माहरुं, अमे आव्या आगार ॥ भलुं थयुं तुमने मळ्या, सोप्यां तुम दीनार ॥ ६ ॥

॥ ढाल छत्रीशमी ॥

अमे महीआरु आदि जुगादि, तुं कीहांनो छे दाणी रे ॥ ए देशी ॥ कहे दासी हारिणी गणिका ने, रही श्रवणमां पेसी रे ॥ एहने फेरे कामिनी रूडी, मनोहर नानडे वेशें राज ॥ १ ॥ हुं तो एह

ने मटके मोहीरे ॥ देही कुंकुमने वान, जेही रे अप्सराने मान ॥ हुं० ॥ ए आंकणी ॥ नयण देइने घडी धातायें, कहेतां नावे लासे रे ॥ आज तो व धती दीठी आत्ता, काले कीहां ते जासे राज ॥हुं० ॥ २ ॥ नागकुमारी देवकुमारी, तेम ए मानवनी कु मारीरे ॥ अहो ठकुराणी वाला उपरें, नाखुं तेह उ वारी राज ॥ हुं० ॥ ३ ॥ शुं जाणुं एहनी छे पुत्री किंवा एहनी नारी रे ॥ में तो जोले जावें दीठी, पण नावे ते निरधारी राज ॥ हुं० ॥ ४ ॥ ते कन्या जेम तेम करतां, आपण मंदिरें आवे रे ॥ कल्पल ता सम इछित दाता, दीठेहीज सुहावे राज ॥ हुं० ॥ ५ ॥ ए हरिणाक्षी इंडु अमृतथी, नीसरी दीसे आखी रे ॥ जो एहमां कांइ कूडुं जाखुं, तो सरजण हार छे साखी राज ॥ हुं० ॥ ६ ॥ एमही पण ए सारथवाहो, आपणे वश नवि होशे रे ॥ तो तमे कांये जूलो ठकुराणी, नारी न ल्यो कां खोंची राज हुं० ॥ ७ ॥ काम सरे वली मान वधे तेम, लोकें नवि होय हांसी रे ॥ अने वली सारथवाह न जा णे, तो तमने शाबासी राज, ॥ हुं० ॥ ८ ॥ गणिका दासी वयण सुणीने, रही क्षण एक तिहां छानी रे,

मीठी मीठी वातो मांडी, शाह थकी अभिमानी राज ॥ हुं० ॥ ए ॥ स्वामी किण नयरें वसो छो, शी खबरो तुम केरी रे ॥ दीसो छो दृढधर्मी सारा, कीर्ति तुम अभिनेरी राज ॥ हुं० ॥ १० ॥ मुद्री केणें एह घडी छे, कुंदन पण छे सारो रे ॥ मणा न थी कारीगरमांहे, धन्य एहनो घडनारो राज ॥ ॥ हुं० ॥ ११ ॥ सोवनकार इंहाना मूरख, एहवी न घडे कोई रे ॥ काढी आलो मुफने जोवा, तत क्षण देइश जोई राज ॥ हुं० ॥ १२ ॥ जो कारीगर एहवो होये, तो एहवी घडावुं रे ॥ चोयफेर मूद्रिने चूनी, जल जले जडावुं राज ॥ हुं० ॥ १३ ॥ नमया तातें ते गणिकाने, दीधी मुद्रिका काढीरे ॥ क्षण एक तो रसनायें वखाणी, आंगलीए करी गाढी राज ॥हुं०॥१४॥ दासीने गणिकायें तेडी, ए मुद्री तुं लेजे रे ॥ जाजे सीधी एहने घेरे, तेह नारीने देजे राज ॥ हुं० ॥ १५ ॥ कहेजे सार्थप तुफने तेडे, आ मेली सहिनाणी रे ॥ झूलवणीमां नांखी तेहने, आण जे ईहां सपराणी राज ॥ हुं० ॥ १६ ॥ दासी पहोती घेरा सांमी, कर ग्रही मूद्री राखी रे ॥ ए

छत्रीशमी ढाल सोहाती, मोहनविजयें भांखी राज॥ हुं० ॥ १७ ॥ सर्व गाथा

॥ दोहा ॥

गणिका तो बेठी करे, मीठी मीठी वात ॥ कपट न जांणे तेहनुं, नमयाकेरो तात ॥१॥ नमया सुंदरी नेकने, दासी आवी तेह ॥ करी प्रणाम ऊभी रही, भांखे एम धरी नेह ॥ २ ॥ सारथ वाह तुमारडे, शुं थाये कहो मूज ॥ नमया कहे माहरो पिता, ए संबंध अशुद्ध ॥ ३ ॥ दासी कहे धन्य तुमपिता, तुं छे पुत्री जास ॥ उदधितणी पुत्री रमा, तेहवो तुज आवास ॥ ४ ॥ अमघर तात तुमारडो, बेठो मांभी शुद्ध ॥ तिहांथी तुमने तेडवा, एम मूकी छे मुज ॥ ५ ॥ ते रखे जूठुं मानती, ल्यो सहीनाणी एह ॥ तात हाथनी मुद्रिका, एम कही दीधी तेह ॥ ६ ॥

॥ ढाल साडत्रीशमी ॥

सखीरी आयो वसंत अटारडो ॥ ए देशी ॥ सखीरी दासी कहे नमया जणी नमया जणी उठो होय असूर ॥ सुगुण जनमोहना ॥ स० ॥ तात जोता हशे वाटडी ॥ वा० ॥ मंदिर पण छे दूर ॥

सु० ॥ स० ॥ १ ॥ नहिं आवो हमणां तुमे ॥ ह० ॥ तातजी करशे रीश ॥ सु० ॥ स० ॥ वीजो फेरो मूकने ॥ मू० ॥ विशवावीश ॥ सु० ॥ स० ॥ २ ॥ अम ठकुराणीने पुत्रिका ॥ पु० ॥ छे अति डाही तेह सु० ॥ स० ॥ तातें तस देखी करी ॥ दे० ॥ तुमने संजाख्यां एह ॥ सु० ॥ स० ॥ ३ ॥ तात कहे मुऊ बालिका॥बा०॥ अति डाही गुणवंत॥सु०॥स०॥अम ठकुराणी पण कहे॥प०॥मुऊ पुत्री अति संत॥सु०स०॥४॥ पुत्रीमाटें परस्परें ॥ प० ॥ परठी तेणे होड ॥ सु० ॥ स० ॥ हूकम तेणें बीहु मेलव्यो ॥ मे० ॥ केहमां दीजें खोड ॥ सु० ॥ स० ॥ ५ ॥ तातें तेणें कारणें ॥ का० ॥ मूद्री दीधी मुऊ ॥ सु० ॥ स० ॥ तत्क्षण मूकी तेडवा ॥ ते० ॥ अहो नमया कहुं तुऊ ॥ सु० ॥ स० ॥ ६ ॥ जोउ निहाली मुद्रिका, ॥ मु० ॥ छे तुम तातनुं नाम ॥ सु० ॥ स० ॥ कूड अमें केम जांखीए जां० ॥ सोने न लागे श्याम ॥ सु० ॥ स० ॥ ७ ॥ जो जूठ करी त्रेवडो ॥ त्रे० ॥ तो कांइ न उलखे एह ॥ सु० ॥ स० ॥ कर कंकण शी आरशी ॥ आ० ॥ जोवी पडे छे जेह ॥ सु० ॥ स० ॥ ८ ॥ नमया सुंदरी मुद्रिका ॥ मु० ॥ देखी वांच्युं नाम ॥ सु० ॥ स० ॥ तात

तणा करनी खरी ॥ क० ॥ में उलखी अभिराम ॥ सु० ॥ स० ॥ ए ॥ तात वचन केम लोपियें ॥ लो० ॥ एम कस्यो मनथी विचार ॥ सु० ॥ स० ॥ गणिका कूड न जाणियुं ॥ न० ॥ नमयायें तेणी वार ॥ सु० ॥ स० ॥ १० ॥ दासी साथे संचरी ॥ सं० ॥ नमया सुंदरी तेह ॥ सु० ॥ स० ॥ जेम कोइ नर जाणे नहीं ॥ जा० ॥ तिण विधे आणी गेह ॥ सु० ॥ स० ॥ ११ ॥ वेसारी प्रछन्न उरडे ॥ उं० ॥ नमयाने सोत्साह ॥ सु० ॥ स० ॥ खबर करी गणिका तणी ॥ ग० ॥ दासीयें समस्यामांहि ॥ सु० ॥ स० ॥ १२ ॥ नमया पासेंथी मुद्रिका ॥ मु० ॥ लीधी करीने प्रपंच ॥ सु० ॥ स० ॥ दीधी गणिकाने दासीयें ॥ दा० ॥ जूउं कपटीना संच ॥ सु० ॥ स० ॥ १३ ॥ सोंपी नमया तातने ॥ ता० ॥ पाठी मुद्रिका तेह ॥ सु० ॥ स० ॥ मलशे कारीगर एहवो ॥ ए० ॥ तोजी मगावशुं एह ॥ सु० ॥ स० ॥ १४ ॥ मेरे पधारो साहिबा ॥ सा० ॥ करवो हशे रोजगार ॥ सु० ॥ स० ॥ राखजो अम ऊपर मया ॥ ऊ० ॥ सोंपो अमने दीनार ॥ सु० ॥ स० ॥ १५ ॥ गणिका वयणें हरखियो ॥ ह० ॥ नमया केरो तात ॥ सु० ॥ स० ॥ सूंपी दीनार ऊठ्यो तदा ॥ ऊ० ॥ देई

आशिष विख्यात ॥ सु० ॥ स० ॥ १५ ॥ आव्यो शाह उतावलो ॥ उ० ॥ केरे थई उजमाल ॥ सु० ॥ स० ॥ ए कही साडत्रीशमी ॥ सा० ॥ मोहनविजयें ढाल ॥ सु० ॥ स० ॥ १७ ॥ सर्व गाथा ॥

॥ दोहा ॥

आव्यो नमयानो पिता, केरामांहि जेवार ॥ नमया सुंदरी पुत्रिका, दीठी नहीं तेवार ॥ १ ॥ अहीं परही अंगजा, जोइ घणुं ए तेण ॥ पण नमया लाभे नहीं, खबर न जाणी केण ॥ २ ॥ शाह करे आलोचना, कुण अपहरी गयो एह ॥ एम अण चिंति किहां गई, हूंती पुत्री जेह ॥ ३ ॥ बब्बर कूलें घर घरे, जोई नमया तात ॥ पण नमयानी सोहणे, कोइ न जाणे वात ॥ ४ ॥ सेवकने ठेलंजडा, देवे नमया तात ॥ केराथी मुज अंगजा, किणें अपहरी कहो वात ॥ ५ ॥ शुं जाणुं सेवक कहे, अमने न थइ व्यक्ति ॥ मानव तो कुण अपहरे, थइ कोइ दैवी शक्ति ॥ ६ ॥

॥ ढाल आडत्रीशमी ॥

फूलडी काजल सारे राज, देखो जमर नजारा कामारे राज ॥ मृग नयणी नागरी फूली ॥ ए देशी ॥ नमया तात विचारे राज, क्षण क्षणमें पुत्री संभा

रे राज, केम विसारे कहो ॥ गुणवंती ॥ ए आंक
णी ॥ कर्म कठिन धीय केरां ॥ रा० ॥ केहवी करेछे
वेरां ॥ रा० ॥ कि० ॥ १ ॥ एक तो पीयुडे मूकी ॥
रा० ॥ वनमांहीथी विगर सलूकी ॥ रा० कि० ॥ हुं
तिहांथी लइ आव्यो॥रा०॥तो तेसूतो सिंह जगाव्यो
॥ रा० ॥ कि० ॥ २ ॥ अपहरी जे लेइ गयो कोइ
॥ रा० ॥ पुरमांहिंतो घणुंए जोइ ॥ रा० ॥ कि० ॥
पुत्री गइ वली हासो ॥ रा० ॥ एतो कोइक हुर्ड त
मासो ॥ रा० ॥ कि० ॥ ३ ॥ दुःख धरतो ते व्यव
हारी ॥ रा० ॥ तिहां तेव्या ताम वेपारी ॥ रा० ॥
कि० ॥ वेची करीयाणां सीधां॥ रा० ॥मुह माग्या
पैसा लीधा ॥ रा० ॥ कि० ॥ ४ ॥ प्रवहण सवि स
ज कीधां ॥ रा० ॥ सवि साथ वेसारी लीधां ॥ रा०
॥ कि० ॥ वव्वर कूल निवारी ॥ रा० ॥ प्रवहण ते
मेल्यां हकारी ॥ रा० ॥ कि० ॥ ५ ॥ अनुक्रमें जरु
अच्च आव्या ॥ रा० ॥ सायर तटें पोत ठीपाव्यां
॥ रा० ॥ कि० ॥ भृगुकछमांही धर्मधारी ॥ रा० ॥
जिनदास अछे व्यवहारी ॥ रा० ॥ कि० ॥ ६ ॥ न
मया तातनो तेही ॥ रा० ॥ परिपूरण अछेय स
नेही ॥ रा० ॥ कि० ॥ वाहणने आव्यां जाणी,

॥ रा० ॥ ते सांहमो आव्यो सपराणी ॥ रा० ॥ कि०
॥ ७ ॥ हियडे हियडुं भेली ॥ रा० ॥ तीहां मि
लिया बेहु मन मेली ॥ रा० ॥ कि० ॥ नमया तात
उल्लासें ॥ रा० ॥ घर तेडाव्या जिनदासें ॥ रा० ॥
कि० ॥ ८ ॥ सुभग रसोइ कीधी ॥ रा० ॥ जीमवा
ने थाली दीधी ॥रा०॥ कि० ॥ भोजन करीने उठ्या
॥ रा० ॥ फोफल पण उपर घूठ्यां ॥ रा० ॥ कि०
॥ ए ॥ बिहु मित्र बेठा एकांते ॥ रा० ॥ अन्योन्य
हूआ उच्यांते ॥ रा० ॥ कीम नमया सुंदरी केरी ॥
रा० ॥ कही वातो अति अभिनेरी ॥ रा० कि० ॥
१० ॥ नमया पुत्री माहारी ॥रा०॥ अहो मित्र भत्री
जी ताहरी ॥ रा० ॥ कि० ॥ बब्बरकूल कलोइ ॥
रा० ॥ तिहां अपहरी लेइ गयो कोइ ॥ रा० कि०
॥ ११ ॥ ढुंढी आपणें साथें ॥ रा० ॥ पण पुत्री न
आवी हाथे ॥ रा० ॥ एक तिहां गणिका कहावे
॥ रा० ॥ मुझ तास भरुंसो आवे ॥रा०॥कि०॥ १२ ॥
मानी ठे तास राजाए ॥ रा० ॥ होवे तो केम क
हाये ॥ रा० ॥ कि० ॥ जो तमे तिणी पुर जावो ॥
रा० ॥ तो मुझ पुत्रीनी खबर लेइ आवो ॥ रा० ॥
कि० ॥ १३ ॥ मानीश पाड तुमारो ॥ रा० ॥ इहां

कीजें काज मारो ॥ रा० ॥ कि० ॥ पुत्री दुःख के म सहीयें ॥ रा० ॥ अंतर गतिनी केहने कहीयें ॥ रा० ॥ १४ ॥ कही जिनदास सनेही ॥ रा० ॥ अमे कारज करशुं एही ॥ रा० ॥ कि० ॥ एम शुं वेण वढावो ॥ रा० ॥ फोगट शुं पाड चढावो ॥रा०॥ कि० ॥ १५ ॥ जाइश बब्बर कूलें ॥ रा० ॥ तिहां रहीश वेष अनुकूलें ॥ रा० ॥ कि० ॥ उलवी नमया जिहांथी ॥रा०॥ लेइ आवीश तेहने तिहांथी ॥रा० ॥ कि० ॥ १६ ॥ जो नमया लेई आवुं ॥ रा० ॥ तो मित्रनो मुजरो पावुं ॥ रा० ॥ कि० ॥ मोहने मन स्थिर राखी ॥ रा० ॥ आडत्रीशमी ढाल ए भाखी ॥ रा० ॥ कि० ॥ १७ ॥ सर्व गाथा.

॥ दोहा ॥

नमया तातें मित्रने, एम कही संदेश ॥ निज प्रवहण सज्ज कर्यां, पाम्यो आप निवेश ॥ १ ॥ सयल कुटुंब मिल्यां तिहां, नमया जनकें ताम ॥ बब्बर कूलतणी कही, वीतक वातो ताम ॥ २ ॥ कहे कुटुंब न करो कीसी, फीकर तुमे मनमांह ॥ जलूं हशे मिलशे सुता, करो हेज सोठांहि ॥ ३ ॥ एह वे भरुयच नयरथी, पोत भरी सुविलास ॥ बब्बर

कूल दिशाजणी, चाल्यो ते जिनदास ॥ ४ ॥ सायर लहर ऊकोलथी, चाले प्रवहण अनुकूल ॥ ते अनु क्रमें आवीया, तरतां बब्बर कूल ॥ ५ ॥ जिनदास लेई नेटणुं, नेट्यो बब्बर राय ॥ पाम्यो मान महो त्सवें, तिम पंचांग पसाय ॥ ६ ॥

॥ ढाल ओगणचालीशमी ॥

हरीयामन लाग्यो, ए देशी ॥ नृप आदेशें नग रमां, वणिज करे जिनदास रे॥नेही केम वीसरे ॥ वचन संनारखुं मित्रनुं, हियडामां सुविलास रे ॥ ने०॥ १ ॥ सहदेवें मूऊने इहां, पुत्री जोवा काज रे ने० ॥ मूक्यो पोतानो गणी, हेतुज जाणी आज ॥ ने० ॥ २ ॥ में पण मित्रने कह्युं अछे, आणीश पुत्री तूऊरे ॥ ने० ॥ ते तोहुं नूली गयो, मांड्यो व्यापार अबूऊ रे ॥ ने० ॥ ३ ॥ जाणतो हशे मित्र माहरो, जे एह मुऊ जिनदास रे ॥ ने० ॥ बब्बरमां क रतो हशे, मुऊ पुत्रीनी तलास रे ॥ ने० ॥ ४ ॥ ते मुऊने नवि सांनरे, गाजे छे रोहिण मांहिरे, ॥ ने० ॥ ए मुऊने जुगतुं नहिं, केलवुं प्रपंच कांई रे ॥ ने० ॥ ५ ॥ जिहां मनमेलो आपणो तेहथी केम हुवे कूड, रे ॥ ने० ॥ लोक उखाणो एम कहे,

जिहांकूड तिहां धूड रे ॥ ने० ॥ ६ ॥ उतारे कूप कविचें जो सूरिजन सिरदार रे ॥ ने० ॥ नेह वि लूधां मानवी, ते केम करे नाकार रे ॥ ने० ॥ ७ ॥ नेह महाधन जगतमां, जो करी जाणे कोय रे ॥ ने० ॥ फोगटीयांनो नेहलो, निर्वाहो नवि होय रे ॥ ने० ॥ ८ ॥ हिये जूदा होठे जूदा, तेहथी केम पति आयरे ॥ ने० ॥ साचा स्नेहि सजन तणी, ले ठे लोक बलाइ रे ॥ ने०॥ ए ॥ शापुरुषनी प्रीतडी, जेहवी पहाणें रेह रे ॥ ने० ॥ ओछा प्रीतडी जे हवी, पावशें जीरण गेहरे ॥ ने० ॥ १० ॥ करिय जरुंसो आपणो, खोळें दीधुं शीषरे ॥ ने० ॥ कूड जो करीयें तेहथी, तो केम सहे जगदीशरे ॥ ने० ॥ ११ ॥ नेह तणें वशें हलधरे, कंधे राख्यो मुकुंद रे ॥ ने० ॥ नाद तणे नेहकरी, हरिण पडे ठे फं दरे ॥ ने० ॥ १२ ॥ कहेवायें न एकना, फरीयें जे गेह गेह रे, ॥ ने० ॥ ते जूठा माणसथकी, केम निवहाये, नेह रे ॥ ने० ॥ १३ ॥ चंच पडे पीडाय बहु, गयणे जो उमहे नहि मेह रे, ॥ ने० ॥ गंगा जल नवि पीये, जूवो चातकनो नेह रे ॥ ने०॥ १४ ॥ जो पंकज नवि संपजे, जिहां सरवर अवतंसरे ॥

ने० ॥ अवर कुकुटनी परें, न खणे ते कहियें हंस रे ॥ने०॥ १५ ॥ तेमाटे संसारमां, नेह अनोपम वस्तु रे ॥ ने० ॥ जे नेही हो आपणा, अहोनिश कुशला अस्तु रे ॥ १६ ॥ नेहीनी जे पुत्रिका, जोउं नयर मझार रे ॥ ने० ॥ ढाल ए उंगणचालीशमी, कही मोहनें शिरदार रे ॥ ने० ॥ १७ ॥ सर्व गाथा॥

॥ दोहा ॥

बब्बरकूलें घरोघरे, जोयुं ते जिनदास ॥ पण ते नमया सुंदरी, नावी मूज तलास ॥ १ ॥ सूरिजन आगल हुं खरो, केम थाईश हेव ॥ उरग बबुं दरीनो इहां, न्याय मिल्यो जगदेव ॥ २ ॥ तो पण उद्यम कीजीये, उद्यम वडो संसार ॥ विण धेनु उद्यम थकी, पय पीवे मांजार ॥ ३ ॥ ते जिनदास अहोनिशें, जोवे नगरागार ॥ हवे श्रोताजन सांभलो, नमयानो अधिकार ॥ ४ ॥ जे दिन नमयानो पिता, चाल्यो आपण देश ॥ ते दिनथी हर्षित थई, ग णिका चित्त विशेष ॥ ५ ॥ अति धूतारी छे हारि णी, चिंते चित्तमझार ॥ मुझ आयत्तें ए निश्चें, हुइ हवे ए नार ॥ ६ ॥

॥ ढाल चालीशमी ॥

वीण मा वाईशरे,विठ्ठल वारुं तुजने ॥ ए देशी॥
पेखो निगुणीरे केह्वुं कहेठे गणिका ॥ गंवारो ऊघाडी काढी, वाहिर नमया वणिका ॥ पे० ॥ ए आंकणी ॥ हियडाथी गाढी आलिंगी, सिंहासन वेसाडी, हारिणीए नमयानी आगल, कारमि माया देखाडी ॥ पे० ॥ २ ॥ ताह्रे तातें माह्रे मंदिर, पुत्री तुजने वेची ॥ ते तुजने कांई न जणाव्युं, जनक वडो तुज पेची ॥ पे० ॥ ३ ॥ रे पुत्री तुं जोय विचारी, तात संबंध तें दीठो ॥ रे भोली एणे संसारे, स्वारथ सहुने मीठो ॥ पे० ॥ ४ ॥ तुऊ सरखी पुत्री वेचंतां, एह्नुं मन केम चाल्युं ॥ अमे दयालु परोपकारी, मुह माग्युं धन आल्युं ॥ पे० ॥ ५ ॥ देख लूचाइ ताह्रा तातनी, नाम न पूठां फेरी ॥ तातें कीधूं जहेवुं तुऊने, तहेवुं न करे वैरी ॥ ६ ॥ एहेवो कुण ठे वेचे परघर, जे आपणडां ठोरु ॥ मायायें नवि ठोडे अलगां,वाठरु आंने ढोरु ॥ पे० ॥७॥ अमें तो तेह्ने घणुंए वार्यो, पण तेणे न कर्युं वार्युं ॥ ताह्रे तातें धनने अर्थे, कीधूं अति अविचार्युं ॥ पे० ॥ ८ ॥ निज वालक

प्रतिपालवा माटें, हरणी सिंहथी घाये ॥ तेहथी पण तुझ तात नीपावट, घणुंय कहे शुं थाये ॥ पे० ॥ ए ॥ एतो जलुं जे माहरे मंदिर, वेची मद न्नर माती ॥ जो बीजे वेचत तो ताहरी, कहे ने शी गति थाती ॥ पे० ॥ १० ॥ एहवुं जरुर पड्युं हतुं केवुं, जे तुझ वेची तातें ॥ हुंतो राखीश पुत्री करीने, माहरे तो आव्युं धातें ॥ पे० ॥ ११ ॥ तुं मूझ पुत्री हुं तुझ माता, ए सघलुं ठे ताहरुं ॥ तुं माहरें हुं बुं ताहरे, एहवुं मन ठे महारुं ॥ पे० ॥ ॥ १२ ॥ माहरें तूझ उपरें नथी कोई, तुं घरनी ठकुराणी ॥ जे तुं देइश ते हुं लेइश, में एकतारी आणी ॥ पे० ॥ १३ ॥ प्राण तणी परें तुझने राखीश, दोहिली न करुं क्यारें ॥ साकर घोली दूध ज्युं पाइश, पाणी मागीश ज्यारें ॥ पे० ॥ १४ ॥ हथेलीनीं ठायामांहे, अहोनिश राखीश तुझने ॥ जे कोइ वातें डुःख तुं पामे, देजे ठलंजा मुझने ॥ पे० ॥ १५ ॥ दासीयो ताहरी खिजमत करशे, हुकम हुकममें रहेशे॥ जे तुं कहीश ते निर्वहेशे सघलुं, ताहरुं खुंच्युं खमशे ॥ पे० ॥ १६ ॥ हुं पण बुं राजा सरखी, रखे कांइ प्रीठती बीजी ॥ मुझ पुत्री जाणीने तुझने,

सहुको करशे जीजी ॥ पे० ॥ १७ ॥ जोढुं तुझथी अंतर राखुं, तो परमेश्वर साखी ॥ ए चालीशमी ढाल सनूरी, मोहनविजयें चांखी ॥ पे० ॥ १८ ॥

॥ दोहा ॥

वचन सुणी गणिकातणां, नमया थइ निसनेह ॥ चित्तथी करे विचारणा, एम शुं कहे बे एह ॥ १ ॥ धन शुं थोडुं बे घरें, जे एम वेचे तात ॥ हिये उपावी एहवी, केम मनाये वात ॥ २ ॥ दासी मूकी पणीए, मूझने राखी गेह ॥ तात जणी विभ्रता रियो, एहनुं कारण एह ॥ ३ ॥ अनुमानें जोतां थकां, दीसे गणिका एह ॥ मायायें करी मुझ थकी, मांडे झूठो नेह ॥ ४ ॥ गणिकायें नमया जणी, लही उदासी जाम ॥ मीठें वचनें चड वडी, मुखथी बोले ताम ॥ ५ ॥ रे पुत्री चिंता तजो, हसो रमो हित आणि ॥ परिकर निकर हे पद्मिनी, पोतानो करि जाणि ॥ ६ ॥

॥ ढाल एकतालीशमी ॥

देशी हमीरियानी ॥ कहे गणिका नमया जणी, सांजल माहरी वात ॥ सुरंगी ॥ खोटी शीकरे शोचना, कूंमी केहनो तात ॥ सु० ॥ १ ॥ मान वचन

तुं माहरुं, जोगव्य सुंदर जोग ॥ सु० ॥ ए टाणुं रखे चूकती, करीश सनेही संयोग ॥ सु० मा० ॥२॥ वनना कुसुमतणीपरें, जोबन एले म खोय ॥ ए अवसर कुण निर्गमे, एहवो छे मूरख कोय ॥ सु० ॥ मा० ॥ ३ ॥ एक जोबनने प्राहूणो, केतादिन विलंबाय ॥ सु० ॥ एह कपूरतणी परे, क्षणमें उडीजाय ॥सु०॥ मा० ॥ ४ ॥ चंपक वरणी देहडी, फरी फरी किहां पामीश ॥ सु० ॥ ले लाहो जोबनतणो, जो बुद्धि दे जगदीश ॥ सु० ॥ मा० ॥ ५ ॥ जोबन एह गया पछी, कहे मुजने तुं शुं करीश ॥ सु० ॥ तुंतो मांखीनी परें, बेठी हाथ घसीश ॥ सु० ॥ मा० ॥६॥ चतुराइ तुज जेहवी, तेहवोज पुरुष अमूल ॥ सु० ॥ गणिकाकुल मारगतणां, कारज करव्य तु कबूल ॥सु०॥ मा० ॥ ७ ॥ आशा अमें तुज उपरे, राखी छे मेरु समान ॥ सु० ॥ आशाए इंडां अनल तणां, महोटां होवे निदान ॥ सु० ॥ मा० ॥ ८ ॥ आशा प्रथम देई करी, जे तो करे निराश ॥ सु० ॥ धिक धिक जीवित तेहनुं, जे नवि पूरे आश ॥ सु० ॥ मा० ॥ ॥ ए ॥ जे अमें लीधी तुजने, ते तो एहज माट ॥ नाकारो जो कहिश तुं, केम पोसाशे घाट ॥ सु० ॥

मा० ॥ १० ॥ मुखने पूठी जोजन करो, तनुने पू
ठीने पहेर ॥ सु० ॥ जाय तु रथमें वेसीने, वन उ-
पवनने शहेर ॥ सु० ॥ मा० ॥ ११ ॥ तेल फूलेलने
अगरजा, तेहमां रहो गरकाव ॥ सु० ॥ नवनवरंगें
हसो रमो, पान सोपारी चाव ॥ सु० ॥ मा० ॥१२॥
वचन सुणी गणिकातणां, वोली नमया ताम ॥सु०॥
वाई तुमें अण वोल्यां रहो, ए तुमचुं नहीं काम ॥
सु० ॥ मा० ॥ १३ ॥ हुं व्यवहारीनी पुत्रिका, तुमे
तो गणिका निदान ॥ सु०॥ ए अणघटतुं कां करो,
कांइक राखो शान ॥ सु० ॥ मा० ॥ १४ ॥ जावा
द्यो जोलामणी, अमें तुझ वाल गोपाल ॥ सु० ॥
जोजंतुं कुल साहमुं, नहितर देइश गाल ॥ सु० ॥
मा० ॥ १५ ॥ वाड जो गलशे चीजडां, तो रखवा
लशे कोण ॥ सु० ॥ कहिये एहवुं वरे पडे, जेवुं आ
टें लूण ॥ सु० ॥ मा० ॥ १६ ॥ नीचे वाहनें केम च
डे, जे चढिया सुंढाल ॥ सु० ॥ मोहनविजयें जली
कही, एकतालीशमी ढाल ॥ सु० ॥ मा० ॥ १७ ॥

॥ दोहा ॥

नमयाने गणिका कहे, पुत्री निसुण जगीश ॥
आरुं आरुं वोलतां, एम केम तुं दूटीश ॥ १ ॥ जे

केड्ये लाग्यां खरां, ते तुऊ तजशे केम ॥ विगर दि लासायें अली, अमने तुं मत ठेड ॥ २ ॥ जेह पड्युं मादल गले, दैवतणुं तुं जोय ॥ विणवाये केम छूटीये, एम नांखे सहु कोय ॥ ३ ॥ जास वशे जे को पड्या, गेड्या हीज छुटाय ॥ ते जे कहे ते कीजीयें, एम कीधें शुं थाय ॥ ४ ॥ अंगीकार करो तुमे, आ मंदिर आचार ॥ जेह कहो ते ऊगरे, मानो एह मनुहार ॥५॥ नमया तव विलखी थई, मुख मेहले निःश्वास ॥ दुःखजर दाऊी विरहिणी, ऐ ऐ करे विषास ॥ ६ ॥

॥ ढाल बहेंतालीशमी ॥

घेरी घेरी पण घेरी रे, मोकुं या विरहाने घेरी ॥ ए देशी ॥ घेरी घेरी पण घेरी रे, मुने ए गणिकाए घेरी ॥ मु० ॥ एक तो महारे कंते मुऊने, वनमां कीधी अनेरी ॥ तास संदेशो न आव्यो मुऊने, केणे न कह्यो फेरी रे ॥ मु० ॥ १ ॥ मात पिता पण दूरें रहीयां, केही विध होशे मोरीरे ॥ मु०॥ नूरकी नांखी एणे जंजेरी, मेरे मूकी चेरी रे ॥ मु० ॥ २ ॥ मे कांइ दैवनी कीधी दीसे, मोटी चोरी हेरी रे ॥ सांजले कुण कहुं हुं केहने, माहरा मनडा केरी रे ॥मु० ॥३॥ कल्पलताशी पहेली करीने, कीधी दीसे कंथेरी

रे ॥मु०॥ नाहवियोगे हियडामांहि, खटके खरी खरेरी रे ॥मु०॥ ४ ॥ ए गणिकाने वशे हुं आवी, निसरी न शकुं अवेरी रे ॥मु०॥ जेहथी शील रतन रहे माहरुं, केही बुद्धि अनेरी रे ॥ मु० ॥ ५ ॥ जिहां गये रहे शील सलूणुं, कोण देखाडे ते शेरी रे ॥ मु० ॥ दैव अटारो शीयल उदालण, गणिका किहांथी उदेरी रे ॥ मु० ॥ ६ ॥ खारो जंभो नीम नवो दधि, शीलता मीठी वेरी रे ॥ मु०॥ नमया विलपे जेम मृग विलपे, देखी दूर आहेरी रे ॥ मु० ॥ ७ ॥ ए तो माहरुं कह्युं न माने, मांकी बेठी वखेडी रे ॥ मु० ॥ जे कोइ नारी धूतारी जगमां, तेहमां एह वडेरी रे ॥ मु० ॥ ॥ ८ ॥ भांखे नमया सांभल गणिका, मुझथी रहेजे परेरी रे ॥ तहारुं कीधुं तुहीज पामीश, आवीश जो तुं आरेरी रे ॥ ए ॥ शीलरतन राखवा कारण, नाखी तास नीठेरी रे ॥मु०॥ निसूणी गणिका घणुंए कूदी, कठी जेहवी बठेरी रे ॥ मु० ॥ १० ॥ बोली गणिका रे रे बाला, तुं शुं भ्रमथी भलेरी रे ॥ मु० ॥ तुं जो वननुं फल शुं जाणे, छे तुं हजीअ अलेरी रे ॥मु०॥ ॥ ११ ॥ फूल गुलाबनी शी गति जाणे, दीठी जेणे कणेरी ॥ मु० ॥ दोहिली आवे तनुचतुराइ, मूढमति

जो घणेरी रे ॥ मु० ॥ १२ ॥ कूपक मेमक सायर केरी, जाणे शुं ते लहेरी रे ॥ मु० ॥ देव कुसुमनो स्वाद शुं जाणे, चाखी जेणें वहेरी रे ॥ मु० ॥ १३ ॥ लाम लमावी लामकवाही, मायें तुमने जहेरी रे ॥ मु० ॥ त्यारे बोले छे एम तुं त्रटकी, होये जीन्न छ छेरी रे ॥ मु० ॥ १४ ॥ जो जो नमया बुद्धि उपाइ, राखशे शील अप्रकंपी रे ॥ मु० ॥ मोहनविजयें ढाल अनोपम, वहेंतालीशमी जंपी रे ॥ मु० ॥ १५ ॥

॥ दोहा ॥

कहे नमया गणिका त्रणी, म म कर जूठी वात ॥ तुज वचन केम जंपियें, केम करीयें परतात ॥ १ ॥ तें ताहरां कीधां करम, जोगव्य तुं मतिमंद ॥ पण बीजाने शावती, पाडे एहवे फंद ॥२॥ तीन पंचासां ताहरे, जीववुं दीसे तुज ॥ दीये छे जे कारणे, ए शी खामण मुज ॥३॥ वरसे शशी अंगारडा, पयोधि छंमे मर्याद ॥ नासे सिंह शियालथी, सुधा निवारे स्वाद ॥ ४ ॥ जो ते सघलां नीपजे, ते सांजल अवली ल ॥ परनरथी परवश हुई, सतियो न मूके शील ॥५॥ ते माटे तुजने किशुं, कहुं घणुं हित लाय ॥ तुं रहेजे रजात थकी, नांखुं गोद बिछाय ॥ ६ ॥

॥ ढाल त्रैंतालीशमी ॥

हुं तुज वारुं कान जावा दे ॥ए देशी॥ हुं तुज वारुं गणिका जावा दे, माहरो सनेही वाहलो रह्यो छे दूर रे ॥ मूक मारो केडलोने, रही छुं हजूर रे ॥ मुने जावा दे ॥ हुं० ॥ कां नवि जाणे भूंडी, कारिमो संसाररे, रे रे तुं दाझेलाने कां दीये खार ॥ मू० ॥ हुं० ॥ १ ॥ जेहने सूहायें तेहने आंखीयें एह रे, सूणी एहवी वातडीने कंपेछे देह ॥ मू० ॥ गणिकायें विचार्युं एतो सीधी नवि जोय रे, एहने देखाडुं जीति तो वश होय ॥ मू० ॥ हुं० ॥ २ ॥ जांडनी भेंस मांगे प्रासुए तेह रे, तिलने पील्याविना नव दे सनेह ॥ मू० ॥ सीधी आंगलीए क्यारें, नवि नीकले क्षीर रे॥ इहां कोण छोडावाने आवे छे वीर ॥ मू० ॥ हुं० ॥ ॥ ३ ॥ माहरे वशें आवी तें किहां जाय रे, एक वार पूछुं एहने वातडी वनाय ॥ मू० ॥ पेट पलुंसी शाने शूल उपाय रे ॥ कडुउं महोरुं जोतुं अतिमथ्युं थाय रे ॥मू०॥हुं०॥४॥ जी जी करतां तुंतो थायछे शेर रे, कांइ हव एवडो तुं ताणे छे फेर ॥मू०॥ नहिंतो हुंए तुने चावकानी छोर रे, घाली एणी कोटडीमां कूटी श जोर ॥ मू० ॥ हुं० ॥ ५ ॥ एहवे गणिकानी कूखें

उपन्युं शूल रे, जीवडलो मोंघो हूउ तस प्रतिकूल॥ मू० ॥ शील सुरंगा केरो महिमा जगमांय रे, शील सखाइ तेहने केम डुःख थाय ॥ मू० ॥ हुं० ॥ ६ ॥ गणिका तो पहोंती तिहांथकी कोइक गतिमांय रे, जेह जे करे ठे तेहने शी गति थाय॥मू०॥ उत्ती आलोचे नमया सुंदरी ताम रे, थोडेशे हेतें ए तेणें श्यां कस्यां काम ॥ मू० ॥ हुं० ॥ ७ ॥ जगमां जीव्यानो जनने एह विश्वास रे, मांडीने वेसे ठे एवी जूठी जूठी आश, ॥ मू० ॥ हवणां ए वेठी हूंती होयने नाथरे, पण को सनेही एहने नवि हुउ साथ ॥ मू० ॥ हुं० ॥ ८ ॥ ऐ ऐ केहवो ठे एहवो जूठो संसार रे, मूकीने जोवंता गइ एहवां आगार ॥ मू० ॥ जूठानो जरुंसो एतो केटलो करायरे, साचा रे सनेही मोटा खोटा हूया जाय ॥ मू०॥ हुं०॥ए॥ एहवी जूरेठे उत्ती नर्मदा नारी रे, गणिकानो राजाने पहोतो संदेशो तेवार ॥मू०॥ राजाए विचास्युं एहवुं ए गणिकाकेरो माल रे, आव्यो ठे अजाण्यो हाथ हुआवुं निहाल ॥ मू० ॥ हुं० ॥ १० ॥ जगमां जीव्यानो महोटो नेहो निर्धार रे, नहीं तो निःस्नेही सहूको दीणके मझार ॥ मू० ॥ सेवकने

संप्रेष्या नृपें गणिकाने आगार रे ॥ आव्या ते दोडता तिहां न कर्यो विचार ॥ मू० ॥ हुं० ॥११॥ धसमसता पेठा ते जेहवे गेह मझारी रे, तेहवे तिहां दीठी नयणे नर्मदानारी ॥ मू० ॥ पडि आलोचें नोला तस देखी देह रे ॥ सहुको विचारे कुंण अंगना एह ॥मू०॥हुं०॥१२॥ हारिणीयें दासी सुरंगी, एहवी राखीछे आगार रे, जइने राजाने कहीयें, एहनो तेह विचार रे ॥ मू०॥ सेवक तो सहु कोय पाछा आव्या दरबार रे, राजाने पयंपे एहवुं करी मनुहार ॥ मू०॥हुं०॥१३॥ हारिणी जे गणिका ते तो, पोहती परलोक रे ॥ पण केम लीजें एहनी, मायानो संजोग ॥मू०॥ एहने आवासें एहथी रूडी एक नारी रे, दीसे छे अमीणे जाणे राख्यो एणे नार ॥ मू० ॥ हुं० ॥ १४ ॥ एहने जो नयणे देखो, आवे तव दाय रे ॥ बीजीतो तारीफो एहनी, केटली कराय ॥ मू० ॥ नांखी सुरंगी चंगी, त्रेंतालीशमी ढाल रे ॥ मोहनना कह्याथी वातो, लागे छे रसाल ॥ मू० ॥ हुं० ॥ १५ ॥ सर्व गाथा ॥

॥ दोहा ॥

कहे नृपति निज सचिवने, जे गणिकाने गेह ॥

सुंदर छे एहवी त्रिया, तेडी आणो तेह ॥ १ ॥ हारिणी सरसी जोइए, तो ते तेहने ठाम ॥ आपण तेहने राखियें, दीजे ठत्री काम ॥२॥ सजिव नृपति आदेशथी, आव्यो गणिका गेह ॥ दीठी नमया सुंदरी, मनोहर गौरी देह ॥ ३ ॥ कहे सचिव नमया त्रणी, रे सुकुलिणी नार ॥ तूठो परिपूरण खरो, तुज ऊपर किरतार ॥ ४ ॥ वब्बरकूल नरेशनी, करय ठलग मनरंग ॥ प्राणतणीपरें राखशे, रहेजो सदा अनुषंग ॥ ५ ॥ धण कण कंचन वसन गृह, छे गणिकाने गेह ॥ ते सवि तुजने सोंपशे, मान्य वचन मुज एह ॥ ६ ॥

॥ ढाल चुम्मालीशमी ॥

कालो ने पीली वादली ॥ ए देशी ॥ नमया सचिव कह्या थकी साजनां, शोचे चित्त मजार ॥ विषयातुर राजा थयो साजनां, ए ए सरजणहार ॥ जोजो रे हवे नारी चरित्र, करशे नमया नार ॥१॥ ए आंकणी ॥ नृप पासें लेइ जाशे ॥सा०॥ मंत्री वीशवा वीश ॥ राजा मुजने प्रार्थशे ॥ सा० ॥ त्यारें हुं शुं करीश ॥ जो० ॥ २ ॥ श्यो जोरो अबलातणो ॥सा०॥ शील हुं राखीश केम ॥ परवश पडीयां मानवी ॥

सा०॥ कुण विध राखे नेम ॥ जो० ॥ ३ ॥ अणबोली
नमया रही ॥ सा० ॥ भांखे हो मंत्री ताम ॥ रे गुण
वंती गोरडी ॥ सा० ॥ केम एम वेठी आम ॥ जो०
॥ ४ ॥ वेसो एणे सुखासने ॥ सा० ॥ खोटा म करो
विचार ॥ राजाने आवी मलो ॥सा०॥ रहो अहनिश
दरवार ॥जो०॥ ५ ॥ अति हठ ताणी मंत्रीए ॥सा०॥
ततक्षण नमया नार, वेगाडी ऊपाडीने ॥सा०॥ सुंदर
रथह मझार ॥ जो० ॥ ६ ॥ परवश ए नमया पडी ॥
सा० ॥ अतिही धरे मन लाज, जाणीयें पंजरमां प
ड्यो ॥ सा० ॥ वनवासी मृगराज ॥ जो० ॥ ७ ॥ पर
म मंत्र मनमें गणे, चौद पूरवनो जे सार ॥ रथ वेठी
आवी सती, एहवे चहूटा मझार ॥ जो० ॥ ८ ॥ त
व तिहां शीलने राखवा ॥ सा० ॥ नमयायें कीधो वि
चार ॥ जो ठल इहां कोइ करूं ॥सा०॥ तो रहे शील
उदार ॥ जो० ॥ए॥ दोहा ॥ बुद्धि शरीरां नीपजे, जो
ऊपजे ततकाल ॥ वानर वाघ विलोवियो, एकलडे
शीयाल ॥जो०॥ १० ॥ बुद्धिथकी मंत्रीश्वरे ॥ सा० ॥
भोलव्यो यक्ष कमाल ॥ बुद्धि हरी कपि रोलिया ॥
सा० ॥ एकलडे शीयाल ॥ जो०॥ ११ ॥ नमया राख
ए शीलने ॥ सा० ॥ मंत्रीने विप्रतार ॥ रथहुंती कूदी

पडी, परवरि खाल मझार ॥ जो० ॥ १२ ॥ कादवथी तनु लीपीयुं ॥ सा० ॥ देखे लोक समद्ध ॥ जाणीने घहेली थइ ॥ सा० ॥ जाणे वलग्यो यद्ध ॥ जो० ॥ १३ ॥ चीर पटोली कंचुकी ॥ सा०॥ कीधां ते खंडो खंड ॥ जाणीने कांइक कहे ॥ सा०॥ मुखथी करे आक्रंद ॥ जो० ॥ १४ ॥ बीहाडे लोको नणी ॥ सा० ॥ बूटा केश कराल ॥ क्षिण हसे क्षिणके रुवे ॥ सा० ॥ क्षणके विलोके खाल ॥ जो० ॥ १५ ॥ एम असमंजस देखीने ॥ सा० ॥ मंत्री विनवे नूपाल, स्वामीजी ते सुंदरी ॥ सा० ॥ थइ दीसे बे कराल ॥ जो०॥१६॥ रूप अनोपम बे घणुं ॥ सा० ॥ पण तस परवश देह, ते केमही साजी हुवे ॥ सा० ॥ तो बहु उपजे सनेह ॥ जो० ॥ १७ ॥ मंत्री वचन सूणी करी ॥ सा० ॥ आलोचे महीपाल, मोहनविजयें वर्णवी ॥ सा० ॥ चुम्मालीशमी ढाल ॥ जो० ॥ १८ ॥ सर्व गाथा ॥

॥ दोहा ॥

महीराज मंत्री नणी, कहे सांजल्य मुज वेण ॥
नारीने साजी करे, एहवो कोइ बे सेण ॥ १ ॥
नूपें पडह वजावियो, बब्बरकूल मझार ॥ जे नमया साजी करे, ते लहे लाख दीनार ॥ २ ॥ एहवे

केणे ब्राह्मणें, पडह ठव्यो तेणीवार ॥ एहने हुं सा
जी करुं, एहमें किस्यो विचार ॥ २ ॥ नृप सेवक ब्रा
ह्मण जणी, आव्यो राजा पास ॥ महाराज ते ना
रीने, तेडावो आवास ॥ ३ ॥ नृपें अनुचर तेडवा,
मूक्या तास तिवार ॥ पकडीने दरवारमां, आणी
नमया नार ॥ ५ ॥ एक अलोधी ओरडी, वेसाडी
तिण मांहि ॥ आव्यो ब्राह्मण मंत्रवी, नमया पास
सोत्साहि ॥ ६ ॥ दूर विसर्ज्या लोकने, ब्राह्मण पूरी
द्वार ॥ नमयाने साजी करें, जोजो मूढ गमार ॥७॥

॥ ढाल पिस्तालीशमी ॥

साहेवा मोतीडोने हमारो जीवनां मोती० ॥
ए देशी ॥ ब्राह्मण जोलो जेद न लेहेवे, नमया आ
गल धूप उखेवे ॥ नर्मदा नवरंगी, सलूणी शील
सुप्रसंगी ॥ मंत्र जणीने ऊजणी नाखे, सती शि
रोमणि सर्वे सांखे ॥ नर्मदा नवरंगी ॥ १ ॥ सुंदरी
जाणे ब्राह्मण जोलो, फोकट श्यो मांड्यो ठे ए रोलो
॥न०॥ जेम जेम ब्राह्मण उंजे दूणे, तेम तेम सा उत्त
मांग धधूणे ॥न०॥ २ ॥ एहवे नमया वुद्धि उपावे,
काढीदंत ब्राह्मण पर धावे ॥न०॥ वीहीनो वाडव ऊठी
जाग्यो, काइक पहेखुं कांइक नागो ॥न०॥ ३ ॥ द्वार

उघाडी ब्राह्मण दोड्यो, जाणीये वालीथी रेवत छोड्यो ॥ न० ॥ आगलें मंत्रवी पूंछल नमया, चहुटा लगे एम करतां तेसुं गया ॥ न० ॥ ४ ॥ लोकें तेह ब्राह्मण ऊगार्यो, जूउ मंत्रवादीए मंत्र हकार्यो ॥ न० ॥ नमया जिन गुण कंठे गाये, जाणीयें सुकंठे कोइक मोरली वायें ॥ ५ ॥ बब्बर चहूटे जमे थइ घीठी, एहवे जिनदासें ते दीठी ॥ न० ॥ पुरजन अलगा करीने पूछे, कहे सुंदरी कारण एह शुं छे ॥ न० ॥ ६ ॥ जिनना गुण तुं गाय छे रूडी, तो केम एम पुरमें जमे जूंजी ॥न०॥ बाहेर एहवी अंतर काहि, तो एम लोक कां मूक्यां वाही ॥न०॥ ७॥ दीसे श्रावक कुलनी जाइ, साच कहो मुज आगल बाइ ॥न०॥ छे कोण तुं पुत्री छे केहनी, जाणुंछुं हुं तुं छे रे जेहनी ॥ न० ॥ ८ ॥ हुं पण श्रावक छुं सूण बहेनी, मूज आगल तु साचुं कहेनी ॥ न० ॥ कहे नमया हलूए शुं फेरी, ए शी वेला पूछ्या केरी ॥ न० ॥ ए ॥ जो तु साचोछे जिननो पंति,तो मुज पूछजे कहेशुं एकंति ॥ न० ॥ जे अवसर प्रीछे ते काह्यो, जे नवि जाणे ते फोकट वाह्यो ॥ न० ॥ १० ॥ तव जिनदास छानो थइ रहीयो, नमया भेद न कोइने

कहियो ॥ नमया घूंघ भमे निशदीहे, पण नवि बोलावे करि जीहे ॥ ११ ॥ नमया भमे पुरमांहे एकाकी, जाणीये परम महारस छाकी ॥ न० ॥ राजा केइ उपाय करावे, पण नमयाने लेखे नावे ॥ न० ॥ १२ ॥ आणत मूकने कोण गवाडे, जाणीने उंघे तेने कोण जगाडे ॥ न० ॥ एहवे कौमुदी महोत्सव आवे, पुर जन सघला वनमां जावे ॥न०॥ १३ ॥ नमया पण जिनवरने गेहें, करी स्तुति करे पूरण नेहें ॥ न० पूंठले पण जिनदास आव्यो, नमयाथी धर्म सनेह उपाव्यो ॥न०॥ १४ ॥ नमया आघुं पाछुं जोइ, जिनदास हूंती वातें हूइ ॥ न० ॥ हुं वर्धमान नयरनी वासी, माहरो जनक सहदेव विसासी ॥ न० ॥ १५ ॥ परणी मूजने सकोरू नाहे, पण ते मूकी गयो वनमांहे ॥ न० ॥ तिहां मुज तात मल्यो अणजाणी, तिहांथी इहां इण पुरमांहे आणी ॥न०॥ १६ ॥ उलवी गणिकाए मूजने राखी, राख्युं शील एम करी सुसाखी ॥न०॥ पिस्तालीशमी ढाल सवाइ,सुंदर मोहनविजयें गाइ ॥ न० ॥ १७ ॥

॥ दोहा ॥

नमयाने जिनदास कहे, हुं पण जाखुं सच्च ॥

पुत्री हुं जिनदास अछुं, नयर जिहां भरुअच्च ॥१॥ ताहरे तातें मूजने, कही तहारी सवि वात ॥ हुं छुं नेही तेहनो, मध्यंतर विख्यात ॥ २ ॥ तुझने जोवा कारणें, हुं इहां आव्यो एम ॥ में पण तुज राखी गुप्त करी, कहो प्रगट हुइ केम ॥ ३ ॥ हवे तुं मुजने मली, न धरिश केहनी बीक ॥ तुं मत जाणे एकली, तुं छे मूज नजीक ॥ ४ ॥ तुं छे पुत्री मुज तणी, मुजथी म करीश लाज ॥ जेम तेम करी संगे करिश, जो करशे जिनराज ॥ ५ ॥ एम कही जिनदास ते, आव्यो तुरत वखार ॥ दाम सयल गांठे करी, वाहण कर्यां तैयार ॥ ६ ॥

॥ ढाल छेंतालीशमी ॥

झांझरीया मुनिवरनी देशी ॥ राजायें तव सांभल्युं जी, प्रवहण सजे जिनदास ॥ सेवक मूकी तेहने जी, तेडाव्यो निज पास ॥ १ ॥ गुणमणि गोरडी नमया सुंदरी नारी, ए आंकणी ॥ कहे जिनदास नरेसरने जी, फरमावो महाराज ॥ केम मुजने तेडावियो जी, सेवक मूकी आज ॥ गु० ॥ २ ॥ कहे नृप कारज माहरुं जी, सांभली करजे तुं एक ॥ इहां एक नमया सुंदरी जी, ते अति छे निर्विवेक ॥गु०॥

॥ ३ ॥ चौहटे गलीयें चाचरें जी, ते अति करे तो फान ॥ वीहाडी वीहती नथी जी, फरती करती तोफान ॥ गु० ॥ ४ ॥ नयर कयुं इण नारीयें जी, वानर वनह समान ॥ कोइ आडो नवि उतरे जी, ए नमयाहो तान ॥ गु० ॥५॥ ते माटे तुमे एहने जी, घाली पोतमजार ॥ कोइ परदेशे मूकजो जी, सापण परें निरधार ॥ गुं० ॥ ६ ॥ ठें परदेशी प्राहु णी जी, थइ वली एहवे वेश ॥ एहनी कुंण करे चाकरी जी, लेइ चालो परदेश ॥ गु० ॥ ७ ॥ कहे जिनदास हसी करी जी, वारु जी महाराज ॥ परवश नमया नारीनें जी, प्रवहण गवुं आज ॥ गु० ॥ ८॥ करी प्रणाम नररायने जी, ऊव्यो ते जिनदास ॥ धसमसतो हेजे नस्यो जी, आव्यो नर्मदा पास ॥ ॥ ए ॥ ऊव्य पुत्री मुऊ प्रवहणे जी, आवी वेसो हेव ॥ नमया निसुणी दोडती जी, जइ वेठी तत खेव ॥ गु० ॥ १० ॥ नवरावी नमया नणी जी, प्रग ट्युं रुप यत्न ॥ जेम कचरो धोया पठी जी, ऊलहले जेहवुं रत्न ॥ गु० ॥ ११ ॥ वेसाडी महोत्सवें जी, पेहराव्या शणगार ॥ मुंहगा जांड तणी परें जी, राखी तेणीवार ॥ १२ ॥ प्रवहण ताम हंकारियांजी,

सयल मनोरथ सिद्ध ॥ नर्मदापुरवर आवीयां जी, जीतना जंगी दीध ॥ गु० ॥ १३ ॥ उतर्यां प्रवहण थकी जी, नमयाने ससनेह ॥ अति उत्सव आडं बरे जी, आणी तातने गेह ॥ गु० ॥ १४ ॥ नमया देखी तातने जी, उलटियो उछरंग ॥ सयल कुटुम्बतणां तिहांजी, हरख्यां अंगोअंग ॥ गु० ॥१५॥ हेज तणां आंसु झरे जी, अमीये उठ्या मेह ॥ नमया आनंदशुं वसे जी, निज माताने गेह ॥ गु० ॥ ॥ १६ ॥ हसे रमे क्रीडा करे जी, टाल्यो दुःख जंजाल ॥ मोहनविजयें वर्णवीजी, बेंतालीशमी ढाल ॥ गु० ॥ १७ ॥ सर्व गाथा.

॥ दोहा ॥

नमया तात जाणी तिहां, सोंपीने जिनदास ॥ चाल्यो तिहांथी अनुक्रमे, आव्यो निज आवास ॥ ॥ १ ॥ नमया ताततणे घरे, रहे सदा मनरंग ॥ सहीउंशुं क्रीडा करे, निर्विकार निःशंक ॥ साधु अवज्ञाथी इणे, केतां सहियां दुःख ॥ पण एक शील सहायथी, पुण्ये पामी सुख ॥ ३ ॥ तात कहे नमया जाणी, रे पुत्री तुज कंत ॥ कहेतो तेडावुं इहां, मूकीने उदंत ॥ ४ ॥ पीयु गुण संभारे सती,

रही अणबोली ताम ॥ तात सुता मन राखवा, नीपाव्युं जिनधाम ॥ ५ ॥ अति उत्तम उन्नत सुचग, जिन मूर्ति तस मद्य ॥ नमया नित्य पूजा रचे, वाजा गाजां सद्य ॥ ६ ॥

॥ ढाल सुडतालीशमी ॥

कानुडो तो वेण वजावें कालिंदीने कांठे ॥ ए देशी ॥ वर्धमानपुर परिसरमांहि, एहवे सद्गुरु आव्या ॥ पंचाचार विचारे पूरा, सहुकोने मनजा व्या ॥ १ ॥ नमया तात कुटुंब संघातें, गुरु चरणांबुज सेव्यां ॥ जेहना दरिसण दीठा हूंती, जव जव पातक मेव्यां, ॥ २ ॥ धर्माशीष सूरीश्वर जांखे, सहुको आगल वेठां ॥ गुरु उपदेश तणा मंदिरमां, जवियण हेते पेठां ॥ ३ ॥ धर्मोंद्यम कीजे रे प्राणी, सुणीए जिनवर वाणी ॥ अमिय समाणी सद्गुरु शिक्षा, धारीजें हित आणी ॥ ४ ॥ जाणेडे ए जीव विचारो, ठे सघलुं ए मोरुं ॥ पण अन्यंतर निरखी जोतां, शुं देखे ठे तोरुं ॥ ५ ॥ तात जातने मात सुता पति, ठे विपरीत सगाइ ॥ पण अंतर मेही मदमातो, तेणे रह्यो लयलाइ ॥६॥ पोतानो करी गणीयें जेहने, ते होवे साह्मो वेरी ॥ ठे संसार

तणी गति एहवी, वली गति कर्मह केरी ॥ ७ ॥
काची काच घटी समकाया, कूडी शी तस माया॥
पंथीपरें विसामो जगमें, कुण डुर्बल कुण राया ॥
॥ ८ ॥ छे संसार विचारी जोतां, बाजीगरनी बाजी
क्षणभंगुर अनित्य पदारथ, तो पण होवे राजी॥९॥
जेम वंध्याए सुहणे दीठो, जाणे सुत मुज आयो ॥
दीधुं नाम विश्वंभर एहनुं, हालरुए हुलरायो॥१०
जब सा जागी रोवा लागी, किहां गयो में दीठो ॥
ते जेम खोटुं तेम जग खोटो, पण विषया रस
मीठो ॥११॥ इंद्र जाल विद्या रमनारा, रवि सेवक
थइ फूफे ॥ अंगकरंग घणाघण वीरुआ, जाण तो
साचुं बूफे ॥ १२ ॥ नारी पति साथे पावकमां, पेसी
वलीसती थाये ॥ ए कूडुं तो नहीं केम साचुं, करीने
कोइथी गहायें ॥ १३ ॥ पाणीना परपोटा जेहवी,
जेम पाणीमांहे पतासो ॥ जेम काचो घट नीरें भ
रियो, तेवो देह तमासो ॥ १४ ॥ समकित विण ए
जीव विचारो, दोडे छे हा हुंतो ॥ एणे एकेही
नवि मूक्यो, एके ठाम अछूतो ॥ १५ ॥ करशे धर्म
ते सुखियां थाशे, दीधो एम उपदेश ॥ रोमांचित
सवि पर्षद हूई, थयो समकित उपवेश ॥ १६ ॥

नमया अति हरखी हइयामां, निसूणी वयण रसाल ॥ मोहनविजयें रूडी जांखी, सुडतालीशमी ढाल ॥ १७ ॥ सर्व गाथा.

॥ दोहा ॥

नमया तात तिणे समे, कर जोडी कहे एम ॥ मुझ पुत्री नमया सती, थइ वियोगिणी केम ॥ १ ॥ पूरवजव एणें किस्यां, कीधां कर्म अघोर ॥ जे एम इहां तिहां रडवडी, गुंझी त्रूटे दोर ॥ पाठांतरे गिरि वन गुहिर कठोर ॥२॥ गुरु कहे देवाणुप्रिय, सांजलो कहुं विरतंत ॥ तुझ पुत्री ठे महासती, गुण एहना ठे अनंत ॥ ३ ॥ कीधां कर्म न छूटीयें, विणजोग व्ये कहाय, पूरव जव नमया तणो, सांजलजो हित लाय ॥ ४ ॥

॥ ढाल अडतालीशमी ॥

वाधाराजा वनरी ॥ ए देशी ॥ गिरि वैताढ्य पचास जोयणनो, पोहलो तेह प्रमाण्यो हे ॥ ससनेही नमया पूरव जव उपदेशे, तेम उंचो पण वीश जोयणनो, आगम मांहि वखाण्यो हे ॥ ससनेही० ॥१॥ तास शिखरथी नर्मदा तटिनी, पसरी एह जलपूरी हे ॥ स० ॥ सायरपूर जली अवगणती, विमल कम

ले ससनूरी हे ॥स०॥ २ ॥ ए तटिनीनी हुती अधि
ष्ठाता, नर्मदानामे देवी हे ॥ स० ॥ रूडे रूपें रमऊ
म करती, कुसुम कुटुम्बे सुसेवी हे ॥ स० ॥ ३ ॥
एकदा नर्मदा नदी उपकंठे, धर्मरुचि मुनिराया हे
॥ स० ॥ निर्मल मन मुनिरह्या काउसग्गे, कोमल
कमल ज्यूं काया हे ॥ स० ॥४॥ लागे ताप तपननो
तातो, बूटे अति परसेवो हे ॥स०॥ एणीपरें वैराग्य
दशायें, चाखे तपनो मेवो हे ॥स०॥५॥ ऊनो ल्याई
ध्याननी ताली, नासायें दृग स्थापी हे ॥स०॥ मुनि
साक्षात्पणे प्रतिभासे, उपशम रसना व्यापी हे ॥
स०॥६॥ नर्मदा देवीये मुनिने दीठो, देखी रोष भ
राणी हे ॥ स० ॥ चिंते माहरा तटने कंठे, कुण ए
कुत्सित प्राणी हे ॥ स० ॥ ७ ॥ महेली काया
वली मेले कपडे, मुऊ तटिनी अभडावे हे ॥स० ॥
एहने वेहवरावुं वहेतां जलमां, दील मेलुं रीसावी हे॥
स० ॥ ८ ॥ मुनिने क्षोभवा देवी विरचे, वाघ सिंह
विकराल हे ॥ स० ॥ करी जंभाइ पुछ उछाली, ते
साहमी द्ये फाल हे ॥ स० ॥ ए ॥ थइ गज शुंडा दं
के ग्रहीने, मुनिने उंचो उछाले हे ॥ स० ॥ पण मुनि
अचल महाचलनी परें, ध्यानथी मन नवि टाले हे॥

॥ स० ॥ १० ॥ तव सा देवी मुनि मुख पेखी,चिंते केम नवि कंपे हे ॥स०॥ एम पराज्ञविये ठे तो पण, कडवुं वयण न जंपे हे ॥ स० ॥ ११ ॥ धन्य धन्य एहने ए हवी धीरता,सा पूठे कर जोडी हे ॥स०॥ कुंण तुं स्वा मी इहां केम ऊजो, कहो मुनि आमलो ठोडी हे ॥ स० ॥ १२ ॥ कहे मुनि अमें साधु जिणंदना, पंच म हाव्रतधारी हे ॥ स० ॥ ध्यान धरी ऊजा हुं सुंदर, निरखी ज़ूमिका सारी हे ॥ १३ ॥ देवी कहे अहो साहु शिरोमणि, खमजो मुज अपराध हे ॥ स० ॥ में तुमने एहवा नवि जाण्या, अबुद्धि जेम अगाध हे ॥ स० ॥ १४ ॥ मुनि कहे अमने क्रोध न होवे, खंति तणाउं अच्यासी हे ॥ स० ॥ एहये लेशे सां जव्युं नरगें, जे जीव सहे नरगावासी हे ॥ स० ॥ १५ ॥ नेही निस्नेही बिहु ठे सरीखा, अमें लेखवीयें एम हे ॥ स० ॥ जे जेहवुं करशे तेहवुं ते लहेशे, प ण अमे कोपूं केम हे ॥ स० ॥ १६ ॥ नमया देवी सु प्रसन्न थइने, सांजली वचन रसाल हे ॥ स० ॥ मो हनविजयें मीठी जांखी, अडताशमी ढाल हे ॥ स० ॥ १७ ॥ सर्व गाथा ॥

॥ दोहा ॥

नमया देवी आगले, कहे तपोधन ताम ॥ प्रा
णीने नवि पीडीयें, अहो सूरि विण काम ॥ १ ॥
दया सुधा कुंडी अछे, जगमांहि निःशंक ॥ तिहां म
ज्जन करतां मिटे, कल्मष तणूं कलंक ॥ २ ॥ काम
डुघा सम ए दया, इछित सुख दातार ॥ सकल ध
र्म अग्रेसरी, भांखे जगदाधार ॥ ३ ॥ दया विहूणा
बापडा, चउ गइ मांहे भमंत ॥ दया धारि शिव
नारिथी, अहोनिशि लील करंत ॥ ४ ॥ जे निर्दय
निठुर निगुण, ते केम लहेशे ठाण ॥ केम जलथी
आवे तरी, अति ऊंचो पाषाण ॥ ५ ॥ सदयी जे
वि नीचे गई, पामे पण शिव होय ॥ भारें बूडे
तुंबिका, पण आवे तरि सोय ॥ ६ ॥

॥ ढाल ओगणपचासमी ॥

मागे मह्डिारो दाण, धूतारडो मागे मह्डिारो
दांण ॥ ए देशी ॥ सुंदर दे उपदेश, रे मुनीश्वर
सुंदर दे उपदेश ॥ सुललित मीठी वाणी रे, जयं
कर टालें दुरित कलेश ॥ जीव सयलनो सारिखो
रे, कीडी तेम मातंग ॥ थोडे घणें पुदगलें थयुं,
इहां नाहनुं मोटुं अंग रे ॥ सुं० ॥ १ ॥ आलया

हुंती उरडे रे, उरडाहूंती गेह ॥ इयत्तावछिन्न अ जुआलडुं, पण दीपक तेहनो तेह ॥सुं०॥ २ ॥ पूरा ए सहेजें गले रे, एतो पुद्गल धर्म ॥ पण जो ह णीए हाथथी, ते तो बांधे निकाचित कर्म रे ॥ सुं० ॥ ३ ॥ जोगद विहु इंद्रीतणा, एम जांखे जि नराय ॥ द्रव्येंद्रिया, जावेंद्रिया, वली द्रव्यथी जेद वे थाय रे ॥ सुं० ॥ ४ ॥ जावेंद्रिया वे जेद थी, लब्धि तथा उपयोग ॥ लब्धि कहीयें तेहने, जे होये आचरण वियोग रे ॥ सुं० ॥ ५ ॥ उपयो गथी जावेंद्रिया रे, एगंदियादिक जीव ॥ पंच विषय तजतपणे, ते अनुजवे अतुल आ जीव रे ॥सुं० ॥ ६ ॥ जेम कन्या जूषण सजी रे, तुरग प्रति आरूढ ॥ वदन जरी तांबूलथी, सा संचरी होय अमूढ ॥ सुं० ॥ ७ ॥ आवे जिहां कूपक जस्यो रे, पारदनो द्युतिवंत ॥ तस उपकंठे जजी रहे, सुख मधुरो शब्द कहंत ॥ सुं० ॥ ८ ॥ शब्द सुणी क न्या जणी रे, ग्रहवाने रसराय ॥ दोडे उपांग विना तिहां, एम उपयोग इंद्रिय कहाय रे ॥ सुं० ॥ ९ ॥ वली बकुलादिक वृक्षने रे, सिंचे गंगातोय ॥ पण मदिरा सिच्या विना, तस कुसुम कुरंब न होय ॥

सुं० ॥ १० ॥ एकेंद्रिय उपयोगथी रे, जाणजो सुख दुःख एम ॥ जास करण वधतां हूइ, तेह जाणे नहिं कहो केम रे ॥ सुं० ॥ ११ ॥ मनमें करुणा राखियें रे, सेवीजें मुनिलोय ॥ चिंतामणि सेवीजे तो, अर्थिने सुप्रसन्न होय ॥ सुं० ॥ १२ ॥ चोथुं शौच दया तणुं रे, सहु कोय पूरे साख ॥ ते माटे कहुं बुं सूरि, मनमांहे दया तुं राख रे ॥ सुं० ॥ १३ ॥ अमे उपशम संयम धरु रे, क्रोध न करुं तिलमात्र ॥ क्रोधी क्रोध करंतडां, वणसाडे प्रीतिनुं पात्र रे ॥ सुं० ॥ १४ ॥ क्रोध शमे धरतां क्षमा रे, खंतें क्रोध न थाय ॥ तृण विण मंरूलें जइ पड्यो, पण आफूरडो अग्नि उलाय रे ॥ सुं० ॥ १५ ॥ नमया देवी मुनितणा रे, लळि लळि प्रणमे पाय ॥ अहो तपसी कीजें नलो, मुऊ ऊपर कोय पसाय रे ॥ सुं० ॥ १६ ॥ सोंपी समकित वासना रे, देवी नणी हित लाय ॥ ढाल उंगणपच्चासमी, कही मोहनविजयें बनाय रे ॥ सुं० ॥ १७ ॥ सर्व गाथा. ॥

॥ दोहा ॥

सा देवी उपदेशथी, अतिही थइ प्रवीण ॥ साधु अवज्ञाथी कहो, शुं शुं होशे प्रक्षीण ॥ १ ॥ दे

वी साधु पराजवें, निर्धन निगुण सरोग ॥ इह जव परजव ते लहे, वाहलातणो वियोग ॥ २ ॥ साधु अवज्ञा फल सुणी, कंपी सुरी अतीव ॥ पातक ए विण जोगव्यां, केम बूटशे जीव ॥ ३ ॥ सा नमया देवी चवि, मणुअ लोग जपन्न ॥ नामे नमया सुंदरी, महासती धन्य धन्य ॥ ४ ॥ पूर्वे कर्म अकी एणें, पाम्यो कंत वियोग ॥ विकल थई वन वन जमे, पुनरपि थई अशोग ॥ ५ ॥ नमया पूरव जव सुणी, थइ मूर्छागत एम ॥ दीठो पूरव जव जलो, सुगुरु जांख्यो जेम ॥ ६ ॥

॥ ढाल पचासमी ॥

कान्हजी मेहलोने कांवली रे ॥ ए देशी ॥ नमया आवी मंदिरें रे, मुनिनी सुणी वाणी ॥ मनथी मांझी विचारणा रे, जो जो कर्म कहाणी ॥ १ ॥ हुं वलिहारी सुगुरुनी रे ॥ जेह जन दरिसण पामे, रहे अलगा संसारथी रे ॥ विषय जालने सामे ॥ हुं ॥ ॥ २ ॥ सदन संबंधि सहोदरा रे, तेहथी खोटी शी माया ॥ स्वारथनां सहु को सगां रे, नवि कोइ एना कहेवाया ॥ हुं० ॥ ३ ॥ वाहलाहूंती वाहलोरे, तेजो माहरो न हुवो ॥ बीजो तो कोण होयशेरे, कर्मनी

गति ए जुवो ॥ हुं० ॥ ४ ॥ दावानल जेम परजले रे, एह संसार असारो ॥ अलगो रहे ते ऊगरे, नहिं तो नहिं कोइ आरो ॥ हुं० ॥ ५ ॥ एहमां जो संजम आदरुं रे, खरुं एह छे जोतानुं ॥ आग व लंतें कूपडे रे, निकल्युं ते पोतानुं ॥ हुं० ॥ ६ ॥ ता तने नमया विनवे रे, द्यो मुजने आदेश ॥ जो अनु मति होय तुम तणी रे, तो ग्रहुं मुनिनो वेश ॥ हुं ॥ ॥ ७ ॥ तृप्त थइ नव नोगवी रे, नथी हुं अणतृप्ति ॥ पामि परीक्षा सहु तणीरे, एम वचनें प्रीछवती ॥ हुं०॥ ८ ॥ तात कहे नमया नणी रे, श्यो छे अवसर ताहरो ॥ जेह तुं संयम आदरें रे, मोह छांमीने मा हरो ॥ हुं० ॥ ए ॥ संयम छे अति दोहिलो रे, नथी खेल हांसीनो ॥ जेम वेगो मणिधर रे, जेम अ तुल खजानो ॥ हुं० ॥ १० ॥ कोइ दांते मीणने रे, लोहचणा चावे ॥ संयम वेलु कवल जिस्यो रे, नीर सो कोने नावे ॥ हुं० ॥ ११ ॥ लेवोछे मणि वासुकी तणो रे, नरवी आज्ञथी बाथ ॥ कोपातुर मृगपति तणा रे, मुखें घालवो हाथ ॥ हुं० ॥ १२ ॥ खड्गनी धारा उपर रे, होंशे कहो कोण चाले ॥ विफरिया वनगज नणी रे, पंगू नर किम झाले रे ॥ हुं०॥१३॥

ए जेम सघलुं दोहिलुं रे, तेम संजम छे तेहवो ॥
वेगां वेगां उपन्यो रे, केम वैराग्य एहवो ॥ हुं०॥१४॥
ग्रीष्म ऋतुने तावडे रे, अणुवाणे पगे फिरशो ॥ काय
सुकोमल एहवी रे, केम गोचरी करशो ॥ हुं० ॥ १५
बावीश परिसह आकरा रे, ते केम करी सहेशो ॥
चार महाव्रत पांचनो रे, केही विधें वहेशो ॥ हुं० ॥
॥ १६ ॥ योग युक्तिनी योजना रे, योगेश्वरें तेने
जाणी ॥ मोहनविजयें पचासमी रे, वारु ढाल व
खाणी ॥ हुं० ॥ १७ ॥ सर्व गाथा ॥

॥ दोहा ॥

रण रसिया रणमंडलें, पाछा न दिये पाय ॥ नि
रति संयम पालवा, हाम तेणे न चलाय ॥ १ ॥ संयम
तो सुरगिरि शिखर, उंचो अपरंपार ॥ तिहांथकी
जे कोइ लडथड्या, भूला भमे संसार ॥ २ ॥ मटक
विरागी होयतां, संयम तो न पलाय ॥ बाजीगरना
नृपतिसम, राज्य किंतो निवहाय ॥३॥ संयम सोहिलो
जो हुवे, तो सहु पाले एम ॥ तरुण भाव संयम
पणे, संय्यम ग्रहशो केम ॥ ४ ॥ बोली नमया सुं
दरी, अतिभूखो परिणाम ॥ संयम लेतां वारीयें,
ए नाहिं उत्तम काम ॥ ५ ॥ बालक चीहान्यो रहे,

अज्ञाने करी एम ॥ पण संयम रसलालची, वचनें बीहे केम ॥ ६ ॥

॥ ढाल एकावनमी ॥

चंदनरी कटकी चली ॥ ए देशी ॥ संसारनां सुख दाखवी, शुं चोलावो छो तात, मनडुं हो राज, सुगुण संयम पर माहरुं ॥ मूरखनुं हित कां करो, किजे पंडित बोल ॥ म० ॥ सु० ॥ १ ॥ रोगी कडवे औषधें, निश्चें होय नीरोग ॥म०॥ पण मीठा आहारथी, केम नीरोगनो योग ॥ म० ॥ सु० ॥ ॥ २ ॥ कर्मतणो रोग टालवा, संयम औषध जेम॥ म० ॥ पण मीठो नाकारडो, करमनें कहीयें केम ॥ म० ॥ सु० ॥ ३ ॥ चाले जे बुद्धि पारकी, ते सम मूढ न कोय ॥ म० ॥ करीयें जे मन साखि द्ये, तो तो मनवांछित होय ॥ म० ॥ सु० ॥ ४ ॥ हुं संयम अरथी थइ, लेइश संयम भार ॥ म० ॥ तुम वचनें चालुं हवे, तो कुण होय आधार ॥ म० ॥ सु० ॥ ॥ ५ ॥ तात आगल नमया कहे, श्लोक अनुपम एम ॥ म० ॥ चारित्रथी राची थकी, आणी परम विवेक ॥ म० ॥ सु० ॥ ६ ॥ तत्त्वातत्वविचाराय, स्वैव बुद्धिःक्षमा नृणां ॥ परोपदेशो विफलो, यथाऽ

सौधनदत्तवत् ॥ १ ॥ पूर्वढाल ॥ तात कहे नमया
जणी, ते कुंण हतो धनदत्त ॥ म० ॥ कहे सूऊने
समऊाववा, एम कहे उत्सुत्त ॥ म० ॥ सु० ॥ ७ ॥
खोटुं जाखुं केम पिता, साचो बे तेह संबंध ॥ म०
तात आगल नमया कहे, धनदत्तनो संबंध ॥ म० ॥
सु० ॥ ७ ॥ नयर विशाला सुंदरुं, तिहां वसतो,
धनदत्त ॥ म० ॥ लछी परिगल मंदिरें, यौवन वय
उन्मत्त ॥ म० ॥ सु० ॥ ए ॥ तात जरातुर तेहनो,
अवयव थयो बलहीन ॥ म० ॥ उपनी मस्तक वे
दना, तेणें तेह जांखे दीन ॥ म० ॥ सु० ॥ १० ॥
तेड्यो तेणे धनदत्तने, बेसाड्यो निज पास ॥ म० ॥
फुःख निवेद्युं पुत्रने, सुत सुणि करिय विखास ॥
म०॥सु० ॥ ११ ॥ तात जरातुर तरफडे, पण शाता
नवि पामंत ॥ म० ॥ धनदत्त तात फुःख देखीने,
गदगद कंठे कहंत ॥ म० ॥ सु० ॥ १२ ॥ रेरे तात
तुमारडी, केही अवस्था एह ॥ म० ॥ जे कांइ मन
डामें हुवे, कहो तेम करीयें तेह ॥ म० ॥ सु० ॥
॥ १३ ॥ कांइ एम फुःख जोगवो, कहो जे हूइ
वात ॥ म० ॥ वचन सुणी धनदत्तनां, मंद स्वरें
कहे तात ॥ म० ॥ सु० ॥ १४ ॥ रे सुत में धन मे

लव्युं, ते करी कूड प्रपंच ॥ म० ॥ लछी छे पापानु बंधनी, एहमां नहीं खलखंच ॥ म० ॥ सु० ॥ १५ ॥ में लछी नवि वावरी, सातें क्षेत्र मझार ॥ म० ॥ ते लछी शा कामनी, जो नवि हुवे उपगार ॥ म०॥ सु० ॥ १६ ॥ विलसी हिज लछी जली, जाणे बाल गोपाल ॥ म० ॥ मोहनविजयें वर्णवी, एकावनमी ढाल ॥ म० ॥ सु० ॥ १७ ॥ सर्व गाथा.

॥ दोहा ॥

बोली जूगां मोटकां, में ए मेल्या दाम ॥ पण ए साथे कोइने, नवि आया विरजाम ॥ १ ॥ सोवन डुंगरियो करी, लोभीजनें अनंत ॥ पण एक कटको हेमनो, लेइ न गयो कोइ संत ॥ २ ॥ कूपक जलने द्रव्य ए, नित नित जेम ववराय ॥ तेम तेम बिहु खूटे नही, शास्त्रें एम कहाय ॥ ३ ॥ ते कारण अंगज तमे, धन जे आपणे गेह ॥ सुकृतने वासें सदा, वावरजो धरि नेह ॥ ४ ॥ जो धन वावरशो तमे, तो गति लहेशो जीव ॥ नहिं तो तुमने सांजलो, परितापीश सदेव ॥ ५ ॥ धनदत्त नाम कहे पिता, मनमां हुउ प्रसन्न ॥ धर्म ठाम तुम मेलवुं, वावरशुं ए धन्न ॥ ६ ॥

॥ ढाल बावनमी ॥

केसर वरणो हो काढी कसुंबो माहरा लाल ॥ ए देशी ॥ सुतने वयणे हो जनक प्रसन्नो, माहरा लाल ॥ ते सुरलोकें हो तुरत उपन्नो ॥ माहरालाल ॥ कांति अनोपम हो सुरपुर भूपण ॥ मा० ॥ निर्मल देहीहो, नहीं को दूषण ॥ मा० ॥ १ ॥ धनदत्त हियडे हो, ताम विचारे ॥ मा० ॥ कोइ गति तातें हो, कृत स्वीकारे ॥ मा०॥ जगस्थिति दीसे हो, अरघटमाला ॥ मा० ॥ उपजे विणसे हो, वस्तु विशाला ॥ मा० ॥ २ ॥ पण मुझ तातनुं हो, विण संभार्युं ॥ मा०॥ दान प्रचारूं हो, कुल अजुवालुं ॥मा०॥ जे गयो परघर हो, फेर न आवे ॥ मा० ॥ धनदत्त मनडुं हो, एम समजावे ॥ मा० ॥ ३ ॥ अवनीतलमांहे हो, जे धन हुंतु ॥ मा० ॥ एणे बाहिर हो, कीधुं अछुं तुं ॥ मा० ॥ शत्रुकारें हो, ते धन खरचे मा० ॥ उलट अधिको हो, पण नवि विरचे ॥मा०॥ ॥ ४ ॥ साते क्षेत्रे हो, अति धन वावे ॥ मा० ॥ पूर्व कमाणी हो, सबल उपावे ॥ मा० ॥ तेणे नाकारो हो, मुखथी न सार्यो ॥ मा० ॥ कृपणपणाने हो, दूर निवार्यो ॥ मा० ॥ ५ ॥ वेहेंता जलधि हो,

ये बेहु सरीखो ॥ मा०॥ आवे ते कनेहो, अर्थी आ
कर्यों ॥ मा० ॥ प्राप्ति जेहवी हो, तेहवुं पामे ॥मा०॥
पण नवि वारे हो, तेवहु आमे ॥ मा०॥ ६ ॥ कीर्ति
प्रसरी हो, धनदत्त केरी ॥ मा०॥ वाजे जगमां हो,
कीर्ति भेरी ॥ मा० ॥ सोखी हरखे हो, कीर्त्ति कसके
मा० ॥ दोषी नर ते हो, देखी न शके ॥ मा० ॥७॥
विप्र महोदय हो, एहवे नामें ॥ मा० ॥ अति खल
निवसे हो, तिणहिज गामे ॥ मा० ॥ धनहत्तसाथे
हो, करी मित्राइ ॥ मा० ॥ वातें रीझवे हो, करी
पवित्राइ ॥ मा० ॥ ८ ॥ खलने मलतां हो, वार न
लागे ॥ मा० ॥ काम सस्यार्थी हो अलगो भागे ॥
मा० ॥ गरल अपूरव हो, खल निर्वासे ॥ मा० ॥
श्रवण पहोते हो, विष प्रतिभासे ॥ ए ॥ विप्र प्ररू
पे हो, मित्र महारा ॥ मा० ॥ अमे शुभ वांछक हो,
अहोनिश तहारा ॥ मा० ॥ तुझ सुख सुखिया हो,
पुण्य पवाडे ॥ मा० ॥ होय जो कूवे हो, आवे अ
वाडे ॥ मा० ॥ १० ॥ एम धन उपरे हो, कां तुं
रूठो ॥ मा० ॥ पुंठ विचारी हो, जोय अपुंठो ॥मा०॥
जो धनधोरणि हो, ताहरे होशे ॥ मा० ॥ तो तुज
साहमुं हो, कोइ जोशे ॥ मा० ॥ ११ ॥ धनविण

मानव हो, कोडि न पावे ॥ मा० ॥ साहमा सधनी हो कोडि उपावे ॥ मा० ॥ निर्धन नरने हो, कोइ न धीरे ॥ मा० ॥ धनने आदर हो, सहु को उदीरे॥ ॥ मा० ॥ १२ ॥ उरगकलेवरहो, कोथी होवे ॥मा०॥ पण निर्धनने हो, कोइ न जोवे ॥ मा० ॥ पुरुष विभूपण हो धन कहेवाये ॥ मा० ॥ प्रभुता विभुता हो धनथी थाये ॥ मा० ॥ १३ ॥ धन विहु अक्षर हो, पण गुण मोटो ॥ मा० ॥ धनवंत साचो हो, बीजो खोटो ॥ मा०॥ प्रभु निर्द्रव्ये हो एकज पूजाये ॥ मा० ॥ पण नर बीजो हो द्रव्य सराये ॥मा० ॥ १४ ॥ पूरवपुण्ये हो, तुं धन पायो ॥ मा० ॥ राखी न जाणे हो, कोय ठगायो ॥ मा० ॥ देतां न कहे हो, कोइ नाकारो ॥ मा०॥ धन सहु वांछे हो, आप पियारो ॥ मा० ॥ १५ ॥ मित्रविहुणो हो, इम कुण कहेशे ॥ मा० ॥ रूडुं भुंडुं हो, तुं निवेदेशे ॥मा०॥ मारी शिक्षा हो, धनदत्त मानो ॥ मा० ॥ एम कही वाडव हो, रहियो छानो ॥मा०॥१६॥ धनदत्त मनमां हो,एम विचारे ॥मा०॥ दान देयंतो हो,कोइ न वारे ॥मा०॥ भांखी रूडी हो, ढाल बावनमी ॥ मा० ॥ मोहनविजये हो, विनयत अनमी॥ मा० ॥ १६ ॥

॥ दोहा ॥

ए वाडव माहरो खरो, नेही इण संसार ॥ धन पण कांइ नथी मागतो, कहे छे हित उपगार ॥ १ ॥ एणे मुझ साचुं कह्युं, हुं तो दीउंछुं दान ॥ पण धन विहूणा नर हुवे, नीरस तरण समान ॥ २ ॥ धनदत्त ब्राह्मण वचनथी, परिहर्युं देवुं दान ॥ लोभ दशा पसरी खरी, नीचसंगति निदान ॥ ३ ॥ संगति उत्तम कीजीयें, तो थइये वरवीर ॥ परिखा जल गंगा गयुं, तो थयुं गंगानीर ॥ ४ ॥ जो जो संगति नीचथी, आपद असी अमेल ॥ जो खलसंगति आदरे, तो निष्फल नागरवेल ॥ ५ ॥ धनदत्त धन ढगला करी, राख्या मंदिरमांहि ॥ नाकारो शीख्यो फरी, विप्र वचनथी त्यांहि ॥ ६ ॥

॥ ढाल त्रेपनमी ॥

सासू पूछे वहु वात ॥ लाला किहां छे रे, ए देशी ॥ मूर्ख मित्रनी वातो रे, कहो कुण माने रे ॥ एक अज्ञानिनी टोली रे, करे कुण काने रे ॥ ए आंकणी ॥ धनदत्त ब्राह्मणथी भरमाणो, वाहला मारा नवि मनमें शरमाणो ॥ लाज तजी तेणे वात न राखी, यशनो रत्न गमाणो रे ॥ क० ॥ १ ॥

दान देयंतें वधती हुंती, लछी परिगल गेहें रे, दान निवारे धनदत्त साथें, लच्छी थइ निःस्नेही रे ॥ क० ॥ २ ॥ दानें लछी होय मद माती, विण दानें कृश थाये रे ॥ भोजनथी तनु पुष्ट होय तेम, भोजन विण न चलाये रे ॥ क० ॥ ३ ॥ मणि माणिकने सोनुं रूपुं, एहथी रीशें भराणां रे ॥ श्याम वर्ण कोपें धग धगता, हुइ अंगार समाणा रे ॥ क० ॥ ४ ॥ जलवट थलवट केरी लछी, तिणे ग ति जलनी कीधी रे ॥ जो जो धन दत्त मूढ पणाथी, दरिद्रीने साह्य दीधी रे ॥ क० ॥ ५ ॥ सुगुण सहो दर सयल सनेही, तेणे पण हित चोख्खुं रे ॥ दीठुं तिहां तेणे धनदत्त द्वारें, दान विटपि विण मोख्खुं रे ॥ क० ॥ ६ ॥ धनदत्त निर्धनने वशे भोलो, भ मतो पुरमां लाजे रे ॥ पूर्व लाज अठे धनदत्तनी, जेह करे ते गाजे रे ॥ क० ॥ ७ ॥ विप्र म होदय एहवे अवसर, धन दत्त मंदिर आव्यो रे ॥ निर्धन दीठो तेणे नयणे, सान करी समजाव्यो रे ॥ क० ॥ ८ ॥ एह शी सूरि जन ताहरी अ वस्था, ए शुं दैवें कीधुं रे ॥ रोहण शैल समो रय णायर, पुंज उलाली दीधो रे ॥ क० ॥ ए ॥ नेत्र

सजल थइ धनदत्त बोल्यो,रे रे मित्र शुं कहीये रे ॥ अंतरगतनी कहो कुण जाणे, जेह लख्युं ते लहीयें रे ॥ क० ॥ १० ॥ वाहला मित्रजी जइयें परदेशें, तिहां जइ उदर भरीशुं रे ॥ शुं करीये कहो केहने कहीयें, मूल मजूरी करीशुं रे ॥ क० ॥ ११ ॥ देशें चोरी विदेशे भिक्षा, एहवो बोल्यो उखाणो रे ॥ पण एकलडां केम सुहाये, हियडे विचारी जाणोरे॥ क० ॥ १२ ॥ विप्र कहे सुण धनदत्त भाई, एकलडो केम छोडुं रे, जो कांइ काम पडे जो ताहरे, शीषसहित तनु ओडुं रे ॥ क० ॥ १३ ॥ पण तुं माहरा कथनमां रहेजे, धनदत्त कहे पण वारुरे ॥ ते बेहु चाल्या परदेशे, पेट भराइ सारु रे ॥ क० ॥१४॥ मूकी देश विदेशे पोहता, धनदत्त वाडव साथें रे ॥ पण कोइ उद्यम संपति केरो, नावे तेहने हाथेंरे ॥ क० ॥ १५ ॥ जे जे वाडव विधि प्रकाशे, धनदत्त तेह विधि चालेरे॥ पण पूर्वापर ते न विचारे,पाछो उत्तर नालेरे॥ १६ ॥ जो जो भमया ए दृष्टांतें, तात भणी समजावे रे॥अतिहि सुललित ढाल त्रेपनमी, मोहन कही समजावे ॥ क० ॥ १७ ॥ सर्वगाथा ॥

॥ दोहा ॥

एक दिन वनमां चालतां, तृषावंत धनदत्त ॥ मित्रकने मागे तिहां, पय पीवाने ऊत्त ॥१॥ मित्र कहे इहां वेश्य तुं, हृदय धरीने धीर ॥ वनमांहें सरवर थकी, लेइ आवुं हुं नीर ॥ २ ॥ वेसाडी धनदत्तने, कोइक तरुवर गंहि ॥ विप्र मित्र जल कारणे, गयो गहन वनमांहि ॥ ३ ॥ न मिल्युं जल ते विप्रने, चिंते मनमां ते एम ॥ विण पाणी निज मित्रने, वद न देखाडुं केम ॥ ३ पूठलथी धनदत्त हवे, मित्र तणी जोइ वाट ॥ जल नाव्युं दीठुं तेणे, चिंते हृदय निपाट ॥ ५ ॥ हलूये ऊव्यो तिहां थकी, एकाकी धनदत्त॥ वनमांहे जूलो ज्रमे,जिम करिवर उन्मत्त॥६॥

॥ ढाल चोपन्नमी ॥

मूजरो ल्योने जालिम जाटणी ॥ ए देशी ॥ धनदत्त जोलो जी वनमां ज्रमे, करवा विप्रनी शुद्धि ॥ तुमें फल जो जो नीचसंगति तणां ॥ ए आंकणी ॥ संगति नीचनी होये अलखामणी, प्राये निर्धन निर्बुद्धि ॥ तु० ॥ १ ॥ वनमें पारधीया खेटक रमे, ठाना मांडीने फंद ॥ ताणे व्राण ते मृगवध कारणे, वेठा ते मतिमंद ॥ तु० ॥ २ ॥ मृग पण आव्या तृण च

रता तिहां, पारधी फंद नजीक ॥ एहवे धनदत्ते ते अजाणते, कीधी उत्तम ठींक ॥ तु० ॥३॥ ठीकें नाठा ते मृग पाठा फस्या, दोड्या पारधि ताम ॥ रुष्या बोले मृग केणे त्रासव्या, कर्यु केणे वैरीनुं काम ॥तु०॥४॥ धनदत्त दीठो पारधीये तिहां, पकड्यो दोडीने ताम॥ नाख्यो मेदिनी लात प्रहारथी, कीधो हृदय अकाम तु० ॥ ५ ॥ रे रे फंद पड्या मृग त्रासव्या, तेहनां यह फल जोय ॥ बांधी चाल्याजी तरु शाखांतरें, पारधी न रह्यो जी कोय ॥ तु० ॥ ६ ॥ धनदत्त आफले बल घणुं करे, ढोडी न शकेजी बंध ॥ कीणही वाटाउयें नवि तस दीठडो, कुसुम जिस्यो निर्गंध॥ तु० ॥ ७ ॥ एहवे वाडव वारि लेइ करी, आव्यो प्रथम तरुपास ॥ तेणे नवि दीठो तिहां धनदत्तने, तव ते करेजी विखास ॥ तु० ॥ ८ ॥ अनुपम दीठो ते धनदत्तने, तव ते दीठो बांध्यो जी मित्र ॥ केणे माहरो मित्र पराभव्यो, कांइक दीसे ठे चरित्र ॥ तु० ॥९॥ ढोड्यो मित्रने शाखाथकी, पूब्यो बंधविचार ॥ धनदत्त नांखेजी वाडवआगलें, व्याध तणो अधिकार ॥ तु० ॥ १० ॥ नांखे वाडव धनदत्त आगलें, एम नवि कीजें अबूक ॥ पुरबाहेर नर देखी तिहां, बोलीयें न

हीं कहुं तुज ॥ तु० ॥ ११ ॥ दीठे मारग सीधा चा लीयें, तो कुण दूहवे एम ॥ मान्युं धनदत्तें कह्युं विप्रनुं, चाल्या आगल जेम ॥ तु० ॥ १२ ॥ आव्या कोइ पुरवर परिसरें, दीठुं सरोवर एक ॥ रजक निहाळ्यो वस्त्र तिहां धोवतां, धनदत्त चिंते विवेक ॥ तु० ॥ १३ ॥ हलूए हलूए सरोवर संचर्यो, केडें रह्यो कांइ विप्र ॥ दीठो रजकें धनदत्त आवतो, साहमो दोड्यो जी क्षिप्र ॥ तु० ॥ १४ ॥ पकड्यो रजकें धनदत्तने, तथा रजक कहे मुख एम ॥ दिवस घणानो करतो तस्करी, पकड्यो जाइश केम ॥ तु०॥१५॥ काले लेइ गयो वस्त्रनी ग्रंथिका, वली तुं आव्यो छे आज ॥ चोरनुं वितक तुजने वितावशुं, वलशे त्यारे तुज लाज ॥तु०॥१६॥ रजकवचनें धनदत्त चिंतवे, हुं कुण चोर छे कुण ॥ मोहनविजयें ढाल चोपन्नमी, पभणी परम अनूण ॥ तु० ॥ १७ ॥ सर्व गाथा.

॥ दोहा ॥

रे रजक कुंण चोर छे, माहरुं धनदत्तनाम ॥ नगरी विशालायें रहुं, व्यापारी अभिराम ॥ १ ॥ दैववशें इहां हुं आवियो, अणबोल्यो इण ठाम ॥ मित्र महोदय कथनथी, कीधां सवि आयाम ॥ २ ॥ विप्र

महोदय पण तुरत, आव्यो सरोवर पाल ॥ मुकाव्यो बंधन थकी, धनदत्तने सुविशाल ॥ ३ ॥ तिहांथी विहु नेही निगुण, पाम्या एक कांतार ॥ विण संबल विलखा जमे, धन विण कवण आधार ॥ ४ ॥ वन फुल फल सुवृक्षनां, तेह तणो आहार ॥ धनदत्त तात तणो हवे, सांजलजो अधिकार ॥ ५ ॥ प्रथम स्वर्गें थयो देवता, थयुं जे अवधिज्ञान ॥ पूरवजव दीठो तिणे, प्रगट त्रिदश विज्ञान ॥ ६ ॥

॥ ढाल पंचावनमी ॥

थाहरा मोहला ऊपर मेह, ऋरूखे वीजली ॥ ए देशी ॥ देखी विलोकें ताम, अवधि ज्ञाने करी ॥ हो लाल ॥ अ० ॥ दीठो धनदत्त पुत्र, पूरव जव अनुस री ॥ हो० ॥ पू० ॥ ऐ ऐ माहरुं वेण, निवाही नवि शक्यो ॥ हो० नि० ॥ दानांगणवड वीर थइने, नवि टक्यो ॥ हो० ॥ थ० ॥ १ ॥ वाडव वयणें एह, जोला णो बापडो ॥ हो० ॥ जो० ॥ वनचर परें वनमांहि, फरे ठे ऊफाफलो ॥ हो० ॥ फ० ॥ मूढ पराइ बुद्धें, लहे अप ज्राजना ॥ हो० ॥ ल० ॥ हजीय नथी कर तो ए, हृदय आलोचना ॥ हो० ॥ ह० ॥ २ ॥ सम जावुं धनदत्त, ऊपाय कोइक रची ॥ हो० ॥ ऊ० ॥

ए पण दुर्जन संग, रह्यो छे अति पची ॥ हो० ॥ र० ॥ एम आलोची देव, विमान तजी करी ॥ हो० ॥ वि० ॥ आव्यो वनह मझार, प्रबोध रसें जरी ॥हो०॥प्र०॥३॥ फोरवी शक्ति सुरंग, थयो व्यवहारियो ॥ हो० थ० ॥ दिव्य वसन द्युतिमंत, शृंगारें शृंगारिउ ॥ हो० ॥ शृं० ॥ पोठ जरी तिहां रयण, तणि तेणे सांमटी ॥ हो० ॥त०॥ पड्स्यां ढलतां वस्त्र, सुरंग सूधां हठी ॥ हो० ॥ सु० ॥ ४ ॥ रुप अनोपम तास, इस्यो देवे कर्यो ॥ हो० ॥ इ० ॥ वेगे द्रह उपकंठ, सुजरनीरें जर्यो ॥ हो० ॥ सु० ॥ हरि नव पल्लव गुछ, तणा कुंजांकुरा ॥ हो० ॥ त० ॥ परिमल मुखरित भूरि, सलूणा मधुकरा ॥हो०॥स० ॥ ५ ॥ सुर जोवे धनदत्त, तणी तिहां वाटडी ॥ हो० ॥ त० ॥ हजीय न आव्यो मूढ, कुसंगी प्रीतडी ॥ हो० ॥ कु० ॥ हूउ ते धनदत्त, तृषातुर एहवे ॥ हो० ॥ तृ० ॥ दीठो दूरथी तेह, जर्यो द्रह तेहवे ॥ हो० ॥ ज० ॥ ६ ॥ दोडी आव्यो नीरहेतें, ते द्रह ऊपरे ॥ हो० ॥ ते० ॥ जेम कीधुं जलपान, बोलाव्यो ते सुरें ॥ हो० ॥ बो० ॥ रे रे वटाउ पंथ, जुल्यो शुं आवियो ॥ हो० ॥जु०॥ दीसे छे तुं कुलवंत, तो कां

एम जावियो ॥ हो० ॥ तो० ॥७॥ बेसो इहां विश्राम, करीने जाय जो ॥ हो० ॥ क० ॥ वचन उलंघी मुज, गमार न थाय जो ॥हो०॥ग०॥ धनदत्त तास वचन, रह्यो धीरज धरी ॥ हो० ॥र०॥ जो जो विबुधें ताम, विबुधता शी करी ॥हो०॥ वि० ॥ ८ ॥ धनदत्त देखे तेम,सुरेश्वरहित धरी॥हो०॥सु०॥ नाखी द्रह मांहि रयण, अंजलि जरी जरी ॥हो०॥अं०॥ एम असमं जस देखी, कहे धनदत्त इस्युं ॥हो०॥क०॥ रे व्यव हारी ए काम, करे ठे तुं किस्युं ॥हो०॥क०॥ ए ॥ दे खी पेखी रयण, द्रहे केम नाखीयें ॥ हो० ॥ द्र० ॥ सुख दुःख द्रव्यने काज, सवे हुं साखीए ॥ हो० ॥ स० ॥ के कोइ प्रेत विशेष, थयो ठे तुज ने ॥ हो० ॥ थ० ॥ जे कांइ हृदयमें वात, हूवे ते कहो मुजने ॥ हो० ॥ हू० ॥ १० ॥ बोलोठो काह्यां वेण, करो कां ग्रथलता ॥ हो० ॥ क० ॥ उपहासीथी केम, तमे नथी बीहता ॥ हो० ॥ त० ॥ तव सुर बोल्यो एम, वचन रचना करी ॥ हो० ॥ व० ॥ रे पंथी वड वीर, कहुं तुज हित धरी ॥ हो० ॥ क० ॥ ११ ॥ हुं बुं सारथवाह, रयण संग्रह घणो ॥ हो० ॥ र० ॥ एक ठे माहरे मित्र, योगींद्र सोहामणो

॥ हो० ॥ यो० ॥ तेणे मुऊने रत्न देखी, कह्युं एहवुं ॥ हो० ॥ क० ॥ माने माहरो बोल, तो हुं तुऊने कहुं ॥ हो० ॥ तो० ॥१२॥ ए वन गहन मऊार, एह ऊह रूयडो ॥ हो० ॥ ए० ॥ सुंदर सलिल गंजीर, पद्म ऊह जेवडो ॥ हो० ॥ प० ॥ तास तणे उपकंव, रयण लेइ नाखियें ॥ हो० ॥ र० ॥ अंजलि जरी जरी कोटिश, तेहमें नाखिये ॥ हो० ॥ ते० ॥ १३ ॥ एक वरस मर्यादि, लगण तिहां स्थिर करी ॥हो०॥ ल० ॥ प्रगटे ऊहथी ताम, रयणनी डुंगरी ॥ हो० ॥ र० ॥ मित्र वचनथी आज, इहां हुं आवियो ॥ हो० ॥ इ० ॥ सयल रयणनो पुंज, ऊहांतरे नाखियो ॥ हो० ॥ ऊ० ॥ १४ ॥ होशे रयणनो शैल, प्रजा कर रूयडो ॥ हो० ॥ प्र० ॥ साचो माहरो मित्र, कहे केम कूयडो ॥ हो० ॥ क० ॥ बोल्यो धनदत्त ताम, घणो पुलकित थइ ॥ हो० ॥ घ० ॥ ताहरी सारथ वाह, कहुं केम बुद्धि किहां गइ ॥ हो० ॥ क० ॥ १५ ॥ कहिं ऊहमां रत्न, उग्यां तें सांजल्यां ॥ हो० ॥ उ० ॥ फेरी शी तस आश के, जे गांगें गव्यां ॥ हो० ॥ जे० ॥ ते जूख्यो ताहरो मित्र, जे तुऊ जंजेरीउं ॥ हो० ॥ जे० ॥ तुं जोलो जे तास, व

चन नवि फेरव्यो ॥ हो० ॥ व० ॥ १६ ॥ मानीश एहवा मित्र, तणी जो शीखडी ॥ हो० ॥ त० ॥ मा गीश सारथवाह, नली तुं जीखडी ॥ हो० ॥ न० ॥ पंचावनमी ढाल, मोहनविजयें कही ॥ हो० ॥ मो० ॥ जे कोइ निपुण शिरोमणि, तेणे तो शर्दही ॥ हो० ॥ ते० ॥ १७ ॥ सर्व गाथा. ॥

॥ दोहा ॥

वणिक रूपें कहे देवता, सांजल्य तुं धनदत्त ॥ पर उपदेशें कुशल तुं, दीसे ठे उन्मत्त ॥ १ ॥ पर्वत पर जलती बहु, नयणे निरखे लोय ॥ पण पयतल बलतां थकां, मूढ न देखे कोय ॥ २ ॥ पर अवगु ण राई सरस, करे सुरशैल समान ॥ निज अव गुण मंदर समा, राई करे अयाण ॥ ३ ॥ एक वा र तुं ताहरी, गति सामुं तो जोय ॥ त्यार पठी पर बूझियें, एम न्हाह्यो शुं होय ॥ ४ ॥ धनदत्त तव नि सुणी करी, कहे तव सुरने एम ॥ शीखामण देतां थकां, रीष चढावो केम ॥ ५ ॥ वचन मांनो जो माहरुं, तो सुखी होउ महाराज ॥ हुं तो हेत माटे कहुं, तव बोल्यो सुरराज ॥ ६ ॥

॥ ढाल उपन्नमी ॥

नटीयाणीना गीतनी अथवा सुरती प्यारी लागे जिनजी ताहरी ॥ए देशी॥ धनदत्तने एम नांखे हो, व्यवहारी रूपें देवता ॥ रे नडक मतिहीन, प्रथ मज तुं नुलवाणो हो, तेह तो तुं नथी शोचतो, कां न संनारे दीन ॥ ध० ॥ १ ॥ हुं तो जोगी व यणे हो, रयण वली आव्यो वाववा ॥ तो तें वास्यो मूऊ ॥ वाडवनी तुं शीखें हो, जे एम वनमां रड वडे, तो कुण वारशे तुऊ ॥ ध० ॥२॥ तुऊने जे को तातें हो, नोलुडा वचन कह्युं हतुं, न कर्युं तें नि र्वाह ॥ वांनणनां वचनथी हो, धूताणो एम नूलो नमे, हजीय नथी लाजतो थाह ॥ ध० ॥ ३ ॥ ते माटें कहुं तुजनें हो,धनदत्तजी तुंरुं म मानशो, कहे वाये ए रूढ ॥ हुं नोलवाणो केहवो हो, नोलवाणो तुं ए विप्रथी, मूढ हुं किंवा तुं मूढ ॥ ध० ॥ ४ ॥ पर उपदेशें ऊाह्यो हो, ते कारण तुने हुं कहुं ॥ जो तुं संनाली पूंठ ॥ जे कांइ तुऊ आगल हो, विण पूछ्ये जे में उपदिश्युं, ए साचूं के ऊूठ ॥ ध० ॥५॥ में तो जोगीवचनें हो, ड्रहमांहि रत्न जे वोसस्यां ॥ पण तुं विचारी जोय ॥ वाडवना कह्याथी हो, तें

हज पुण्य प्रमार्जियुं, वली जन्म्यो दुर्जन होय ॥ध०॥
॥६॥ जो होइये निकलंक हो, तो परनुं कलंक प्रका
शियें ॥ करी जाणो निर्धार, ते कारण तुमे जाउं हो ॥
जूलशो पुरनी वाटडी, खोटा न करो उपचार ॥
ध० ॥ ७ ॥ धनदत्त तिहां मनमांहि हो, आलोचे
उंमी आलोचना, ए केम लहे मुज वात ॥ एणे जे
मूज जाख्युं हो, ते साची सघली वातडी, खोटा
नहिं अवदात ॥ ध० ॥ ८ ॥ वाडवने कह्य लुब्धो
हो, में तातनुं वचन विसारियुं, जलो जूल्यो हुं
जोर ॥ मूरखने वली होवे हो, माथें मोटां शिंगडां,
कहेने कहुं करी शोर ॥ ध० ॥ ए ॥ मानव तो
नवि दीसे हो, दीसे छे ए तो देवता, नहीं तो जाणे
केम ॥ सारथवाहने जांखे हो, धनदत्त बेहु कर
जोडीने, प्रगट प्रकाशी प्रेम ॥ ध० ॥ १० ॥ तमे
कोण छो बुद्धिवंता हो,मुज आगल साचुं जांखजो,
दाखो प्रगट स्वरुप ॥ धनदत्तना कथनथी हो, सा
र्थपनो दंज विसर्जियो, कस्युं सुररूप अनूप ॥ ध० ॥
॥ ११ ॥ निर्मल देही जेही हो, फाटिकनी जाणे म
यूषिका, अंबुज परिमलपूर ॥ जूषणने संजारे हो,
संपूजीत तन सोहामणो, तेजें न जिते सूर ॥

ध० ॥ १२ ॥ धनदत्तने सुर जांखे हो, सांजल्य हुं हुं ताहरो, पूरव जवनो तात ॥ सुरपुरनें सुरलीला हो, जोगवतां अवधि प्रयुंजीयो, दीठा तुज अवदात ॥ ध० ॥ १३ ॥ पूरव जवने नेहें हो, तुऊ प्रति वोधन आवियो, सारथवाहने वेश ॥ ऊहमांहे मणि कपटें हो नाखिने, तुऊ समजावियो अहो, हित शीख विशेष ॥ ध० ॥ १४ ॥ केम करीने चालीजें हो, वालूडा वूऊं पारकी, कीजें मन अनुजाय ॥ घणी घणी शी फेरी हो, जांखीजे तुजने शीखडी, तुजने कहुं हुं न्याय ॥ ध० ॥ १५ ॥ सुरवरने व चनें हो, प्रतिवूज्यो धनदत्त हियडे, दीठो तात सनेह ॥ देवें एक अनिमेषे हो, वनहुंती धनदत्त आणीयो, जीहां पूरव निज गेह ॥ ध० १६ ॥ गृह मांहे मणि माणिक हो, सोनुं ने रूपुं सामटुं, प्रग ट्यो जाकऊमाल ॥ ठपन्नमी रतनाली हो, सुगुणीनें हेतें ए कही, मोहनविजयें ढाल ॥ ध० ॥ १७ ॥ सर्व गाथा ॥

॥ दोहा ॥

ते सुरवर धनदत्तने, सोंपी धण कण धाम ॥
प्रतिवोधी सुरपुर रमा, आजरणीकृत ताम ॥ १ ॥

धनदत्तें सुंदरपरें, मननुं चिंतव्युं कीध ॥ अवसानें सुख अनुभव्यां, सकल मनोरथ सिद्ध ॥ २ ॥ अथ इति पर्यंत ए कह्यो, धनदत्तनो अवदात ॥ नमया कर जोडी कहे, श्रवण अतिथि करो तात ॥ ३ ॥ विना वचन जिनराजनां, जे परबुद्धि राचंत ॥ तेहनी गति धनदत्त जिम, जाणो तात महंत ॥ ४ ॥ ए भणे नमया सुंदरी, तात भणी तिणिवार ॥ आणा द्यो चारित्रतणी, मानीश ए उपकार ॥ ५ ॥ जो पुत्री करी त्रेवडो, तो पूरो मननो कोड ॥ आलंबन द्यो अडवड्यां, विनति करुं कर जोडि ॥ ६ ॥

॥ ढाल सत्तावनमी ॥

यतणीनी देशी ॥ कहे नमयाने जनक ते वारे, अहो चारित्र कां अविचारें, छहु ऋतुमां यति व्रतमें रहेवुं, तुझथी थाशे ए किम सहेवुं ॥ १ ॥ प्रसरे हिम ऋतु चिहुपासे, शालि मंजरी फुलें उल्लासें ॥ माले आरुढा जन सोहे ॥ पशुपंखी पडतां टोहे ॥ ॥ २ ॥ पुरवरसी वन शोभा दीसे, परिजन वन मांहे जगीशें ॥ नट वंश चढीने खेले, दाता पण दान उकेले ॥ ३ ॥ केइ ताजा पोंख आरोगे, म सली कर संपुटने योगें ॥ कहो ए मुनिवेषमें किहां

श्री, निद्रा ग्रहेवी जिहा तिहांथी ॥ ४ ॥ दोहा॥
दीक्षा शालि विकाश तस, मल्यो रूपकसंयोग ॥
परिग्रह योगक पंखीया, वारीश थई अशोक ॥ ५ ॥
हृदयदेश शोजावशुं, कर्म नटावा खेल ॥ जोशुं देशुं
दान पण, मोक्षतणा रस मेल ॥ ६ ॥ पूरवपुण्य सा
क्षातना, कारी निश्चय व्यवहार ॥ एम करी हिम
रुतु निर्गमे,जे सूधा अणगार ॥७॥ पूर्वढाल ॥ रुतु
शिशिर शीतल वा वाशे,विणवसने शी गति थाशे ॥
कृष्णागर केरी अंगीठि, मुनिपासे किहाये दीठी ॥७॥
अति उन्हुं जोजन जमवुं,वली आसव पानें रमवुं॥
घणी दीरघ शिशिरनी रजनी, कहो जाशे केम विण
सजनी ॥ ए ॥ वरतेल तंबोल विलास, अति शोजि
त उचित आवास ॥ मुनिमुद्राए किहांथी ए तु
जने, मुनिमारग पूछे तुं मुजने ॥ १० ॥ दोहा ॥
नमया कहे रुतु शिशिरमें, जे छे विषया शीत ॥
निर्विकार उंढीश वसन, जेहनी सबल प्रतीत ॥११॥
ध्यान तणी अंगीठडी, जोजन तेम संतोष ॥ आस
वसमता पी जतां, करशुं काया पोष ॥ १२ ॥ माया
रजनी अति विपुल, शुरू स्वजावें क्षीण ॥ उदासी
न तेलांग तिम, प्रमा तंबोल प्रवीण ॥ १३ ॥ मंदिर

उच्च विवेकनुं, काया वली उद्योल ॥ एम शिशिर निर्वाहशुं, करशुं रुचि कल्लोल ॥१४॥ पूर्वढाल ॥ वली तेमज वसंतऋतु आवे, तव किसलय तेम तरु जावे ॥ वागे चंग मृदंग सुरागें, वली टोली गावे फागें ॥१५॥ छांटे केसर जरी पीचकारी, तेम लाल गुलाल नरनारी ॥ करे नाटक बत्रीश बद्ध, ते तो मुनिवेषें नवि कीध ॥१६॥दोहा॥ तप नवकिसलय तरु थयो,आवश्यक वाजीत्र ॥ अध्ययनादिक फागगति, केसर क्रिया विचित्र ॥ १७ ॥ मार्दव लाल गुलाल बहु, परिसह नाटक कीध ॥ ऋतुवसंतमांहे अहो, मुनिने ए अनिषिद्ध ॥ १८ ॥ पूर्व ढाल ॥ ऋतु ग्रीष्म तपन तपे जोर, तेम लूक वहे चिहुं ओर ॥ रस करीये घोली रसीलो, सुणीये कंइ पिकवचन रसाल ॥ १९ ॥ तेम करे विलेपन चंदननां, ते शीतल पवन विंजनना ॥ साकर जल भेली पीजे, एम ग्रीष्मनो लाहो लीजें॥ ॥ २० ॥ दोहा ॥ क्रोधातप कृश खंतिथी, लूक लोभनी जेह ॥ आदरशुं निःस्पृहता, वसशुं संयमगेह॥ ॥ २१ ॥ अनुभवरस सहकार रस, कोकिल जिनवर वाणी ॥ चंदन सत्य विलेपनां, उपशम व्यंजन जाणी ॥ २२ ॥ गुरुआणा साकर विनय, नीरतणुं नित्य

पान ॥ एम करी ग्रीष्म ऋतु जाणी, निर्वहिशुं धरि
मान ॥ २३ ॥ पूर्व ढाल ॥ ऋतु वर्षाघन ऊड मंडे,
धारा अनिमेष न खंडे ॥ शिखी दादुर चातक बोले,
कामी काम पण खोले ॥ २४ ॥ गुणिजन आलापे
मल्हार, वली सुंदर नेम आहार ॥ वहे सरिता ह
रिता तेम धरणी, केम निर्वहशो चरण आचरणी॥
॥ २५ ॥ दोहा ॥ मोहमहाघननी ठटा, धरशुं खूप
संवेग ॥ श्रद्धाविहग उद्घोषणा, खोली मने धरि
नेग ॥ २६ ॥ राग मल्हार सझाय छे, निःशंकी
आहार ॥ सत्य नदी मुनिगुण हरित, ए पावस
प्रतिचार ॥ २७ ॥ पूर्वढाल ॥ ऋतु शरदें कमल शशी
ऊगे, वधे तेज नयन कर पूगे ॥ ऊरे पीयूष शुक्ति
समाय, तस बिंदुनां मौक्तिक थाय ॥२८॥ योगीश्वर
ग्रह नवरात्रि, करे याग यगन संयात्री ॥ मली कन्या
गरबो गाइ, करी मंगल दीपक जाइ ॥२९॥ अति म
होत्सव आणा प्रयाणां, संयमिने क्यांथी सयाणां ॥
वसती बाहिर एकाकी,न फरे पुनि जेम ए रांकी ॥३०॥
दोहा॥समकित शशी अजुवालडो,तास तत्व ज्ञानांश॥
ज्ञान नियम निर्मल थशे, लोकालोक प्रकाश ॥ ३१ ॥
दयाशुक्तिमांहि अचल, मौक्तिक धर्म सद्गुरू ॥

नवयोगी नव वाडि ते, नव रात्रि प्रति बुद्ध ॥ ३२ ॥
भोली कन्या भावना, जिन गुण गरवा केली ॥ मं
गल दीपक परम पद, कर्म नटाव अहेलि ॥ ३३ ॥
वियावच्च आणुं भलुं, थविर तथा मुनिनाह ॥
शिशिर रुतुयें मुनिवर करे, एम महोटा उ
त्साह ॥३४॥ पूर्व ढाल॥ कह्यो षटे रुतुनो एह वि
वाद, नवि पामी नमया विषवाद ॥ नमया चारि
त्रनी अरथी, रागी पूरण मुनिवरथी ॥ ३५ ॥ ध
न्य धन्य ते भव भय छंडे, मुनि वेशें आदर मंडे
॥ कही सत्तावनमी ढाल, एह मोहनविजयें रसा
साल ॥ ३६ ॥ सर्व गाथा ॥

॥ दोहा ॥

तातें घणुंये प्रीछवी, पण नवि माने तेह ॥ तातें
अनुमति दीधली, नमयाने धरी नेह ॥ १ नमया
अति रंजी हिये, तनू हुवो रोमंच ॥ उमाही दी
क्षा भणी, करे नहीं खल खंच ॥ २ ॥ तातें पुर श
णगारियुं, तिहां हय गय रह जोडि ॥ अति उत्स
व अष्टाहिका, मांके होडा होड ॥ ३ ॥ दया पटह
पुर फेरव्यो, दीधां अर्थीदान ॥ सयण सयल भेलां
हुवां, दीधां तिहां बहु मान ॥ ४ ॥ बेठी नमया

सुंदरी, शिविकाए सोत्साह ॥ तूरि तणा निर्घोष व
हु, गय गयणांगण तांह ॥ ५ ॥ पुरजन कौतुक पे
खवा, मलियां थोका थोक ॥ आव्यां इम गुरु संन्नि
धि, जोडीने कर कोक ॥ ६ ॥

॥ ढाल अठावनमी ॥

ते तरीया नाइ ते तरीया ए देशी ॥ आर्य सु
हस्ती सूरीश्वर चरणे, प्रणमी नमया विनवेरे ॥
आपो मुजने चारित्र खजानो, अवसर आव्ये एह
वे रे ॥१॥ जयवंता विचरो जगमांहें ॥ ए आंकणी ॥
जे अनुसरे मुनि मुद्रारे, तास चरणरज तिलक
करीजे, सेवियें थइ अक्षुद्रा रे ॥ ज० ॥२॥ गुरु स
हदेवतणी ग्रहे आणा, सघलें अनुमति दीधी रे॥
अहो जावुके अहो नमयासुंदरी, प्रीति संयमथी
कीधी रे ज० ॥ ३ ॥ मन थिर छे किंवा नथी ता
हरुं, संयम छे अति दोहिलुं रे ॥ सायर जल तरवुं
छे भुजाथी, निःस्पृहने छे सोहिलुं रे ॥ ज० ॥ ४ ॥
सिंह थइने ल्यो छो संयम, सिंह थइने निर्वहेजो
रे, जो न पाली शको प्रव्रज्या, तो गृहवासे रहेजो
रे ॥ ज० ॥ ५ ॥ नमयासुंदरी विनवे गुरुने,
स्वामी कांहे विहाडो रे ॥ साहसुं वल वंधावी मु

ऊने, निद्रालुने जगाडो रे ॥ ज० ॥ ६ ॥ माहरुं मन छे दृढ संयमथी, हुं आवी तुम चरणे रे ॥ चारित्रथी केम होइश चंचल, उलखो एहवे आ चरणें रे ॥ ज० ॥ ७ ॥ नमयायें भूषण सयल उतार्यां, परिहरी लोभ अशुभो रे ॥ वासदेपथी थाल भरीने, तात समीपें ऊभो रे ॥ ज० ॥ ८ ॥ केशजाल मस्तकथी लुंच्या, जाल महामोह दावे रे॥ आचारय करवा संग्रहीने, नर्मदा मस्तक नावे रे॥ ज० ॥ ए ॥ धर्म सिंधुर कुंभस्थल बेठा, गुरु एम देशना भांखे रे, पंचशालि कण जेम महाव्रत, जे ग्रहे ते सुख चाखे रे ॥ ज० ॥ १० ॥ एह संसार असार विचारी, पालजो सूधी दीक्षा रे ॥ पंच महाव्रत भार निर्वहेजो, ए सद्गुरुनी शिक्षा रे ॥ज० ॥ ११ ॥ प्रणम्या पुरजन नमयाने चरणे, आंसुभरं ते नयणे रे ॥ अहो नमया धन्य धन्य तुम जीवित, एम उच्चापे वयणें रे ॥१२॥ राखजो धर्म सनेह अम उपर, वंदावजो वली अमने रे ॥ तुम गुण मीठा केम विसरशे, घणुं विनवीयें छुं तमने रे ॥ ज० ॥ ॥ १३ ॥ सहदेवादिक नयणथी वरसे, आंसूमिषें जलधारा रे ॥ भांखे नमया साधवी तेहने, मीठां

वचन उदारा रे ॥ ज० ॥ १४ ॥ धर्मोद्यम करजो सहु प्राणी, एम कही दीधी शीखो रे ॥ नमयाने आशीष कहे एम, जीवजो कोडी वरीसो रे ॥ ज० ॥ १५ ॥ जनकादिक सहु मंदिर आव्या, हवे सहु गुरुउल्लासें रे, नमया साध्वीने हित आणी, सोंपी साधवी पासे रे ॥ ज० ॥ १६ ॥ साधु मारग शीखाव्यो वारु, करे जिन आगल साखी रे ॥ अष्टावनमी ढाल सलूणी, मोहनविजयें नांखीरे ॥ ज० ॥ ॥ १७ ॥ सर्व गाथा ॥

॥ दोहा ॥

अहनिश साध्वी नर्मदा, करे ज्ञान अभ्यास॥चारित्र चंद्र प्रद्योतथी, करे मन कुमुद विकास ॥ १ ॥
जयणा गंगा सुरसरी, जिहां हित प्रगटतरंग ॥
तीहां झीले थइ हंसली, करे पवित्र निज अंग ॥२॥
अंबर सुनि आचारनां, भक्ति तणो सुख कोश॥
संवर केसर घोले बहु, विनय पखाले अदोष ॥३॥
स्तवना कुसुम मनोहरु, समकित दीप ज्योत ॥
अक्षत अनुभव रूपना, ध्यान धूप सिद्धोत ॥ ४ ॥
एम पूजा जिनराजनी, साहसथी नितमेव ॥ रचे कर्म चकचूरवा, सा साध्वी नितमेव ॥ ५ ॥

॥ ढाल उगणसाठमी ॥

आइ आइ हो ढोला आइ हो श्रावण त्रीज, माहरी प्रोले पडहा वाजीया होराज ॥ वारी जाउं राज, जीवनप्यारा राज ॥ लाडीरा लाडा राज ॥ राज मृगानयणीथी मांकयुं रूसणुंजी ॥ वा० ॥ जीव न० ॥ लाडी० ॥रा०॥ ए देशी ॥ मांकयो मांकयो हो तेणे नमयाए पूरण प्रेम, रतनाली सुमति गुप्ति सा हेलीशुंजी ॥ ठंड्यो ठंड्यो हो तेणें कुमति सा हेली संग, लय लागी ते अलबेलीशुंजी ॥ १ ॥ कयुं मनभावें, नमयाए कुमतिथी रूसणुं जी ॥ ए आंकणी, तास मंदिर हो नहीं सुंदर नामें आरंभ, तेहनी तो ठेडी शेरडी जी ॥ आवी बेठी हो तव उपशम गेह, जस संयमशेरी न वेरडी जी ॥ क० ॥ ॥ २ ॥ तव जयणाने हो कयुं नमयायें बेनडी मूफ, इहां कुमतिने हो मत देजो पेसवा जी ॥ मुफ जो लावी हो एणें एता दीह, अनंत स्थिरताए न दीधी बेसवा जी ॥ क० ॥३॥ एहवे कुमतिए हो मेली हिं सा दासी कुरूप, नमयाने घणुं विप्रतारवा जी ॥ कांइ जोली हो ठंडे बालपणानो नेह, ससनेही केम केम वीसारवां जी ॥ क० ॥ ४ ॥ तेहने अहिंसायें हो

कही कडुवा कडुवा बोल, घर बाहेर काढी गल हच्छ देश्ने जी ॥ कहे कुमतिने हो तेह, दासी अहिं साए मुऊ, कहे नांडी आवडे आवडे जी ॥क०॥५॥ थइ फांखी हो कटुकवचनें कुमति तेवार, नमयाने मूकी संजारवा जी ॥ करे सुमतिथी हो नित रंग कल्लोल, श्रुतज्ञाननी गोष्टि विचारवा जी ॥क०॥६॥ मति ज्ञानने हो तिहां वेंच्यां फोफल पान, वहु हूवां रंग वधामणां जी ॥ तव उपन्युं हो नमयाने अवधिज्ञान, मोहादिक हुवां दयामणां जी ॥ क० ॥ ॥ ७ ॥ हवे अनुक्रमें हो, करे जूतल तेह विहार, हूइ महासती ताम पवत्तणी जी ॥ पडीबोहें हो, नवि चातुर नवियण वृंद, देवे देशना अतिही सोहामणी जी ॥ क० ॥ ८ ॥ जेणे सांनली हो तस देशना श्रवणे नव्य, तेणें जाणुं पीयुष पीधलुंजी॥ जस दीधी हो मुख धर्माशीष मनोज्ञ, ते तो अ व्यय जीवित दीधलुंजी ॥ क० ॥ ए ॥ वहु साहू णीहो, मली महासतीने परिवार, एक एकथी अधिक गुणें करीजी ॥ तपें कीधो हो जेणें पावन आपण देह, उपदेश महारयणे नरी जी ॥ क० ॥ ॥ १० ॥ नमया महासती हो, पामी सद्गुरुनो आ

देश, रूपचंद्र नयर शोन्नावियुं जी ॥ वसती या चीने हो निज नाह पिताने समीप, पवत्तणीए नाम न जणावियुं जी ॥ क० ॥११॥ दीधी वसति हो तेणे पवत्तणी अवधार, तिहां निवसी नमया सती जी ॥ पय वंदण हो आवे नयरना लोक, नवी उलखी केणे एक रती जी ॥ क० ॥ १२ ॥ पुरमांहे हो न्नली पसरी एहवी वात, साहुणीनो संघाडो आवियो जी ॥ अतिज्ञाता हो तप संजम शुद्ध विवेक, उप शमथी आतम न्नावियो जी ॥ क० ॥ १३ ॥ देखी दर्शन हो कीजें आपणां नेत्र पवित्र, एम न्नविजन लोक वातो करे जी ॥ आवी पर्षदा हो तिहां दे शना सुणवा काज, कथा उपदेशे नमया तदा जी॥ क० ॥ १४ ॥ एक रंगें हो सहु सांन्नलो बाल गोपाल, थइ रसिया हियडे गहगही जी ॥ कहे मोहन हो उगणसाठमी ढाल, श्रोता रे सुपरें सद्दहीजी॥क०॥१५

॥ दोहा ॥

धर्मोद्यम कीजे न्नविक, धर्म प्रथा प्रसिद्ध ॥ जिनवर धर्म थकी लहे, ऋद्धि वृद्धि नव निद्ध ॥१॥ कर्म जाल बंधे मुधा, जीव थई अज्ञान ॥ पण मूंझाइ रहे तेहमां, इंद्र जाल समान ॥२॥ धर्म तणी न्नांते करी,

धरे अधर्मने जीव ॥ काच कामली रोगें ग्रहे, शंख विचित्र तदीव ॥ ३ ॥ हसतां अथवा क्रोधथी, बंध निकाचित कर्म ॥ केम त्रूटे विण जोगव्यां, साख भरे जिनधर्म ॥ ४ ॥ पामे पूरवकर्मथी, सतीउं पण अपवाद ॥ कर्म विपाक ग्रही जतां, केम करियें विपवाद ॥५॥ अछतां पण सतीउं भणी, चोहटे जेह कलंक॥ ते नर विलसे बापडा, जववारिधि निःशंक ॥ ६ ॥

॥ ढाल सातमी ॥

कर्म परीक्षा कारण कुमर चल्योजी ॥ ए देशी ॥ कहे दृष्टांत तिहां धनवती तणो, पति प्रतिबोधवा काज ॥ पोष्यो अद्भुत रस देशना विपेजी, निसुणी नर नरराय ॥ १ ॥ कर्म कुटिलथी बल नहीं कोइलुं जी, शिवपुर पंथ विशाल ॥ आठ लूटांक ते हेरे हेरणांजी, करी परिकर जंघाल ॥ कं० ॥ २ ॥ शावस्ती नगरीयें वसतो हुतोरें, व्यवहारी पुण्यपाल ॥ धनवती तेहनी अनोपम अंगना जी, मुख्य सती सुविशाल ॥ क० ॥ ३ ॥ अनुक्रमें कंथविदेशे चालतां रे, धनवतीनी तेणीवार ॥ दीधी भलामण आपणा मित्रनेरे, उपस्थित करण रोजगार ॥ क० ॥ ४ ॥ केता दिवस पछी धनवती भणी जी, प्रार्थे कंथनो मित्र ॥

सुख जोगव्य तुं मुजथी सुंदरी रे, यौवन कय्य तुं पवित्र ॥ क० ॥ ५ ॥ निर्ब्रंछ्यो धनवतीए तेहने जी, ते पण पाम्यो रोष ॥ तेणे पुरमे कही कही शाकिनी जी, दीधो सतीने दोष ॥ क० ॥ ६ ॥ न शके नयरी मांहे फरी सतीजी, तिहां पण पीहर गइ परगाम ॥ ते धनवती निजबंधू घरे वसे जी, जो जो कर्मनां काम ॥ क० ॥ ७ ॥ धनवती बंधू सुतने हुलरावती जी, ना खती निःश्वास ॥ तिहां पण प्रार्थे विषय सुख कार णे जी, निज सहोदरनो दास ॥ क० ॥ ८ ॥ तेहने पण सतीये निर्ब्रंछियो जी, दास थयो विणप्रेम ॥ दासे बाल विणाश्यो क्रोधथी जी, सा हुलरावती जे म ॥ क० ॥ ए ॥ प्रात थयो धनवतीये बालने जी, दीठो विनाश्यो जाम ॥ करी आक्रंद कुटुंब सवि मेलव्युं जी, आव्यो दास पण ताम ॥ क० ॥ १० ॥ दास कहे सहू लोको सांजलो जी, ए सतीनुं विरु रू ॥ कहो कूण सोंपे सुत शाकिनी कन्हे जी, जेम मांजारने दूध ॥ क० ॥ ११ ॥ शावस्ती लोकें मली एहने जी, काढी वनह मजार ॥ कीहांथी आवी रंमा शाकिणी जी, बांधवने आगार ॥ क० ॥ १२ ॥ अति शरमाणी ते धनवती सती जी, परिहरी पी

हर ताम ॥ आवी एकांते गहनवनांतरें जी, वडतले ग्रह्यो विश्राम ॥ क० ॥ १३ ॥ गुहड विहंग रयणी ज्ञर तरुशिरें जी, सहित वालक परिवार ॥ वीट नि चय देखीने वाचडां जी, गुण पूछे तेणीवार ॥ क० ॥ ॥१४॥ कुष्ट शमे ते विट प्रज्ञावथी जी, पंखीपति कहे एम ॥ धनवतीये गुण जाणी संग्रही जी, विट ज्ञणी धरी प्रेम ॥क०॥१५॥ तिहांथी आवी कोइ पुरवरे जी, कीधो पुरुषनो वेश ॥ टाले कुष्ट ते वीट प्रयोगथी जी, यश थयो देश विदेश ॥ क०॥ १६ ॥ मोटा म होल वनाव्या मोजमां जी, चाहे वाल गोपाल ॥ मोहनविजयें ए ज्ञणी साठमी जी, श्रोता सांज्ञलो थइ उजमाल ॥ क० ॥ १७ ॥ सर्व गाथा.

॥ दोहा ॥

एहवे धनवती वल्लहो, आव्यो निजपुर जाम ॥ पण मंदिरमां अंगना, तेणे नवि नीरखी ठाम ॥ १ ॥ प्रीछ्यो मानव मूखथकी, दयितानो अधिकार ॥ अ ति जांखो हूउ थको, पहोतो मित्र द्वार ॥ २ ॥ दी ठो कुष्टी मित्रने, सती कलंक प्रज्ञाव ॥ पुण्यपाल समज्यो हिये, कुटिल सुहृदनो दाव ॥ ३ ॥ एहवे पुरमांहे कह्युं, वैद्य विदेशो एक ॥ टाले कुष्ट उपाय

थी, जन्मांतरिय विवेक ॥४॥ पुण्यपाल निज मित्रने, तेडी चाले जाम ॥ सती बंधुनो दास पण, कुष्टी आव्यो ताम ॥ ५ ॥ बिहुने तेडी अनुक्रमें, आव्या ते परदेश ॥ जेणे पुर धनवती रहे, रचि पुरुषनो वेश ॥ ६ ॥ वालम दीठो आवतो, पामी परमानंद ॥ पण पियुने समजाववा, रचशे रामा फंद ॥ ६ ॥

॥ ढाल एकसठमी ॥

अणसणरा हो योगी ॥ ए देशी ॥ कहे पुण्यपाल तदा कर जोडी, तुज कीरतें आव्यो हुं दोडी रे ॥ वैद्य जी करो करुणा ॥ ए आंकणी ॥ ए बेहु कुष्टीने साजा कीजें, वली मूख मागो ते दीजें रे ॥वै०॥१॥ सा कहे वैद्यरूप ते नेही, करुं औषधी पण निःस्पृही रे ॥ वै० ॥ पण ए रोगी साचुं कहेशे, तो एहने औषध गुण देशे रे ॥ वै० ॥ २ ॥ सहु सांभलतां कहेतां जो लाजे, तो बेसो एण बाजे रे ॥ वै० ॥ पडदो रहे जेणे वाते करीयें, नवि दंभ कोइ अनुसरियेंरे ॥ वै० ॥ ३ ॥ कोइ धनवतीनो भेद न जाणे॥ सवि सत्य करी प्रमाणे रे ॥ वै० ॥ ठगी पुण्यपाल ते अलगो बेठो, तेह चिकित्सक पडदे बेठो रे ॥ वै० ॥ ४ ॥ कहे पुण्यपालनें हलूइ विख्यातो, तुं सु

एजे कुटिलनी वातो रे ॥ वै० ॥ एम कही आवे वैद्य फरीने, वर औषध फांट जरीने रे ॥ वै० ॥ ५ ॥ रे रोगीयो नहि जूठे राचूं, केम रोग थयो कहो साचुं रे ॥ वै० ॥ बोल्यो प्रथम पीयुमित्र कुसंगी, कहुं प्रगट सुणो एक रंगे रे ॥ वै० ॥ ६ ॥ ए पुण्य पालतणी हुंती नारी, नामे धनवती मनोहारी रे ॥ वै० ॥ कामवशे में प्रार्थी तेहने, करी वेहेन गणी हुंती जेहने रे ॥ वै० ॥ ७ ॥ माहरुं वचन नहि मान्युं तेणे, में आण्यो रोष हियडेरे ॥ वै० ॥ कही कही शाकिनी घणुं अवहेली, एतो लाजी गइ पुर महेली रे ॥ वै० ॥ ८ ॥ जूठ कलंक चढाव्युं माटे, कुष्ट रोग शरीरें उच्चाटे रे ॥ वै० ॥ एम तेहने तव अणबोल्यो राख्यो ॥ तेह दास जणी संजाख्यो रे ॥ वै० ॥ ए ॥ में पण याची तेहज नारी, तेणे निर्भ्रंछ्यो मुजने जारी रे ॥ वै० ॥ में तव शेठनो तनुज विणाश्यो, वली शाकिनी दोष प्रकाश्यो रे ॥ वै० ॥ १० ॥ निकली तिहांथी अतिहीं लजाती, तेनी खबर किसी न जणाती रे ॥ वै० ॥ कर्म कहाणीए केहने कहीयें, हवे तुमे कहो ते वहीये रे ॥ वै० ॥ ॥ ११ ॥ पडदांतरे ते वातो जाणी, पुण्यपालें कंधरा धूणी रे ॥ वै० ॥ मुज कामिनीने कलंक दीधुं,

थइ मित्र ए शुं काम कीधुं रे ॥ वैं० ॥ १२ ॥ एहवे धनवती पडदे आवी, ते बेहुनी वातो जणावी रे ॥ वैं० ॥ पेटी घरमां वेश उतार्‍यो, स्त्रीवेषें वपु शण गार्‍यो रे ॥ वैं० ॥ १३ ॥ रम ऊम करती पियुने चर रणे,सा प्रणमें जरी आजरणें रे ॥वैं०॥ उलखी प्रमदा पोता केरी, वधी प्रीति लता अधिकेरी रे ॥वैं०॥१४॥ औषधें बेहुनो रोग गमाड्यो, एम गुणसज्जननो गणाव्यो रे ॥ पुण्यपाल निज धनवती संगें, आव्यो शावस्ती मन रंगें रे ॥ साची सती करी पुरमें जाणी, जेणे विसारी अपवाणी रे ॥ वैं० ॥ अनुक्रमें धन वती शिवसुख पामी,एम नमया कहे गुणधामी रे ॥ वैं० ॥ १५ ॥ कहे महेश्वरदत्तनी आगे, सतीने पण लंछन लागे रे वैं० ॥ ए एकसठमी ढाल सुरंगी, कहे मोहन सुगुण प्रसंगी रे ॥ १६ ॥ सर्व गाथा ॥

॥ दोहा ॥

कहे नमया पवत्तणी, कर्म तणी गति एम ॥ जेणे धर्म न अज्यस्यो, ते गति लेहशे केम ॥१॥ ते श्री जिनवर धर्मना, शास्त्रमांहे अधिकार ॥ चौदरा ज्य ए शास्त्रथी, प्रगट लहीजें सार ॥ २ ॥ नरय मणुअ तिरिय देव गइ, इसीद्धारा पर्यंत ॥ नाण हुवे

ए शास्त्रथी, गीतार्थ होय गर्जंत ॥ ३ ॥ कोइक एहवां शास्त्रछे, जेह जणे अयाप ॥ स्वरथी लक्षण जाणियें, रूप रंग गुण व्याप ॥ ४ ॥ पण स्वरलक्षण वातडी, मूरखने न कहाय ॥ साहामो गुण अवगुण करे, अहिपय पाननो न्याय ॥ ५ ॥ तेह कारण श्रुति शास्त्रनो, करजो खप सहु लोय ॥ जेहथी उत्तम संपदा, एह कथाथी होय ॥ ६ ॥

॥ ढाल वासठमी ॥

कपुर होय अति ऊजलो रे ॥ ए देशी ॥ महेश्वरदत्त चित्त चमकीयो रे, निसुणी कथा कल्लोल ॥ धन्यधन्य एम पवत्तणी रे, धर्मथी रंग छे चोल रे ॥१॥ चेतन चेते नहीं कां मूढ, लही उपशम अगूढ रे ॥चे०॥ पण एणें स्वरलक्षण लह्युं रे, ते साचो उल्लास ॥ महेश्वरदत्तें मांकियो रे, नमयानो पश्चात्ताप रे ॥ चे० ॥ २ ॥ सही मुज नमया अंगना रे, जणी हशे लक्षण शास्त्र ॥ गायन लक्षण कह्युं हतुं रे, वेंछे ठते यानपात्र ॥ चे० ॥ ३ ॥ पण में मूढ अजाणते रे, कीधूं अधमनुं काम ॥ वनमां सतीने परहरी रे, अइ निष्कुप अभिराम रे ॥ चे०॥ ४ ॥ मुझ वनिता हती महासती रे, पण हुं थयो अज्ञान ॥ मुझ सरीखो

संसारमें रे, निर्घृण नहि को निदान रे ॥ चे० ॥५॥
शी गति थइ हशे तेहनी रे, रजनीचरने द्वीप ॥
अहो अहो हुं महापातकी रे, तुब मति उद्दीप रे ॥
चे० ॥ ६ ॥ अति चिंतातुर कंथने रे, देखी पवत्तणी
ताम ॥ कहो तुमें चिंतातुरा रे, अहो महानुभाव
आम रे ॥ चे० ॥ ७ ॥ कहे महेश्वर कर जोडीने रे,
पूरवलो उदंत, आंसु झरंते लोयणें रे, नारी गुण
विलपंत रे ॥ चे० ॥ ८ ॥ बोली ताम पवत्तणी रे, तेह
हुं अवर न कोय ॥ जे तमे विसर्जी वनमां रे, नयण
उघाडी जोय रे ॥ चे० ॥ ९ ॥ ताहरो दोष नहीं कि
शो रे, ए मुझ कर्मनो दोष ॥ शुं झुरेछे बापडा रे,
हुं नथी धरती रोष रे ॥ चे०॥ १० ॥ आपवीती वातो
कही रे, महेश्वरदत्त ते सर्व, आदखुं में साहुणी पणुं
रे, छांडी क्रोध ने गर्व रे ॥ चे० ॥ ११ ॥ आवी हुं इहां
तुझने रे, प्रतिबोधनने काज ॥ समज तुं गति संसार
नीरे, ओलख तुं जिनराज रे ॥चे०॥ १२ ॥ नर्मदासुंदरी
ओलखी रे, लाज्यो महेश्वरदत्त ॥ निज अपराध खमा
वियो रे, लह्यो वैराग्य उन्मत्त रे ॥ चे० ॥ १३ ॥ कहे
महेश्वर मुझ कीजीए रे, ज्ञान दर्शन चारित्र ॥ नम
या कहे सूरि अछे रे, आर्यसुहस्ती पवित्र रे ॥ चे०॥

॥ १४ ॥ रुषिदत्ता पण शुन्न परें रे, अति पामी प्रति वोध ॥ चारित्र लेवा सूंडियां रे, टालि सयल विरोध रे ॥ चे० ॥ १५ ॥ अनुक्रमे विचरंता आविया रे, आर्यसुहस्ती गुरुराय ॥ महेश्वरदत्त हरख्यो हिये रे, रुषिदत्ता हित लाय रे ॥ चे० ॥ १६ ॥ दीक्षा वेहु ए आदरी रे, छोडी सयल जंजाल ॥ मोहनविजयें नली कही रे, ए वासठमी ढाल रे ॥ चे० ॥ १७॥

॥ दोहा ॥

रुषिदत्ता दीक्षा ग्रही, पाले निरतीचार ॥ आयु वशें जइ उपनी, निर्जरने आगार ॥ १ ॥ मुनि महेश्वरदत्त पण, दिक्षातणे प्रनाव ॥ नवसायर हेलांतरे, वेसी धर्मने नाव ॥ २ ॥ अनुक्रमें पाम्या पुण्यथी, सुरपर्यंत संयोग ॥ विलसे निजदेवी थकी, विषयादिकनो नोग ॥ ३ ॥ जो जो नमया महासती, करियो ए उपकार॥ महापतित पतिने कियो, महोटो सुर शिरदार ॥ ४ ॥ सुंदर नमया महासती, वसुधा करे विहार ॥ करे मार्त्तंड प्रनापरें, नवि कैरव विस्तार ॥५॥ कहेणी रहेणी विहु सरिस, तेहवो नाण प्रकाश ॥ कर्मतणी करे निर्जरा, उपशमने आवास ॥ ६ ॥

॥ ढाल त्रेसठमी ॥

॥ राग धन्याश्री ॥ नमया सुंदरी महासती, सूधो संयम पाले जी ॥ ध्यानानल संयोगें सुपरें, कर्म समिध प्रजाले जी ॥ न०॥१॥ अवधि ज्ञान तणे अनुसारें, आयुष कर्म विचारी जी ॥ मास तणी हित आणी दाखे, संलेषणा सुखकारी जी ॥ न० ॥ २ ॥ लाख चोराशी जीव खमावी, सम नावें मन आणी जी ॥ शुद्ध देव गुरु धर्म त्रि करणें, निश्चल चित्तें ध्याइ जी ॥ तृप्ति नाव नाव्यो मन शुद्धें, परम महोदय पाइ जी ॥ ३ ॥ नमया सुंदरी ताम वियजो, पोहती निकट सुर लोक जी ॥ देवपणे सुर सुख लीलायें, नोगवे अतिहें अशोक जी ॥ न० ॥ ४ ॥ पंक्ति तांडव नित्य अखंकित, देव पडह पट वाजे जी ॥ विविध तूरिनिर्घोष प्रसारें, विबुध गृहांगण गाजे जी ॥ न० ॥ ५ ॥ एम सुपर्व तणी प्रनुताइ, नोगवे महासती जीव जी ॥ पुनरपि मानव नव पडिवजशे, महा विदेहे तदीव जी ॥ न० ॥ ६ ॥ लहेशे नृप पदवी ससलूणी, जीतशे अरियण वृंद जी ॥ विषय तणां सुख निज वनिताश्री, अनुनवशे एह अमंद जी ॥ न० ॥ ७ ॥ सह गुरु वाणी श्रवणे सु

णशे, जाणशे अथिर संसार जी ॥ परहरी राज्य रा
मा तेम प्रमदा, थाशे शुचि अणगार जी ॥ न०
॥ ८ ॥ पालशे निरतिचारे संयम, अष्ट कर्म क्रश
करशे जी ॥ केवल ज्ञान महासुख दाता, तेह ति
हां अनुसरशे जी ॥ न० ॥ ९ ॥ करशे सुरवर क
मलनी रचना, देशना मधुरी देशे जी ॥ अक्षय प
दवी अक्षय लीला, परमोदयथी लहेशे जी ॥ न०
॥ १० ॥ एह चरित्र नमया सतीनुं, शील संबंधे गा
युं जी ॥ जाणी गेहली नमया थइने, राख्युं शील
सवायुं जी ॥ न० ॥ ११ ॥ एह संबंध छे शील कुला
में, जो जो सुगुण जगीसें जी ॥ जरहेसर वाहुब
लि वृत्ति, प्रगट संबंध ए दीसे जी ॥ न० ॥ १२ ॥ ए
संबंध छे साचो पण कोई, कल्पित करी मत जाणो
जी ॥ आविर्भूत संबंध अपर जे, कवि रचना ते प्र
माणो जी ॥ न० ॥ १३ ॥ धन्य धन्य नमया महा
सती केरी, सरस कथा में गाइ जी ॥ कीधी पावन
सुंदर रसना, सरस सुखद उपाइ जी ॥ न० ॥ १४ ॥
एह महासतीनी परें कोइ, पालशे शील अजंग
जी ॥ ते पण वांछित सुख अनुजवशे, लेहशे ज्ञान
तरंग जी ॥ न० ॥ १५ ॥ चोथुं व्रत निवृत्तिनुं कार

ए, तेम सौभाग्य प्रदाता जी ॥ यति उपदेशें एम सुखहुंती, शील महोदय शाता जी० ॥ न० ॥ १६ ॥ नमयासुंदरी केरुं रच्युं वे, चरित्र अनोपम एह जी ॥ कवि कुल कोइ हांसी न करजो, करजो शुचि ससनेह जी ॥ न० ॥ १७॥ मेंतो सुकवि जरुंसो आ णी, रास रच्यो वे साचें जी ॥ नहीं तो शी मति मा हरी जे हुं, होड्य करुं करी वांचे जी ॥ न०॥ १७ ॥ तेह कारण ए रास रसीलो, नमया सुंदरीकेरो जी ॥ कंठाजरण पणे सहु करजों, पण दूषण मत हेरो जी ॥ न० ॥ १ए ॥ विधिमुख शिवमुख ऋषि इंडु (१७५४) संवत संज्ञा एहजी ॥ मास पोष वदी तेरश दिवसें, उशना वार गुण गेह जी ॥ न० ॥ २० ॥ तुंगया नगरी उपमा पामे, सम्मी नयरी सु विशेषे जी ॥ चतुरपणें चोमासुं कीधुं, सद्गुरुने आदेशें जी ॥ न० ॥ २१ ॥ तप गठ गगन विकाशन दिनमणी, विजयरत्नसूरि राजें जी ॥ रचना रास तणी ए कीधी, आग्रह संघने काजें जी ॥ न० ॥२२॥ श्री विजयसेन सूरीश्वर सेवक, कीर्तिविजय उव ज्झाया जी ॥ तस पद पंकज षट्पद उपमा, मान वि जय कविराया जी ॥ न० ॥ २३ ॥ जास शिष्य क

वि कुल वक्षःस्थल, मंडन नूषण दिव्य जी ॥ रूपवि
जय पंडित सुपसायें, कीर्ति सुधा सम सेव्य जी ॥
न० ॥ ९४ ॥ कृपा प्रसाद लहीने तेहनो, मोहनवि
जयें उल्लास जी ॥ त्रेसठमी ढाले करी गायो, नर्मदा
केरो रास जी ॥ न० ॥ ९५ ॥ जे कोइ नणशे गणशे
सुणशे, ते लहेशे परमानंद जी ॥ मंगल प्राप्ति सदा
घर अंगण, शोनशे शोन्ना वृंद जी ॥ न० ॥ ९६ ॥
घर घर लीला मंगल लछी, प्रगटे पुण्य प्रकाश जी
॥ श्रोता जन श्रुति धरजो सहु को, मोहन वचन वि
लास जी ॥ न० ॥ ९७ ॥ इति श्री पंडित श्री मोहन
विजय विरचित्त नर्मदा सुंदरीरास शीलविषये
संपूर्णः ॥ शुनं नवतु ॥
